आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अगस्त 2022
डाक प्रेषण तिथि : 29 अगस्त-01 सितम्बर 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 10
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब तक घट में प्राण।।

।। क्षमा वीरस्य भूषणम् ।।

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु

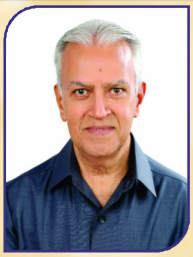
श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर

समता मनीषी
श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

क्षमायाचना **खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।**

रत्नत्रय के महान् आराधक **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य **उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.** के चरणों में वन्दना। महान् पुण्यवानी के उदय और आचार्य भगवन् की महत्ती कृपा से संघ सेवा का अनुपम अवसर मिला है। विगत वर्ष में हमारे द्वारा संघ का कार्य करते हुए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जाने-अनजाने में किसी कार्यप्रणाली, शब्द या व्यवहार से किसी भी सदस्य के निर्मल मन को ठेस पहुँची हो, आहत हुआ हो तो हम मन, वचन, काया से आप सभी से क्षमाप्रार्थी के भावों के साथ निवेदन करते हैं कि आप सरल हृदय एवं उदार मन से क्षमा प्रदान करने का कष्ट करें। मिच्छामि दुक्कडं।

क्षमा करना और क्षमा मांगना, सरल हृदय के भाव हैं, अपना-पराया, जीव-अजीव सभी मेरे समान हैं।
वैरभाव नहीं रखूं किसी से, ना ही कोई मुझसे रखे, हाथ जोड़कर मांगू क्षमा, सभी वीर क्षमादान करें।।

क्षमाप्रार्थी

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ **श्रमणोपासक टीम**

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बैंगलोर

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बैंगलोर/गंगाशहर

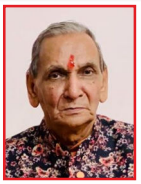
श्री पारसजी छाजेड़
धमधा

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर

श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर

श्री मनीषकुमारजी कोठारी
बैंगलोर

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद

श्री राजेशजी कटारिया
बैंगलोर

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव

श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल

श्री केशरीमल जी देशलहरा
दुर्ग

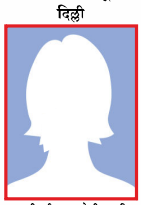
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन

चतुर्थ चरण

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा-बेरला

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता

श्रीमती कमलादेवी कोठारी
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता

श्री राजमलजी पंवार
कानवन

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण

* श्री शांतिलालजी बच्छावत-सूरत * श्री अनिलकुमारजी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंदजी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुन्दरलालजी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंदजी खिंवसरा-बैंगलोर * श्री बापूलालजी कोठारी-उदयपुर * श्री विजय कुमारजी टंच-बदनावर

द्वितीय चरण

* श्री तेजकुमारजी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंदजी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलालजी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्री बसंतजी कटारिया-रायपुर * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्री कमलजी बैद-मुम्बई * श्री प्रकाशचंदजी सूर्या-उज्जैन * श्रीमती सुनीताजी मेहता-बेलगाँव * श्री दिलीपजी पगारिया-जावरा * श्री राजकुमारजी बाफना-हरदा * श्री प्रेमचंदजी व्होरा-बदनावर

प्रथम चरण

* श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमारजी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराजजी पारख-रायपुर * श्री झंवरलालजी कुम्मट-सिलचर * श्री सोहनलालजी रांका-ब्यावर * श्रीमती ज्ञानकँवरजी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमारजी मुणोत- हैदराबाद * श्री भीखमचंदजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराजजी ओस्तवाल-भिलाई * श्री मुन्नालालजी पँवार-कानवन * श्री चेतन कुमारजी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभयकुमारजी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीपजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलालजी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्री प्रकाशचंदजी श्री श्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मलजी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंदजी कोठारी-ब्यावर * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर

मुमुक्षु सुश्री मुस्कानजी बरड़िया

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री मुस्कानजी बरड़िया
जन्म स्थान	:	देशनोक (राज.)
जन्म तिथि	:	9 जनवरी 1994
वर्तमान निवासी	:	बीकानेर (राज.)
व्यावहारिक शिक्षा	:	एम.कॉम. (ए.बी.एस.टी.)
धार्मिक अध्ययन	:	**आगम :-** श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र कंठस्थ, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र (1-4, 9-11) पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र की 22 गाथा, **थोकड़ा :-** लघुदण्डक, गतागत, जीवधड़ा, श्री प्रज्ञापना सूत्र भाग 1, 2, जैन स्तोक मंजूषा 1, 2, कर्मग्रंथ भाग 1-2 एवं कुछ अन्य।
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धांत भूषण-कोविद-विभाकर भाग 3, 4, मनीषी भाग 4
वैराग्य काल	:	लगभग 4 वर्ष
तपाराधना	:	31 दिन एकासन, तेला
दीक्षा महोत्सव	:	मंगलवार 11 अक्टूबर 2022 उदयपुर (राज.)

पारिवारिक परिचय

दादीसा-दादासा	:	स्व. श्रीमती सूरजादेवी-स्व. श्री पूनमचंदजी बरड़िया
बड़ी मम्मी-बड़े पापा	:	श्रीमती इन्द्रादेवी-श्री मूलचंदजी बरड़िया
माताजी-पिताजी	:	श्रीमती तारादेवी-श्री आसकरणजी बरड़िया
काकीसा-काकासा	:	श्रीमती सुनीतादेवी-श्री ओमप्रकाशजी बरड़िया, श्रीमती अंजुदेवी-श्री मेघराजजी बरड़िया, श्रीमती रेखादेवी-श्री मोहनजी बरड़िया, श्रीमती मंजूदेवी-श्री पवनकुमारजी बरड़िया
बुआसा-फूफासा	:	श्रीमती किरणदेवी-स्व. श्री चन्द्रकुमारजी कोचर, श्रीमती सुनीतादेवी-श्री सिद्धार्थजी कोचर
भाई-भाभी	:	श्रीमती मधु-श्री आलोकजी बरड़िया, श्रीमती संगीता-श्री मनीषजी बरड़िया, श्रीमती भाग्यश्री-श्री दिव्यांसुजी बरड़िया
बहन-बहनोई	:	श्रीमती नीलम-श्री विनीतजी बैद, श्रीमती वर्षा-श्री सुभाषजी
भाई	:	अंकित, ऋषभ, तुषार, अर्पित
बहन	:	एकता, लब्धि, ऋद्धा, मिष्ठी
भतीजे-भतीजी	:	पर्व, भूमि, ध्रुवी
भानजा-भानजी	:	मुदित, मोहित, दृष्टि

ननिहाल पक्ष

नानीसा-नानासा	:	स्व. श्रीमती मनसुखीदेवी-स्व. श्री उदयचंदजी डूंगरवाल
मामीसा-मामासा	:	स्व. श्री पारसीदेवी-श्री दामचंदजी डूंगरवाल, श्रीमती कस्तुरीदेवी-श्री मानचंदजी डूंगरवाल, श्रीमती बसंतीदेवी-श्री चम्पालालजी डूंगरवाल, श्रीमती प्रेमदेवी-श्री गणेशमलजी डूंगरवाल
मामीसा-मासोसा	:	श्रीमती विमलादेवी-श्री महावीरजी बेताला, श्रीमती प्रेमदेवी-श्री राजेन्द्रजी भूरा, श्रीमती सुशीलादेवी-स्व. श्री राजेन्द्रजी बोथरा

।। जय महावीर ।।

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

परीक्षा

Exam date 18 Sept. 2022

भाग 1 से 12 तक लिखित परीक्षा होगी और 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चो हेतु ओरल परीक्षा होगी (भाग 1 से 4 भाग तक)

सकल जैन समाज में सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते है।

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें ।

☎ 7231933008

केंद्रीय जैन संस्कार पाठ्यक्रम टीम

।।जय गुरु नाना।।
।।जय महावीर।।
।।जय गुरु राम।।
DEVOTE FOR SANGH
हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना
राम चमकते भानु समाना
1 राष्ट्र संघ कार्य स्वरूप
सत्र 2020-22
खिलते ज्ञान पुष्प-6
An Online Quiz Contest
समतामय आचरण के 21 सूत्र
प्रत्याख्यान मार्गदर्शिका
परीक्षा
रविवार
सितम्बर
11'2022
रात्रि 8:30 से 9:00 बजे तक
01 किसी भी आयु वर्ग के इच्छुक व्यक्ति इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
02 यह प्रतियोगिता महिला व पुरुष दोनों वर्ग के लिए है।
03 महिला और पुरुष वर्ग के लिये पुरस्कार श्रेणी अलग-अलग है। पुरस्कार राशि समान है।
II ₹1501
I ₹2101
III ₹701
आंचलिक विजेता 12×1
₹301
₹301
राष्ट्रीय विजेता प्रथम-40
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

श्रमणोपासक
|| जय गुरु नाना ||

|| जय महावीर ||

29-30 अगस्त 2022
|| जय गुरु राम ||

पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63

श्रमणोपासक समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक
गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-संपादिका
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

बैंक खाता विवरण

Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

Bank	: State Bank of India
A/c No	: 31264126681
IFSC Code	: SBIN0003401
Branch	: G.S. Road, Bikaner
email	: accounts@sadhumargi.com
Mob. No.	: 7073311108

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	
साहित्य	: 8209090748	: publications@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231933008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

श्रमणोपासक सदस्यता

आजीवन (अर्द्ध मूल्य)	
(केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक	
(केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक	
(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

सूचना- किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक
लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

अनुक्रमणिका

मन नहीं पिघले तो क्षमा कैसी? -परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.	:	09
उदयपुर समाचार	:	12
केन्द्रीय पदाधिकारियों का प्रवास	:	27
विभिन्न परीक्षाओं के परिणाम	:	29
विविध समाचार	:	30
कार्यसमिति बैठक विवरण	:	36
महत्तम महोत्सव का भव्य शुभारंभ	:	44
विविध भेंट मार्फत	:	47
स्मृतिशेष	:	51
विनम्र श्रद्धांजलि	:	52
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	55
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	58

सुविचार

करुणा-भावना

गुण-बल-साधन से, हीन जीवों को निहार।
उठते हैं जो-जो भाव, करुणा वो जानिये।।

चाकरी चिकित्सा दया-दान सहयोग आदि।
करुणा के रूप सारे, इन्हें पहचानिये।।

जग-अगनी में यह, जलद समान मानो।
करुणा है दैवी गुण, अपनाना चाहिए।।

वीर कहे गौतम से, सम्यक्त्व का मूल यही।
करुणा के बिना सारा धर्म ढोंग मानिये।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

जहर पीकर जो जी सके

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

जो अपमान, तिरस्कार, उपेक्षा रूपी विष का पान करके भी हंसते हुए प्रसन्नतापूर्वक जी सकता हो, वह जीवन में अवश्य ऊंचाइयां प्राप्त कर सकता है। जिसका मन छोटा होता है, वह न तो कभी जहर को पी सकता है और न ही उसे पचा सकता है। वह जीवन में ऊंचाइयां प्राप्त कर सके यह कठिन है। अमृत पीने को बहुत लोग तैयार रहते हैं। कहा जाता है कि समुद्र मथने से प्राप्त अमृत को लेने के लिए तो देव लालायित थे, पर विष पीने को कोई भी तैयार नहीं हुए। अन्ततोगत्वा 'शिव-शंकर' ने उस विष का पान किया। वस्तुत: अपमान की घूंट, उपेक्षा का जहर हर कोई नहीं पी सकता। उसके लिए सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। सत्वशील प्राणी ही उसका पान करने में समर्थ होते हैं।

लोग हिमालय की चोटी पर चढ़ने का ख्वाब तो देखते हैं, पर वे अपने पैरों की ताकत को नहीं देखते। जो बैसाखियों के बल पर हिमालय की ऊंचाई तय करना चाहे तो शायद यह दिवा स्वप्न या शेखचिल्ली की कल्पना ही हो सकती है। सफलता के लिए दूसरों का मोहताज बने रहने से सफलता नहीं मिलती। स्वर्ग भी स्वयं मरने से ही प्राप्त हो सकता है। सफलता भी स्वयं के बलबूते पर ही पाई जा सकती है, पर उसके लिए साहस का होना भी जरूरी है। ऊंची-नीची स्थितियों में धैर्य रखना आवश्यक है। छोटी-छोटी घाटियों को पार करने में भी जो अधीर हो जाए, वह हिमालय के शिखर को कैसे पा सकेगा? वह उसको देख-देखकर तरस तो सकता है, पर पाना उसके लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। जीवन में ऊंचाइयां पाना हिमालय की चोटी का स्पर्श करना है। उसके लिए मान-अपमान की घाटियों को लांघना ही पड़ेगा। मान से मन छोटा हो जाता है, जिससे वह ऊंचाइयों के ख्वाब तो देख सकता है, पर पाना उसके लिए दुष्कर है। अत: मान हो या अपमान, स्वयं को एकरूप रख सकते हो तो ऊंचे स्वप्न देख सकते हो व उन्हें साकार भी कर सकते हो।

30.07.2016, श्रावण कृष्ण 11, शनिवार **साभार- प्रणव**

धर्मदेशना

मन नहीं पिघले तो क्षमा कैसी?

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

क्षमाशील बनने का उद्‌बोधन तो सभी सुनते-सुनाते हैं और इतना सुनते-सुनाते हैं कि एक तरह से यह सब सुनते-सुनते कान पक गए हैं। लेकिन यथार्थ में मन नहीं पिघलता है तो वह क्षमा मांगनी और देनी कैसी? ममत्व नहीं गलता तो क्षमाशीलता आएगी कहां से? यह ममत्व अपनी धन-सम्पत्ति का हो सकता है या अहंकार आदि वृत्तियों का। यह अपनी पकड़ी हुई बात, हठ का भी हो सकता है या विषय-विकार का। ममत्व जिस बात का भी पकड़ लिया जाए वह हठ से जुड़ जाता है और हठ से जुड़कर यह मन तन जाता है। ऐसा तनाव जब गहरा हो जाता है तो वह मन क्षमाशील बनने को तैयार ही नहीं होता है। कभी आत्मा की आन्तरिक शक्ति क्षमा की दिशा में दौड़ती भी है तो उस कठिन ममत्व से टकराकर वापस लौट आती है और मोहवश पुन: संज्ञाहीन-सी हो जाती है। वह क्षमा का आवेग बाहर प्रकट नहीं हो पाता है।

आप जानते हैं कि नारियल को सर्वश्रेष्ठ फल माना जाता है। इसी कारण उसे श्रीफल कहते हैं। समझें कि यदि दो नारियलों को बाहर की चोटी के बालों से जोड़कर बांध दें तो दोनों के बाल एक-दूसरे की तरफ झुक जाते हैं। मगर उनका कोई असर उनके भीतर की गिरी तक पहुँचता है? गिरी के ऊपर की छाल, ऐसा कड़ा ढक्कन होता है कि उसको छेद कर ही कोई चीज भीतर पहुँच सकती है। दोनों नारियलों की गिरियाँ नहीं मिले व एकरूप न बने तो क्या उनका मिलन संभव है? ऐसा कोई सुज्ञ पुरुष ही कर सकता है, जो चोटियों के बालों के भीतर रही हुई कड़ी छाल को तोड़कर गिरियों को बाहर निकाल दे। इसी दृष्टांत को दिलों पर लागू कीजिए।

जब क्षमायाचना के शब्द मुंह से निकलते हैं, हाथ जोड़े जाते हैं व सिर झुकाया जाता है तो वह सिर्फ दो नारियलों का बालों से जुड़ना मात्र ही होता है। वह सिर्फ बाहरी बात होती है। वह क्षमा यदि भीतर के कठोर दिल की परतों को चीर कर उसके मर्मस्थल तक पहुंच पाए तभी उस क्षमा की वास्तविकता प्रकट हो सकती है। उस गिरी के समान हृदय का मर्मस्थल कोमलता का पुंज होता है और जब अन्तर्हृदय मिलकर एकरूप बनते हैं तभी क्षमा हार्दिक बनती है। एक हृदय को दूसरे हृदय से वैसी क्षमा ही घनिष्ठतापूर्वक मिलाती है और इसी क्षमा के प्रभाव से अनेकानेक हृदय मिलकर एक हो जुड़ जाते हैं। **हृदयों की ऐसी अद्‌भुत एकता ही परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तत: समूचे विश्व को प्रेम और सहयोग की मधुर डोर से बांध सकती है।** आज के प्रसंग से नारियल की गिरियों की तरह मन पिघले तथा आपस में जुड़े तभी क्षमायाचना का वास्तविक महत्त्व प्रकट हो सकता है। ऐसी भव्य क्षमाशीलता ही मानवीय मूल्यों को देवत्व की दिशा में आगे बढ़ाती है।

क्षमा से अन्तर ज्योति जगाइए

विकारों की प्रधानता वाले आज के युग में यदि वीतराग देव के सिद्धांतों के अनुसार इस क्षमा पर्व पर क्षमा का आदान-प्रदान करते हैं तो वह विशेष महत्त्व का अनुष्ठान होगा। जब वैर-विरोध बुरी तरह से फैला हुआ हो और उसके बीच में यदि कोई सच्चे हृदय से

क्षमायाचना तथा क्षमादान करता है तो उस सुकृत्य की प्रभावकता आशा से भी अधिक होगी। उसका कारण है, बुराइयों के घटाटोप अंधेरे के बीच अगर अच्छाई की एक क्षीण-सी प्रकाश किरण भी उभरती है तो उसकी तरफ आसानी से सबका ध्यान चला जाता है। इस दृष्टि से क्षमाधर्म के माध्यम से अभी अन्तर ज्योति को जगाने का बड़ा ही उपयुक्त अवसर है।

आपको क्षमा के संदर्भ में नारियल का दृष्टांत दिया गया है। जैसे क्षमापना का शुभ कृत्य जब हाथ जोड़ने व माथा झुकाने तक ही सीमित रहे तो वैसी क्षमापना प्रभावहीन रहती है। उसी तरह जैसे दो नारियलों को उनकी चोटियों के बालों से जोड़ दिया जाए। जब तक नारियल की कड़ी छाल नहीं तोड़ी जाएगी तब तक गिरी की कोमलता बाहर प्रकट नहीं हो सकेगी। उसी प्रकार मोह-माया रूपी छाल (कांचली) के कठोर आवरण को नहीं हटाया जाएगा तो आत्मज्योति का प्रकटीकरण एवं मिलन संभव नहीं। अन्त:करण की मृदुता एवं कोमलता के प्रकट होने पर ही तो क्षमा का सार्थक स्वरूप सामने आता है। आज उसके आनंद का रसपान करने का हार्दिक प्रसंग है। संवत्सरी के पर्व पर मेरे भाई-बहिनों ने नारियल की छाल के समान अपने हृदयों की कठोरता का त्याग कर दिया होगा और सर्वत्र गिरी के टुकड़े दिखाई दे रहे होंगे। आपकी हार्दिकता उमड़ रही हो तो यह बड़ा ही सुंदर अवसर है जो सोचने का नहीं, सिर्फ अनुभव लेने का विषय है। अन्तर ज्योति जली होगी, मिली होगी और उनकी एकरूपता का परिणाम आपके संघ में बहुत ही हितावह रूप में प्रकट होगा।

यह भारतवासियों का भाग्य है कि उन्हें इस भूमि पर ऐसी दार्शनिक एवं सैद्धांतिक वाणी सुनने को मिलती है। विदेशों में ऐसा अवसर कहां है? यदि आंतरिक अनुभूति के साथ अन्तरज्योति जगाने वाला उपदेश मिले तो वह अवश्य अन्त:करण को छू लेता है और उसे जागृत बना देता है। ऐसा नहीं है कि विदेशों में व्यक्ति सद्गुण संप्राप्ति या आध्यात्मिक उन्नति नहीं करते। वहां धर्म श्रवण के अवसर कम हैं। यों यहां आप लोगों को ऐसे अवसर बहुत मिलते हैं किंतु अपनी अन्तर ज्योति जगाने में आप कितना पुरुषार्थ लगाते हैं या एक कान से सुनकर दूसरे कान से उसे बाहर निकाल देते हैं, यह आप ही जानें। मैंने एक विदेशी भाई की कहानी पढ़ी थी, जिसने अपनी अंतरज्योति जलाकर हृदय की कोमलता अभिव्यक्त की। वह इस रूप में कि उसने एक मनोवैज्ञानिक शिक्षण संस्था अपनी सारी सम्पत्ति लगाकर खड़ी की, जहां बाल हृदयों को प्रारंभ से सुसंस्कारों में ढ़ालने का सफल प्रयास किया जाता है। उसके जीवन में एक ऐसा व्यक्ति सम्पर्क में आया जिसे उसने जीने की कला सिखाई किंतु उसी के हाथों उसे अप्रिय व्यवहार मिला। फिर भी उसने क्षमा का जो आदर्श प्रस्तुत किया, उसकी सबने भूरि-भूरि सराहना की।

क्षमा के आदर्श उदाहरण सभी देशों में मिलेंगे किंतु भारत भूमि पर जिस प्रकार का आध्यात्मिक वातावरण रहा है, उसमें यह आशा रखना स्वाभाविक है कि यहां के निवासी अधिक क्षमाशील बनें। सद्गुणाधारित समाज का ऐसा चित्र दिखाएं कि विदेशों को भी प्रभावित कर सकें। जिस देश, समाज या परिवार में क्षमाधर्म को महत्त्व दिया जाता है, वहां सभी एक-दूसरे के प्रति सहनशील होते हैं, परस्पर सहयोग का वातावरण बनता हैं तथा एक-दूसरे की अन्तरज्योति को जगाने का पुरुषार्थ करते हैं।

साभार- नानेशवाणी-51

हम कर्मों के अनुरागी बनते हैं, कर्मों को आमंत्रित करते हैं और इस प्रकार स्वयं ही दु:ख को आमंत्रण देते हैं। जरा सोचें कि उन्हें बुलाता कौन है? कर्म आयातित हैं। हमने ही इन्हें आमंत्रित किया है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

श्रमणोपासक हैडलाइन्स

1. उदयपुर में आचार्य प्रवर के ऐतिहासिक चातुर्मास का परचम लहराया। अब तक 36 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। 9 की लड़ी निरंतर गतिमान है।
2. राम गुरु विराट हैं... दीक्षाओं का ठाठ है... 2 अगस्त को मुमुक्षु बहिन विमलादेवी भंडारी की दीक्षा की घोषणा से जन-जन में हर्ष की लहर व्याप्त। 3 अगस्त को जैन भागवती दीक्षा अन्य दो मुमुक्षु बहिनों के साथ सम्पन्न।
3. महिला समिति द्वारा गर्भ संस्कारों पर आधारित एक अनोखा कार्यक्रम त्रिदिवसीय शिविर 'गोल्डन स्टेप्स' उदयपुर में सम्पन्न।
4. सरलमना, कर्त्तव्यपरायणा, सेवाभावी महासती श्री लघुताश्रीजी म.सा. को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। महासतीजी ने किए तीनों मनोरथ पूर्ण।
5. तप-त्याग से महकती उदयपुर की धरा हुई धन्य। 'लोच में क्या सोच' में 100 लोच सम्पन्न।
6. साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए अपने तीनों मनोरथ पूर्ण किए।
7. श्री सागरजी बाघमार का केन्द्रीय गृहमंत्री पदक वर्ष 2022 के लिए एवं पीयूषजी बैद-कोलकाता का यू.के. की ओर से आयोजित ए.डी.आई.टी. परीक्षा में चयन। संघ हुआ गौरवान्वित।
8. श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा Towards Innovation दो दिवसीय जीवन परिवर्तन वर्कशॉप लगाया गया।
9. अब संघ की विभिन्न जानकारियां मिल पाएंगी 'साधुमार्गी ऐप' द्वारा।
10. जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा लिखित व मौखिक 18 सितम्बर 2022 को होनी संभावित।
11. पर्युषण पर्व के दौरान 'पचखाण से निर्वाण' के अन्तर्गत विभिन्न प्रत्याख्यानों से जुड़ने का हुआ आह्वान।
12. श्रमणोपासक मुखपत्र द्वारा 'सम्यक्त्व व श्रावकाचार' विषय पर विशेषांक का प्रकाशन संभावित।
13. श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का वार्षिक अधिवेशन 26-27-28 सितम्बर को उदयपुर में होगा आयोजित।
14. क्षमायाचना के अवसर पर महिला समिति द्वारा चलायी जा रही 'जीवदयाणं' सामाजिक गतिविधि।
15. मुमुक्षु बहिन सुश्री कविताजी बुच्चा एवं दिव्याजी पारख की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न। नवीन नामकरण क्रमशः नवदीक्षिता साध्वी श्री तृप्तिश्रीजी म.सा. व नवदीक्षिता साध्वी श्री दीप्तिश्रीजी म.सा. किया गया।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में 'राम महोत्सव' चातुर्मास की अलौकिक छटा

36 मासखमण पूर्ण, नौ की लड़ी निरंतर जारी

दृष्टि बदलने से आएगा बदलाव –आचार्य श्री रामेश

हम सदैव सत्य के साथ जुड़ें –उपाध्याय प्रवर

वर्द्धमान जैन स्थानक भवन, हिरण मगरी सेक्टर–4, उदयपुर

ज्ञान और क्रिया का संगम, जिनशासन का तेज सितारा।
इस कलियुग में रामचरण में, सत्युग का है सदा नजारा।।

जिनकी आत्मा में अरिहंत का ज्ञान, सिद्ध का ध्यान, आचार्य का आचरण, उपाध्याय की उपासना, साधु की साधना है, समता सर्व मंगल प्रदाता, आगमज्ञाता, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा–16 एवं महासती श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा–70 के **'राम महोत्सव'** चातुर्मास की अलौकिक छटा देखते ही बन रही है। अलौकिक महापुरुष अध्यात्म की पावन गंगा निरंतर प्रवाहित कर रहे हैं। धर्मप्रेमी जनता आत्मतृप्त होकर जीवन की दशा–दिशा को निरंतर धर्मोन्नति के पथ पर आगे बढ़ा रही है। चातुर्मास में अब तक 36 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। कई गुप्त तपस्याएं गतिमान हैं। नौ की लड़ी निरंतर जारी है। आचार्य भगवन् के मुखारविंद से तीन मुमुक्षु आत्माओं की जैन भागवती दीक्षा उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। देश–विदेश से श्रद्धालुओं का आवागमन निरंतर जारी है।

01 अगस्त 2022। धर्मसभा में श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सत्कर्म करो, सत्कर्म सदा सुखदायी है। सत्कर्म सब संकट दूर हटाकर जीवन खुशियों से भर देता है। लक्ष्य निर्धारित होने से मंजिल की प्राप्ति होती है। मुझे मोक्ष जाना है, यह लक्ष्य निर्धारित करना है।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार दु:ख में झुलस रहा है। संसार दु:ख की खान है। वैरागी बनो क्योंकि सच्चा सुख संयम में है। साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि प्रबल पुण्यवानी से राम गुरु का सान्निध्य एवं जिनवाणी श्रवण का लाभ मिला है। अब जीवन में परिवर्तन लाना है। महिला मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महासती श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. के 27 उपवास, महासती श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. के 24 उपवास की जैसे ही घोषणा की, सभा हर्ष–हर्ष, जय–जय से गूंज उठी। उपवास, बेला, तेला, अठाई, नौ, ग्यारह, बारह आदि कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। कई गुप्त तपस्याएं जारी हैं।

सभा में मुमुक्षु बहिन सिद्धिजी नाहर–धमतरी एवं मुमुक्षु बहिन यशस्वीजी ढेलड़िया–बालोद के आगमन पर सभा जयघोषों से गूंज उठी। बाहर के दर्शनार्थियों का आवागमन बड़ी संख्या में हुआ। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

विमलादेवी भंडारी की दीक्षा 3 अगस्त के लिए घोषित

02 अगस्त। धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी मधुरवाणी में फरमाया कि

''तीर्थंकर देव भगवान ऋषभ की स्तुति भक्तामर में भगवान की छवि को निराली एवं अद्भुत बताया गया है। साधु बनने के बाद बिना आभूषण सौंदर्य कहां से आया? हमारे आचरण से वह सौंदर्य आया। सभी की इच्छा रहती है कि मैं सौंदर्यवान बनूं। जिसका सौंदर्य नहीं है वह बाहर से भी अपने आपको सुंदर बनाने की कोशिश करता है। हमारा आचरण, हमारे विचार, हमारा व्यवहार कैसा है उसके आधार पर आने वाले समय में हमें सौंदर्य की प्राप्ति होती है। हमारा जितना शुद्ध आचार होगा, शुद्ध व्यवहार होगा, वह हमारा सौंदर्य प्रकट करने वाला बनेगा। शरीर की नहीं बल्कि मति की सुंदरता की कीमत बताई गई है। सुंदर मति का अर्थ किसी के साथ द्वेष, ईर्ष्या, डाह नहीं, किसी के प्रति बुरे विचार नहीं करना। सद्भावना बहुत बड़ी बात है। सत् के प्रति जो भाव होता है वह सद्भाव है।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक का जीवन अस्त-व्यस्त नहीं व्यवस्थित होता है। श्रावक अनर्थ क्रिया से बचता है, क्योंकि उसे पाप का डर रहता है। हम तथाकथित धार्मिक नहीं अपितु सच्चे धार्मिक बनें। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने भाव गीत ''**आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया**'' प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यदेव ने विशाल जनमेदिनी के समक्ष धर्मसभा में जैसे ही 65 वर्षीय मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलादेवी स्वरूपचंदजी भंडारी-भंडारा (महाराष्ट्र) की दीक्षा 3 अगस्त के लिए घोषित की, सम्पूर्ण सभा 'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं के ठाठ हैं' आदि जय-जयकारों से गूंज उठी। वीर भंडारी परिवार की ओर से वीर पुत्र देवेंद्रजी, हेमंतजी भंडारी-भंडारा, वीर भ्राता महेंद्रजी गांधी आदि परिजनों ने सहर्ष अनुज्ञा-पत्र एवं मुमुक्षु बहिन विमलादेवी भंडारी ने प्रतिज्ञा-पत्र आचार्य भगवन् के पावन चरणों में समर्पित किया। केसरिया-केसरिया गीतों एवं जय-जयकारों से सभा गुंजायमान हो गई।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अतिशय को देखकर जनता नतमस्तक हो रही है। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। मुमुक्षु बहिन विमलाजी भंडारी, मुमुक्षु बहिन सिद्धिजी नाहर, एवं मुमुक्षु बहिन यशस्वीजी ढेलड़िया के ओगा बंधाई, केसर छंटाई आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

दीक्षार्थिनी बहिनों का भव्य वरघोड़ा एवं आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन

भौतिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर संयम मार्ग की ओर कदम बढ़ाने वाली 65 वर्षीय मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलादेवी स्वरूपचंदजी भंडारी-भंडारा, 25 वर्षीय मुमुक्षु बहिन कु. सिद्धिजी किशोरचंदजी-ललितादेवी नाहर-बोरझरा जि. धमतरी (छ.ग.) एवं 22 वर्षीय मुमुक्षु बहिन कु. यशस्वीजी मांगीलालजी-अनिताजी ढेलड़िया-बालोद (छ.ग.) का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ-उदयपुर, समता महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवासंघ-उदयपुर, श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संस्थान-उदयपुर, सुविधि महिला मंडल, आरुग्गबोहिलाभं सहित विभिन्न संघों एवं संस्थानों द्वारा उनके आदर्श त्याग को नमन करते हुए भावभीना स्वागत-अभिनंदन अटल सभागार में किया गया।

प्रारंभ में मंगलाचरण पश्चात् समता महिला मंडल एवं समता बहू मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास संयोजकजी ने स्वागत भाषण में वीर परिवार के उत्कृष्ट त्याग की सराहना की। अभिनंदन-पत्र का वाचन सह-संयोजकजी ने किया। मुमुक्षु का परिचय महेश नाहटा ने दिया। संघमंत्रीजी ने संचालन करते हुए कहा कि संयम मार्ग पर

वीर ही कदम आगे बढ़ाते हैं।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि इस पंचम आरे में हमने भगवान महावीर को तो नहीं देखा, लेकिन गुरु राम के दर्शन कर ऐसा लगता है जैसे साक्षात् महावीर के दर्शन कर लिए हों। आचार्य भगवन् के शासन में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। संघ के विभिन्न आयामों से जुड़कर हम सच्ची गुरु समर्पणा प्रस्तुत करें। दीक्षार्थी परिवार वंदनीय है।

दीक्षा पूर्व मुमुक्षु बहनों का जनता को उद्‌बोधन

मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलादेवी भंडारी ने अपने भावोद्‌गार में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से मेरी वर्षों की संयम लेने की भावना साकार रूप लेने जा रही है। महासती श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (देशनोक वाले) से मुझे वर्षों पूर्व संयम की विशेष प्रेरणा प्राप्त हुई, उसके बाद लगातार मैं निवृत्ति मार्ग की ओर अग्रसर होती गई। संयम मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। पारिवारिजनों का सहयोग विस्मृत नहीं किया जा सकता।

मुमुक्षु बहिन सुश्री सिद्धिजी नाहर ने भावोद्‌गार में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से संयम मार्ग की ओर अग्रसर हो रही हूं। शिविर के माध्यम से मुझे विशेष प्रेरणा प्राप्त हुई। पारिवारिकजनों का सहयोग एवं संस्कार मुझे बचपन से ही मिलते रहे। संसार छोड़ने योग्य है और संयम ग्रहण करने योग्य है। पूज्य गुरुदेव ने आरुग्गबोहिलाभं के रूप में हम अबोध बालिकाओं के लिए एक बहुत ही अच्छा प्लेटफॉर्म दिया है। आप सभी भी अपनी बच्चियों को दीक्षा नहीं तो शिक्षा लेने का मौका अवश्य प्रदान कर वहां जरूर भेजें। आप अपनी बच्चियों में जरूर बदलाव पाएंगे।

मुमुक्षु सुश्री यशस्वीजी ढेलड़िया ने अपने भावों में गीतिका **'यूं तो बहुत है मौसम, चिड़िया कई चहकती हैं। पर मेरे कंठ को स्वर दे, वो बसंत तू ही हैं।।'** के साथ कहा कि गुरुदेव को देखकर मेरे मन में वैराग्य आया। बचपन से मुझे पारिवारिक संस्कारों के साथ महासती श्री ताराकँवरजी म.सा. से विशेष प्रेरणा मिली। महान् क्रियाधारी आचार्य प्रवर, जो कि इतने विशाल संघ के तारणहार हैं; वे सदैव शांत, सरल, गंभीर रहते हैं। उनके चेहरे पर कभी भी तनाव नहीं झलकता। वे समभाव में लीन रहते हैं। उपाध्याय प्रवर ज्ञान के सागर हैं। उदयपुर संघ की सेवा, भक्ति व धर्मनिष्ठा अनुपम है।

दीक्षार्थी बहिनों का भव्य वरघोड़ा जय-जयकारों व मंगल गीतों के साथ निकाला गया। आकर्षक रथ में सवार होकर दीक्षार्थी बहिनें सभी का अभिवादन स्वीकार कर रही थी। जैन-जैनेत्तर सभी इस अवसर पर उपस्थित होकर दीक्षार्थिनी बहिनों के आदर्श त्याग की सराहना कर रहे थे। लक्ष्मी निवास से आरम्भ होकर वर्द्धमान जैन स्थानक भवन सेक्टर-4 में शोभायात्रा सम्पन्न हुई।

अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामेश के मुखारविंद से तीन मुमुक्षु बहिनों की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

दीक्षा सिद्धत्व का द्वार -आचार्य श्री रामेश

इतिहास घास के तिनकों का नहीं, फौलादी तीरों का बनता है,
इतिहास कांच के टुकड़ों का नहीं, उज्ज्वल हीरों का बनता है,
यूं तो जीने के लिए जीते हैं सभी, पर इतिहास संयम पथ पर चलने वाले वीरों का बनता है।।

03 अगस्त। आधुनिक भौतिकता की चकाचौंध को ठोकर मारकर तीन वीर आत्माएं कठिन वीतराग पथ पर अग्रसर हों सभी के लिए आदर्श बन गईं। जिनकी संयम साधना की गूंज सम्पूर्ण जैन समाज ही नहीं अपितु देश-विदेश

में गूंज रही है। ऐसे युगनिर्माता अनुपम दीक्षा प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु श्रीमती विमलादेवी भंडारी-भंडारा, मुमुक्षु कु. सिद्धिजी नाहर-धमतरी (छ.ग.), मुमुक्षु कु. यशस्वीजी ढेलड़िया-बालोद की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति के उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया।

शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''दीक्षा सिद्धत्व की राह है, सिद्धत्व का द्वार है। हमारी मंजिल सिद्ध बनना है और इसी के लिए संयम यात्रा प्रारंभ की जाती है। आज भी तीन मुमुक्षु आत्माएं उस दिशा में गतिशील हैं। चार शरण हम स्वीकार करते हैं, किन्तु क्या यथार्थ में हमने शरण स्वीकार कर ली? शरण स्वीकार का अर्थ है मेरी कोई भी इच्छा नहीं है। मेरा वर्चस्व, अस्तित्व नहीं रहा। नदी का पानी जब तक समुद्र में नहीं मिलेगा, तब तक वह नदी है। सागर में समा जाए तो वह सागर बन जाता है। अपने अहंकार को, वर्चस्व की चाह को विलिन करने से ही शरण स्वीकार होगी। तब समर्पण फलित होता है। हमारे जीवन में सोने का सूरज कब उगेगा? लोग क्या कहेंगे वह मत सुनो, तुम अपने मन की सुनो। मेरा मन जो कहे अच्छे कार्य में पीछे नहीं हटना चाहिए। कोई भी विचार आत्महित का हो तो उसे तत्काल सम्पन्न करना चाहिए। बुरे कार्य के विचार यदि मन में आते हैं तो उनको टालते रहना चाहिए।''**

आचार्य भगवन् ने प्रात: 6:40 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ की। दीक्षार्थी परिजनों, उदयपुर संघ, श्री अ.भा.सा. जैन संघ एवं उपस्थित जनता ने दीक्षा हेतु अपने दोनों हाथ उठाकर अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। तीनों दीक्षार्थी बहिनों ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की। तीन बार करेमि भंते के पाठ से तीनों मुमुक्षु बहिनों को सम्पूर्ण पापकारी सावद्य क्रियाओं का त्याग करवाकर आचार्यदेव ने पंच परमेष्ठी के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया।

नवीन नामकरण क्रमश: नवदीक्षिता साध्वी श्री चिदानंदश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री सिद्धिश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा. की जैसे ही घोषणा हुई, पूरी सभा जय-जयकारों व केसरिया-केसरिया गीतों से गूंज उठी। साध्वी मंडल ने 'राम गुरु को बधाई' गीत प्रस्तुत किया।

केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. ने पूर्ण किया। साध्वीवृंद ने **''देवा मंगलमय बधाई मन भावन लागे, मने राम गुरु रो जीवन प्यारो-प्यारो लागै''** प्रस्तुत किया। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने **''आत्मपथ पर तुम सदा बढ़ते ही जाना, भेदकर सब छद्म को तुम लक्ष्य पाना''** गीतिका प्रस्तुत की।

श्रीमती भाविकाजी बाफना ने कहा कि आज हम पूज्य गुरुदेव के पावन चरणों में नाहर परिवार की लाडली को समर्पित कर रहे हैं। आपकी संयम यात्रा निर्बाध हो, यही मंगलकामना है।

वीर पिता मांगीलालजी ढेलड़िया ने कहा कि आचार्य भगवन् ने अपने पावन चरणों में हमारी लाडली को स्थान दिया है। इस उपकार को हम कभी नहीं भूल सकते। संयम यात्रा में कभी कोई भूल हो जाए तो सचेत करते हुए क्षमा प्रदान करना। उदयपुर संघ की सेवाएं अत्यंत सराहनीय रही। इस अवसर पर ढेलड़िया परिवार-बालोद ने निम्न भाव गीत गुरुचरणों में प्रस्तुत किया-

आज देना प्रभु दिव्य बोधि बीजम्। अब फिर से उगे ना, ये भवांकुरम्।।

संघ मंत्रीजी एवं महेश नाहटा ने दीक्षा महोत्सव को अलौकिक, अविस्मरणीय निरूपित किया। सभा में

उपस्थित कई लोगों ने भोजन करते समय टी.वी. मोबाइल का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया। सभा में संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, महामंत्रीजी, स्थानीय संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी सहित उपस्थित सैंकड़ों गुरुभक्तों ने दीक्षा अनुमोदना कर जीवन कृतार्थ किया। तपस्याओं के क्रम में उपवास, बेला, तेला, अठाई व इससे ऊपर कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

04 अगस्त। तत्त्व ज्ञान कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की अत्यंत सुंदर व्याख्या फरमाई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए तरुण तपस्वी आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''श्रद्धा, समर्पणा में केवल जुड़ाव होता है। अभिलाषा, आकांक्षा, इच्छाएं परमात्मा से दूर ले जाने वाली होती है। जब तक दृष्टि नहीं बदलेगी तब तक बदलाव नहीं आएगा। अहंकार को नहीं छोड़ा तो सिद्धि नहीं मिलेगी। अपने अहंकार पर विजय पाना बहुत कठिन है। जो एक को नमा लेता है वो सबको नमा लेता है अर्थात् मनोविजेता विश्वविजेता बन जाता है। दुनिया पर नहीं अपने आप पर अधिकार जमाएं। जब तक व्यक्ति समर्पित नहीं होता तब तक अपना विचार चलाता है। आत्मा के विकार को दूर करने के लिए अशुभ विचारों को दूर करना होगा।''**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पुरुषों की 72 एवं स्त्रियों की 64 कलाएं होती हैं, लेकिन इन सबमें सर्वश्रेष्ठ कला धर्मकला है। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्कूलों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए।

वल्लभभाई पन्नालालजी खटोड़-भदेसर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक संदेश प्राप्त किया। श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के तत्त्वावधान में आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कारित बनाने के लिए अटल सभागार में त्रिदिवसीय गोल्डन स्टेप्स वर्कशॉप 4 से 6 अगस्त तक आयोजित किया गया। वर्कशॉप में भावी पीढ़ी के साथ माताओं को भी संस्कारित किया गया। संतान के आने से पूर्व एक माता का आचार-विचार, चिंतन-मनन, आचरण-व्यवहार कैसा हो, जिससे कि परिवार सुखी बने आदि कई जानकारियां रूपलजी ओस्तवाल-ब्यावर द्वारा दी गई।

05 अगस्त। श्री शोभनमुनिजी म.सा. जैन सिद्धांत बत्तीसी एवं तत्त्वज्ञान की कक्षा में निरंतर ज्ञानार्जन करवा रहे हैं।

धर्मसभा में भगवान महावीर की अमृतदेशना को प्रवाहित करते हुए प्रशान्तमना आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''यतना से चलते हुए, खड़े रहते हुए, बैठते हुए, सोते हुए, बोलते हुए आहार-पानी लेते हुए जीव पापकर्म रूपी आहार नहीं होने से अशुभ कर्मों का बंध नहीं करता। वह ऐसे कर्मों का उपार्जन नहीं करता जिसका परिणाम कष्ट रूप आता है। हम कष्ट से, दुःख से बचना चाहते हैं, लेकिन हमारी प्रवृत्ति को नहीं सुधारेंगे तो दुःख से, कष्टों से कैसे बचेंगे? सारी क्रियाएं यदि यतना से होगी तो अशुभ कर्मों से बचेंगे। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी यतना की परिपालना हो सकती है। बिना यतना के धर्म नहीं हो सकता।''**

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि दुनिया को नहीं अपने आपको बदलो। टी.वी., मोबाइल, व्हाट्सएप्प, फेसबुक, इंस्टाग्राम के उपयोग से जितना बच सकें, बचने का प्रयास करें।

गवरा नंदन करते वंदन, तुम हो संघ के चंदन।
भूरा कुल का लाल सलौना, बन गया हुक्मसंघ का सोना।
गुरुचरणों में पाया है, आगमज्ञान का मंथन।।

06 अगस्त। धर्मसभा को संबोधित करते हुए नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''आत्मा के तीन प्रकार हैं- बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा। जिसकी बाहरी सोच बनी रहती है, बाहर की चमक-दमक जिसको प्रभावित करती है, जो संसार को धुरी बनाए रखता है उसको बहिरात्मा कहते हैं। आज साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. ने 31 की तपस्या पूर्ण की। साध्वी श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. के 21 की तपस्या है। दिखावे के लिए तपस्या नहीं होनी चाहिए। तपस्या कर्मों की निर्जरा कराने वाली हो। समभाव व शांत भाव तप की विशेष साधना हैं।''**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पाश्चात्य संस्कृति के कारण युवा पीढ़ी अहंभाव की कगार पर है। धर्म संस्कृति को बनाए रखना है तो गुरु से बढ़कर कोई मिल ही नहीं सकता।

साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या में लीन महासतियांजी अपने अपूर्व आत्मबल का परिचय दे रही हैं। तपस्या में भी अपना काम स्वयं करते हैं। यह सब गुरुकृपा से ही संभव हो रहा है।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति एवं तपस्या गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती विजयादेवी पंकजजी पोखरना के 30 उपवास के प्रत्याख्यान सहित अन्य कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

धर्मपरायणा लक्ष्मीदेवी किशनलालजी-पांचू के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति प्राप्त की। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

07 अगस्त। श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा प्रात:कालीन प्रार्थना पश्चात् 'वंदन से बनाए जीवन चंदन' त्रिदिवसीय शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा. ने शिविरार्थियों को मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि गुरु के प्रति सबसे पहले श्रद्धा का भाव रखना चाहिए। वंदना, ज्ञान-दर्शन-चारित्र को ही की जाती है। शरीर से की जाने वाली वंदना **'द्रव्य वंदना'** एवं मन से की जाने वाली वंदना **'भाव वंदना'** है। गुरुवंदन करते समय इधर-ऊधर न देखें। विधियुक्त और श्रद्धा भाव से वंदन करें। दिखावा नहीं होना चाहिए। सांसारिक प्रलोभन का भाव रखते हुए वंदन नहीं करना चाहिए। आसन छोड़कर वंदना करनी चाहिए। वंदना करने से नीच गोत्र का क्षय और उच्च गोत्र का बंध होता है। वंदना की शुद्ध विधि शुद्ध आचरण सहित कई जानकारियां आपश्रीजी ने प्रदान दी।

प्रवचन के माध्यम से धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''सभी प्राणियों के साथ मैत्रीभाव होना चाहिए। आत्मा ही तुम्हारा मित्र और शत्रु है। जब हमारे भीतर मित्रता के भाव आते हैं तो सभी के प्रति सुंदर सद्भावना प्रकट होती है। यदि किसी का भला नहीं कर सकें तो किसी का बुरा भी नहीं करना चाहिए। फ्रेंडशिप डे यानी मैत्री दिवस पर हम संकल्प लें कि हमारे द्वारा किसी का बुरा न हो। दिशाबोध लेने वाला चाहे तो दिशा मिलेगी। सूर्य का प्रकाश कोई भी ले सकता है। बलाई जाति के लोग नाना गुरु के संपर्क में आने के बाद धर्मपाल बन गए। खोटे खान-पान का त्याग कर दिया। जंबूकुमार के संपर्क में आने से चोर-लुटेरों की संगति में रहने वाले 'प्रभव' का जीवन बदल गया। अभयकुमार की संगति से कसाई के बेटे का जीवन बदल गया।''**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **'दुनिया में देव अनेकों हैं, पर अरिहंत देव का क्या कहना'**। मित्र, सलाहकार अगर सही व्यक्ति को बना लिया तो जीवन सार्थक हो जाएगा। राम गुरु जैसे महान गुरु को हम अपना

आदर्श बनाएं तो हमारी संस्कृति सुरक्षित रहेगी। मुनिश्री ने छः माह के अंदर 10 भजन कंठस्थ करने का संकल्प लोगों को आचार्य भगवन् से दिलवाया।

साध्वी श्री विशाखाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा को खोजना पड़ता है। वह निरंजन, निराकार है। उस पर कर्मों का आवरण चढ़ा हुआ है। तप से वह आवरण दूर होता है। श्री गगनमुनिजी म.सा., साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. के मासखमण पूर्ण हुए। साध्वी श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. के आज मासखमण पूर्ण हो रहा है। तपस्या करना सरल है, पर कषाय को जीतना कठिन है। यह बात श्री गगनमुनिजी म.सा. फरमाते हैं, पर मैं कहती हूँ कि दोनों ही कठिन है। जब गुरुवर की शक्ति मिलती है तो कठिन कार्य भी आसान हो जाता है।

साध्वी श्री रुचिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु का अनमोल सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ है। भौतिकता में रचे-पचे रहकर समय को व्यर्थ में गंवाना नहीं है। साध्वी श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. एवं सभी तपस्वी आत्माएं अपने जोश-उत्साह के साथ मासखमण के रथ पर आरूढ़ हुए हैं। सभी तपस्वियों के मंगल स्वास्थ्य की शुभकामना करती हूं।

साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्वी आत्माओं ने गुरुकृपा से अपने मासखमण पूर्ण कर शासन का गौरव बढ़ाया है। साध्वी मंडल ने भाव गीत **''पल-पल गुरुवर ने ध्याऊं, चरणों में शीश झुकाऊं''** से माहौल भक्तिमय बना दिया।

ज्ञानजी डांगी-बड़ीसादड़ी एवं लक्ष्मीदेवी रतनलालजी मेहता-बड़ीसादड़ी के मासखमण सानंद सम्पन्न हुआ।

महामंदिर साधुमार्गी जैन महिला मंडल व संघ ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। परम गुरुभक्त पुखराजजी बैद-फलौदी के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति प्राप्त की। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी शिविर आदि कार्यक्रम हुए। आबुधाबी समता महिला मंडल की अध्यक्षा प्रियंकाजी सांखला ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

बच्चों को कार दें या नहीं, पर संस्कार अवश्य दें

08 अगस्त। 'वंदन से बनाएं जीवन चंदन' विषय पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर देवों का शासन अनादिकाल से चला आ रहा है। मनुष्य की आयु शक्ति, मिट्टी की गुणवत्ता क्रमशः घटती है, भरत क्षेत्र में यह घटना-बढ़ना लगा रहता है। महाविदेह क्षेत्र के अनेक विभाग हैं। किसी न किसी क्षेत्र में, विभाग में हमेशा तीर्थंकर रहते हैं। अगर किसी क्षेत्र में तीर्थंकर नहीं हैं तो भी वहां आचार्य परंपरा चलती है। महान वो नहीं जो भूल नहीं करता, महान वो है जो भूल करके स्वीकार कर लेता है। भूल करना मानवीय स्वभाव है, पर भूल को स्वीकार नहीं करना सबसे बड़ी भूल है। हम सदैव सत्य के साथ जुड़ें। संस्कारित परिवार की संतान ही जिनशासन की सेवा में तत्पर रहती है। हम अपने बच्चों को कार दें या नहीं, पर संस्कार अवश्य दें। प्रारंभ से ही बच्चों को अच्छे संस्कार देने चाहिए।

09 अगस्त। 'वंदन से बनाएं जीवन चंदन' धर्मसभा को संबोधित करते हुए महान तपोधनी आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि **''भूख से कम भोजन करना ऊनोदरी तप है। खाने में भी तप है और खाना छोड़ने में भी तप है। यदि शोध करेंगे तो खाने से हमारी वृत्तियां कई प्रकार के स्रोत में बहती हैं। राग-द्वेष की परिणतिमय बन जाती है। शांत भाव अर्थात् भाव में की गई तपस्या एक नई**

क्रांति पैदा करने वाली बनती है। तप से बहुत बड़े वक्षायन हमारे भीतर पैदा होते हैं। उन वक्षायनों से हमारी आत्मा परिपुष्ट होती है। भोजन से शरीर पुष्ट होता है किंतु जो वक्षायन तप से पैदा होता है वह हमारी आत्मा पर रहे हुए कर्मों को दूर करता है। तप आत्मा को सशक्त बनाने के लिए होता है। इसलिए तप सबको करना चाहिए। भगवान ने 12 प्रकार के तप बताए हैं। कोई न कोई तप हम अपने जीवन में अवश्य करें। यह तप आत्मशुद्धि और कर्मनिर्जरा के लिए होना चाहिए। साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा. आज 30 की तपस्या कर मासक्षमण पर आरूढ़ हो रहे हैं। आज ही के दिन महात्मा गांधी ने एक सूत्र दिया था- 'करो या मरो'। 9 अगस्त को क्रांति दिवस के रूप में माना जाता है।

श्री हेमगिरीजी म.सा. ने भजन '**शुभ अवसर आया है, तपस्या से जीवन सजाना**' प्रस्तुत किया। श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने ''**ऐसा अवसर मिला है मिलेगा कहां, जिनशासन मिला है मिलेगा कहां**'' की प्रस्तुति से शासन समर्पणा के भावों की प्रेरणा दी।

साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने तपस्या गीत 'उदयपुर में तप की बहार है, मासखमण करने वालों का अभिनंदन शत्-शत् बार है' प्रस्तुत किया। साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा मन उछलता रहता है, तपस्या से मन को स्थिर कर सकते हैं। तप मुक्ति-मंजिल पर चढ़ने के लिए लिफ्ट है। ये गुरुकृपा का ही गिफ्ट है।

साध्वी श्री जिज्ञासाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्विनी महासतियांजी ने अत्यंत आत्मबल का परिचय देते हुए तपस्या करके शासन का गौरव बढ़ाया है।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति एवं तपस्या गीत का संगान किया।

आचार्य भगवन् ने जब 15 मासखमण का प्रत्याख्यान करवाया तो पूरी सभा 'गुरुवर हो तो कैसे हों, राम गुरुवर जैसे हो' आदि अनेक जयकारों से गूंज उठी।

श्री गगनमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा. ने 'वंदन से बनाएं जीवन चंदन' शिविर में वंदन की शुद्ध विधि पर विशेष मार्गदर्शन दिया। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

नवदीक्षिता महासतियांजी की बड़ी दीक्षा सम्पन्न

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण, धन्य-धन्य कह रहा है हर मन।

10 अगस्त। नवदीक्षिता साध्वी श्री चिदानंदश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री सिद्धिश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा के पावन प्रसंग पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**साधु जीवन समर्पणा का जीवन है। मन-वचन-काया सब अर्पित करने होते हैं। मन-वचन-काया से संपूर्ण अहिंसा एवं सत्य की आराधना करनी है। अचौर्य महाव्रत में बिना पूछे कुछ भी नहीं लेना है। अनुज्ञा लेनी जरूरी है। यह मार्ग अहंकार को जीतने का है। सभी चीजें याचना से लेनी होती है। ब्रह्मचर्य व्रत में पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना, आत्मा में रमण करना है, जहां आनंद ही आनंद बरसेगा। अपरिग्रह**

महाव्रत में पूर्ण रूप से आसक्ति, ममत्व का त्याग करना है। परिग्रह दुःख का मूल है। शरीर से भी लगाव नहीं रखना है। निःस्पृह जीवन जीना है, कोई चाह-अभिलाषा नहीं रखनी है। विषय-वासना, ममत्व का कीचड़ व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। हजारों-लाखों गायों के दान से बढ़कर थोड़े समय का संयम श्रेष्ठ है। आत्मा ही मेरी मित्र व शत्रु है। मेरे भीतर किसी के भी प्रति शत्रुता के भाव नहीं रहें। एक-एक सूत्र अनमोल है। इन संयमी आत्मा के संयम पालन में हम सहयोगी बनें।''

आचार्य भगवन् ने दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिता महासतियांजी को पूर्ण अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि पांच महाव्रतों की प्रतिज्ञा दिलाकर बड़ी दीक्षा विधि सम्पन्न की। नवदीक्षिता महासतियांजी ने अपना संकल्प-पत्र पढ़ते हुए शुद्ध संयम का पालन, गुरु आज्ञा का पालन एवं सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने की प्रतिज्ञा दोहराई।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''**धर्म में राजनीति नहीं होनी चाहिए, लेकिन राजनीति में धर्म अवश्य होना चाहिए।**'' साध्वी मंडल ने '**राम गुरु को बधाई**' गीत प्रस्तुत किया। वीर माता अनिताजी ढेलड़िया व वीर बहिन हितांशीजी ढेलड़िया ने सुंदर गीतिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरु जिधर मोड़ें उधर मुड़ जाना, गुरु जिधर जोड़ें उधर जुड़ जाना और विनय धर्म का पालन करना। सभा में वीर भंडारी परिवार, वीर नाहर परिवार, वीर ढेलड़िया परिवार उपस्थित थे।

सभा में उपस्थित अनेक लोगों ने चारित्रात्माओं की तपस्या के उपलक्ष्य में सेल की घड़ी पहनने का त्याग किया। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

11 अगस्त। प्रातः तत्त्वज्ञान की कक्षा श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने ली। धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने फरमाया कि ''**जिसको आत्मा का बोध हो गया वह अंतरात्मा, जिसका जीवन समतामय बन गया वह परमात्मा और जो बाहरी भौतिक चकाचौंध में रह गया वह बहिरात्मा। अनादिकाल से हम विषमता में जी रहे हैं। अब हमें वीतरागता का स्वाद लेना है। समता की खोज करनी है। मर्यादा-सीमा के बाहर नहीं जाना है। दूसरों पर अधिकार नहीं जमाकर, जीओ और जीने दो का सिद्धांत अपनाना है। आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन 'समता दर्शन और व्यवहार' को प्रतिष्ठित करना है।**'' सत्य सदा जयकार चौपाई की सरस सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने की।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भजन '**इतनी कृपा भगवन् बनाए रखना मरते दम तक सेवा में लगाए रखना**' प्रस्तुत किया। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मोहनीय कर्म को जीतना बहुत मुश्किल काम है। मोह को छोड़ेंगे तो मोक्ष मिलेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**नाता जोड़ लिया गुरु से, नाता जोड़ लिया**' गीत प्रस्तुत किया। चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में कई दीर्घ तपस्याओं के अलावा अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

प्रचुर मात्रा में सामायिक, संवर, उपवास, पौषध, एकासना, बेला, तेला आदि हुए। बाहर के दर्शनार्थियों का

तांता लगा रहा। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, शिविर आदि हुए।

12 अगस्त। श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने प्रात:कालीन तत्त्वज्ञान की कक्षा ली। धर्मसभा में जिनवाणी का अमृत रसपान कराते हुए जिनशासन गौरव आचार्यदेव ने अपनी सिंह गर्जना में फरमाया कि **''आज रक्षाबंधन का पर्व है। रक्षा के लिए कोई भी पुकारे तो हमारी तत्परता रहनी चाहिए। सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान समझना है। दूसरों की रक्षा के पहले हमें अपनी आत्मा की रक्षा करनी है। हिंसा, झूठ से बचेंगे, किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाएंगे तब हमारी रक्षा होगी। जीवन व्यवहार में मन का बांध टूट जाता है और दूसरों से बुरा बर्ताव हो जाता है। पर्व प्रसंग पर हमें पूर्व की बातों को भूल जाना है और नयी जिंदगी की शुरूआत करनी है। मन की दूरियों को दूर करना है और एक-दूसरे के साथ सुंदर व्यवहार रखना है। हमारी दृष्टि गुणपरक होनी चाहिए। हमारी नैतिकता की नींव मजबूत होनी चाहिए।''**

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हम जैसा कर्म करते हैं हमें वैसा ही फल मिलता है। कर्म किसी को छोड़ते नहीं हैं। साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. ने तपस्या को आत्मशुद्धि का साधन बताते हुए तपस्वी आत्माओं का गुणगान किया। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

सभा में **''उदयपुर में तप की बहार है, जन-जन में खुशियां अपार हैं''** स्वर लहरियां सभा में गूंजने लगे।

राजस्थान विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष एवं उदयपुर से विधायक गुलाबचंदजी कटारिया, विधायक ललितजी ओस्तवाल-मंगलवाड़, संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित देश के कोन-कोने से पधारे गुरुभक्तों ने इस अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तपस्वियों के सम्मान में चौबीसी आदि कार्यक्रम हुए। संघ मंत्रीजी एवं महेश नाहटा ने तपस्वी आत्माओं के आत्मबल की सराहना की।

हर पूर्णिमा को गुरुदर्शन करने वाले विभिन्न स्थानों के गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। **'चक्रवर्ती की विजय यात्रा'** शिविर में श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने छह खण्डों की विजय का विस्तार से वर्णन समझाया। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, शिविर आदि कई कार्यक्रम हुए।

सरलमना साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. को भावांजलि

13 अगस्त। श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने प्रात:कालीन तत्त्वज्ञान की शिक्षा दी। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी सहज, सरल, सौम्य गुणों की धनी साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. के जोधपुर में देवलोकगमन के समाचार प्राप्त होने पर उनके गुणों का स्मरण कर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर आराध्यदेव आचार्य श्री रामेश ने शांत-प्रशांत मुद्रा में फरमाया कि **''महासती श्री लघुताश्रीजी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर जीवन सार्थक कर लिया है। साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. ने 22 वर्ष पूर्व फलौदी में दीक्षा लेकर साधु जीवन स्वीकार करने का भागीरथी पुरुषार्थ किया। सेवा, स्वाध्याय व दूसरों को सिखाने में आप हमेशा तत्पर रहे। साध्वी श्री संयतिश्रीजी म.सा. पावटा-जोधपुर में चातुर्मासार्थ विराजित हैं। साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. ने वहां पधारकर साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. को तृतीय मनोरथ रूप संथारा स्वीकार करवाया। संथारे के समय उनके 7 की तपस्या थी और कुछ ही घंटों में संथारा**

खींच गया। कठिनाइयां, बीमारियां आती हैं, पर लक्ष्य हमारा जब तक एक बना रहता है तो मंजिल की प्राप्ति होती है। उनके तन में व्याधि और मन में समाधि थी। कर्मों का उदय राग-द्वेष की प्रवृत्ति खेल खेलते रहते हैं। हम खिलाड़ी बनकर आए हैं। कठिनाइयों को द्रष्टाभाव से देखें। यह शरीर सदा रहने वाला नहीं है। चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें, मौत से नहीं बच पाएंगे। आयु का क्षण निश्चित है, मौत निश्चित है। जो आया है उसे जाना ही पड़ेगा। साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. ने तीनों मनोरथों को स्वीकार कर अपने जीवन को संवारा है।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार की कल्पना का नहीं, आज संथारे की कल्पना का दिन है। श्वांसों का पलभर भी ठिकाना नहीं है। मुनिश्री ने गीतिका के माध्यम से संथारे की भाव यात्रा कराई। साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में जितनी लघुता होती है, उतनी ही व्यक्ति ईश्वर के निकट पहुंचता है। लघुता से प्रभुता मिलती है।

साध्वी श्री सौम्याश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जब अहंकार नहीं होगा तभी हरि प्रकट होंगे। नायक से संघ का परिचय होता है। हम काम में लेवल को देखते हैं, काम को नहीं। किसी भी काम को छोटा नहीं मानना।

साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जन्म भी सत्य है, मृत्यु भी सत्य है। जो इस सत्य को समझ जाता है वह अपने जीवन में आने वाले परीषहों से, कष्टों से, विपदाओं से कभी नहीं घबराता है। जैसे रणभूमि में युद्ध करने को कूद पड़ता है वह यह नहीं सोचता कि सैनिक मेरे ऊपर आक्रमण करेगा तो मेरी मृत्यु हो जाएगी। ठीक वैसे ही संयम जीवन में जो साधक तृतीय मनोरथ को धारण करता है वह आने वाले कष्टों को धारण करता है। वह आने वाले कष्टों एवं विपदाओं से कभी नहीं घबराता है।

साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आज का दिन गुणानुवाद का दिन है। एक महान संयमी आत्मा का हम सभी गुणानुवाद कर रहे हैं। संयम का अर्थ दुर्गति से बचना और सद्गति में पहुंचना होता है। बिना संयम के मोक्ष नहीं मिलता। दु:खमय संसार से मुक्त होने के लिए एक मात्र रास्ता है मोक्षमार्ग। साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. ने वृद्धावस्था में अपना जीवन संवार लिया। चार-चार लोगस्स का ध्यान कर सम्पूर्ण सभा ने दिव्यात्मा को आध्यात्मिक श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर अनेक त्याग-पच्चक्खाण हुए। कुसुमजी मनीषजी डांगी-उदयपुर के मासखमण तप गुरुकृपा से पूर्ण हुआ। चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं शिविर आदि कार्यक्रम आयोजित हुए। **'चक्रवर्ती की विजय यात्रा शिविर'** में श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने मार्गदर्शन दिया। श्री साधुमार्गी प्रोफेशनल शिविर के शानदार आगाज पश्चात् आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

14 अगस्त। श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा प्रात:कालीन मंगल बेला में रविवारीय समता शाखा पश्चात् श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा शिविर का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगलपाठ के साथ हुआ। श्री साधुमार्गी प्रोफेशनल शिविर में समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि डॉ. सत्यनारायणजी शर्मा ने कराई।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए उच्च संयमी क्रियाधारी आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमारी आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है। अन्तर है तो सिर्फ कर्मों का। आत्मा ही परमात्मा है। उस परमज्योति को अपने पुरुषार्थ से प्रकट करना है। जो मेरा नहीं है उसे अपना मान रहा हूं तो विकार है। मैं कुछ भी कार्य करने में समर्थ हूं। 'युवा' वही है जो सब कुछ करने में**

समर्थ है। हमें सौभाग्य से जिनशासन मिला है। ईमानदारी, नैतिकता, प्रामाणिकता हमारे जीवन में सबसे पहले होने चाहिए। आज धर्म से ज्यादा हम धन को महत्त्व दे रहे हैं। धन को सिर पर नहीं चढ़ाएं, धन के हाथ में लगाम रहे। इससे गलत कार्य करने का साहस नहीं होगा। अनैतिक कार्य नहीं करेंगे तो हमारी साख बढ़ेगी। मेरे से भिन्न जो भी जुड़ा है, अपना समझ के पकड़ रखा है, वो विकार है। ये मुश्किल नहीं है। बस अपनी सोच बदलनी होगी।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पुण्य करने में कठिन है, पर उसका फल मीठा होता है और पाप करने में सरल है, पर उसका फल कड़वा होता है। हम वातावरण को दूषित कर रहे हैं या सुरभित, इस पर आत्मचिंतन करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **''गुरु के मिले चरण, कि मेरे रोम खिल गए'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

दिल्ली संघ ने आगामी वर्ष 2023 के चातुर्मास की भावभरी विनती प्रस्तुत की। कोटा, अहमदाबाद संघ की ओर से भी श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की गई। परम गुरुभक्त पारसमलजी पोरवाल-कोटा के निधन पर उनके पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक संदेश प्राप्त किया।

परम गुरुभक्त अभिनवजी जैन-दिल्ली का आईएएस परीक्षा में ऑल इण्डिया स्तर पर 14वें स्थान पर चयन होने पर आपने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। देश के अनेक स्थानों से श्रद्धालुओं ने गुरुचरणों में उपस्थिति दर्ज कराई। समता युवा संघ-अहमदाबाद ने विभिन्न शुभ संकल्प लिए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, शिविर आदि हुए।

15 अगस्त। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जय भारत देश महान'। भारत देश महान है, जिसने अनेक संस्कृतियों को अपने भीतर समाहित किया हुआ है। अतिथि देवो भवः, मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः हमारी संस्कृति है। हमें आजाद हुए 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। हमने आजादी पाई है, पर वहीं पर हमने अपनी संस्कृति को खोया है। जहां माता-पिता को भगवान मानते हैं, वहां उनकी आंखों में आंसू हैं। अतिथि-सत्कार की थोड़ी-सी भावना बची है। हमें आजादी का क्या लाभ मिला? मुगलों ने लूटा, अंग्रेजों ने लूटा, अब अफसरशाही लूट रही है। आज स्वतंत्रता की जगह स्वच्छंदता दिख रही है। अनुशासन की धज्जियां उड़ रही हैं। परिवार-समाज बिखर रहे हैं। परिवार की मर्यादा सुरक्षित नहीं है। समाज में रीति-नीति नहीं है। धन से तो सम्पन्न हैं किंतु धर्म के संस्कार मिटते जा रहे हैं। पहले किसी गरीब को देखकर उसकी सहायता को तैयार रहते थे, लेकिन आज कोई सहारा देने के लिए तैयार नहीं है। धर्म से मिलने वाली स्वतंत्रता हमें शांति और प्रसन्नता देने वाली होती है। हम मानसिक रूप से अभी भी स्वतंत्र नहीं हैं। बीकानेर में जब तक संथारा साधिका साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. का संथारा चले तब तक प्रतिदिन पांच नवकार मंत्र का जाप करें।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **असली शांति देने वाले चार तीर्थ हैं- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, ये हमें तिराने वाले हैं। भगवान महावीर ने तीर्थ की स्थापना कर उन्हें उपदेश दिया। वही परंपरा आज तक चल रही है। गणधरों पर संघ को चलाने की जिम्मेदारी होती है। नेतृत्व करने वालों को धार्मिक ज्ञान की जानकारी होनी चाहिए। भगवान की वाणी से छेड़छाड़ करने से बड़ा कोई**

पाप नहीं हो सकता। मनमाना अर्थ निकालना सर्वथा गलत है। गणधरों ने बिना किसी मिलावट के भगवान की वाणी को आगे बढ़ाया। हम भी इसी तरह से आगे बढ़ाएंगे तो कल्याण होगा।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संस्कारों के पतन के कारण आज की पीढ़ी भटक रही है। घर, परिवार, संघ, समाज में सुंदर वातावरण का निर्माण करना होगा। इसके लिए पारिवारिक प्रार्थना, सत्साहित्य के पठन आदि को महत्त्व देना होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता युवा संघ-रायपुर व चित्तौड़गढ़ के सदस्यों ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। राष्ट्रीय युवा शिविर के प्रतिभागियों को श्री राजनमुनिजी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया।

राम महोत्सव चातुर्मास में अपूर्व धर्मोल्लास का वातावरण बना हुआ है। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम के अन्तर्गत 100 से अधिक लोच हो चुके हैं। विभिन्न ज्ञानवर्द्धक शिविरों का क्रम जारी है। उदयपुर में धर्म-तप की बहार है। जन-जन में खुशियां अपार हैं।

आराध्यदेव के पावन दर्शनों का लाभ मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, चैन्नई, जोधपुर, छत्तीसगढ़, मेवाड़, मालवा, बैंगलोर, दक्षिण पूर्वांचल, ब्यावर, अजमेर, नाथद्वारा, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बीकानेर, बाड़मेर, बायतू, बालोतरा, सवाईमाधोपुर, अजमेर, बिजयनगर, नीमच, वापी, उज्जैन, रतलाम, इंदौर, भदेसर, बंबोरा, बड़ीसादड़ी, निम्बाहेड़ा, बेगूं, हैदराबाद, मुंबई, जावरा, धमतरी, रायपुर, बालोद, छत्तीसगढ़, जयपुर, हावड़ा, कोलकाता, सूरत आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने लिया।

तपस्या की झड़ी लगी-

श्री गगनमुनिजी म.सा. 30, श्री राजनमुनिजी म.सा. 11, श्री हेमगिरीजी म.सा. (जारी) 9, श्री इभ्यमुनिजी म.सा.8, साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा. 36, साध्वी श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. 35, साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. 31, साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. 31, साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा. 31, साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. 30, साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म.सा. 30, साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. 30, साध्वी खामेमिश्रीजी म.सा.26।

श्रावक-श्राविका वर्ग-

41 की तपस्या- मीराजी मेहता, **36 की तपस्या-** प्रेमबाई बोहरा, **33 की तपस्या-** दीपकजी मोगरा, अलकाजी मोगरा, **32 की तपस्या-** कुन्दनसिंहजी डूंगरपुरिया, शांताबाई बड़ाला, अंजनाजी पोखरना, **36 की तपस्या-** अतुलजी पगारिया, पुलकितजी गुलगुलिया, **31 की तपस्या-** कुसुमजी कोठारी, विजयाजी पोखरना, सुनीलजी मेहता, नलिनाजी लोढा, शशिजी ओस्तवाल, लक्ष्मीदेवी नन्दावत, लाड़देवी बाफना, कुसुमजी डांगी, विनोदजी कुदाल, चांदनीजी धींग, **30 की तपस्या-** विमलाजी सिंयाल, अभिषेकजी पितलिया, लक्ष्मीदेवी मेहता, मोहनीदेवी कोठारी, हंसाजी भाणावत, भंवरलालजी भाणावत, ज्ञानजी डांगी, सिम्पल दीदी, **15 की तपस्या-** सुनीताजी मेहता, राजश्रीजी चपलोत, कैलाशबाई भाणावत, साधनाजी खेमलीवाला, **11 की तपस्या-** कल्पनाजी पोखरना, दिनेशजी डूंगरपुरिया, **10 की तपस्या-** सुरेन्द्रजी चौधरी (जारी), दिनेशजी कंठालिया, **9 की तपस्या-** देवेन्द्रजी धींग, संगीताजी मोगरा, अनिताजी मेहता, साक्षीजी करणपुरिया, अंगुरबालाजी जैन, प्रकाशजी मारू, पतासीबाई लसोड़, अंजनाजी धींग, नवीनजी धींग, प्रीतिजी गोलछा, आजादजी रामपुरिया, साधनाजी जारोली, मंजूजी कोठारी, **8 की तपस्या-** हेमन्तजी ओसवाल, मंजूजी शाह, धरमचंदजी मेहता, प्रवेशजी सेन, पिंकीजी मेहता, अनिताजी मेहता।

-महेश नाहटा

क्र. स.	प्रत्याख्यान के नाम	आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम	
1.	आजीवन शीलव्रत	त्रिलोकचंदजी कंचनदेवी पामेचा-मनासा, प्रकाशचंदजी चंद्रादेवी मारू-उदयपुर, सुभाषजी, संतोषजी चौपड़ा-भिलाई, प्रसन्नजी गांधी-अमरावती, आशाजी बम-नगरी, महावीरजी, शोभाजी ओस्तवाल-धमतरी, धन्नालालजी कमलादेवी धर्मपाल-बरखेड़ा, अशाबाई दिलीपजी कोटड़िया-खैरागढ़, रामलालजी किरणदेवी बरड़िया-पांचू, रामलालजी किरणदेवी बरड़िया-पांचू, विजयकुमारजी-लक्ष्मीदेवी रांका-लालाबाजार, हिम्मतजी देवबाई मुरड़िया-कानोड़, तरुणजी मंजूजी पटवा-नीमच, मातीलालजी बांठिया-गंगाशहर, रत्नेशजी सहलोत, निर्मलजी आशाजी पगारिया-इंदौर, शंकरलालजी बंबकी, अभयजी सीमाजी माण्डावत-मंगलवाड़, सतीशजी सुषमाजी जैन-दिल्ली, उर्मिलाजी जैन-कोटा, कांतिदेवी जैन-कोटा, कांतिदेवी पन्नलालजी-कोटा	
2.	पर्युषण तक बेला-बेला तप	कविताजी मोदी	
3.	एकासन	200 एकासन	पद्मादेवी धोखा-बालाघाट
		100 एकासन	मानसीजी देवड़ा-रतलाम, रेशमजी धींग-उदयपुर, उजासजी कावड़िया, संजनाजी बरड़िया-पांचू, तनुदेवी डांगी-रतलाम, कांतिदेवी जैन
		2 माह एकासन	राखीजी कोटड़िया-संबलपुर, अंजनाजी नंदावत-भीलवाड़ा
		एकासन का मासखमण	रूपालीजी सिंघवी-हिंगणघाट, चंद्रकलाजी धींग-उदयपुर, श्वेताजी सुबोधजी पिरोदिया-रतलाम
		1 साल लगातार एकासन	ताराजी सिंघवी-जावरा
4.	बेआसना	100 बेआसना	विमलाजी बैद-दिल्ली
5.	एकांतर तप	एक माह का एकांतर तप	स्नेहलताजी कंठालिया
		दो साल एकांतर तप	रानीजी पगारिया-जावरा
6.	जमीकंद त्याग	किरणजी नाहटा-नगरी, परमेश्वरजी ताकड़िया, सुशीलाजी-देवगढ़, पिंकीजी बरड़िया-पांचू, अल्काजी बैद-फलौदी, मंजूबाई पितलिया, सरिताजी कुदाल-सूरत, विजयलक्ष्मीजी भूरा-अहमदाबाद	
		रात्रि में जमीकंद का त्याग	सुरभिजी धींग-अकोला
7.	बाजार की मिठाई का त्याग	मुकेशजी सहलोत, मोतीलालजी पिरोदिया-भंडारा, देवेंद्रजी प्रीतिजी-भंडारा	
8.	टी.वी. का त्याग	संपत्तबाई राणावत, अनिताजी ढेलड़िया, नीलमजी पोरवाल, चंद्रकलाजी बुच्चा, सुमनजी मेहता	
		आजीवन टी.वी. व मोबाइल का त्याग	सुरेंद्रजी चौधरी-मंदसौर
9.	बड़े स्नान का त्याग	आजीवन बड़े स्नान का त्याग	अशोकजी कटारिया
		वर्ष में 300 दिन बड़े स्नान का त्याग	सरलाजी सांखला-खैरागढ़, अनिताजी बाफना-लखनपुरी, कमलाजी बागमार-कपान
		वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग	सुमनजी मुरड़िया-कानोड़, संदेशजी टाटिया-अर्जुनी
		वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग	चंदनबालाजी सिसोदिया
10.	स्वाध्याय	3 लाख गाथा का स्वाध्याय	शोभनाजी सिपानी-रतलाम
		2 लाख गाथा का स्वाध्याय	पुष्पाजी सेठिया-बड़नगर, मगनीबाई सकलेचा-बीकानेर,
		1 लाख गाथा का स्वाध्याय	प्रभाजी बुच्चा, पूर्णिमाजी नाहटा-अर्जुन्दा, दीपिकाजी बाफना, बरजाजी बोहरा, संगीताजी पींचा- बैंगलोर, शोभाजी कोटड़िया-धमतरी, नीरजजी बोहरा-रतलाम, इन्द्राजी मारू-बड़ीसादड़ी, मीनलजी श्रीश्रीमाल-

			बालोद, कमलाबाई चौरड़िया-बालाघाट, दिलखुश धींग, सीमाजी चौपड़ा-रिंगनोद, मधुजी सुराना-रायपुर
		100 गाथा का स्वाध्याय	मंजूजी छिंगावत-पिपलियामंडी, मनोरमाजी बैद-रायपुर,
		200 गाथा का स्वाध्याय	किरणजी ढोलकिया-खरियार रोड प्रीतिजी जैन-रायपुर
11.	**पौरसी**	**120 पौरसी**	अभिलाषाजी-बेगूं
		100 पौरसी	किरणजी नाहर, धन्नाबाई मेहता, मधुजी अबानी-चित्तौड़गढ़
		50 पौरसी	चेतनाजी बांठिया, मधुबालाजी करणपुरिया
		आजीवन पक्की पौरसी	आशाजी सरूपरिया, कमलाबाई जैन
12.	**नवकारसी**	**आजीवन पक्की नवकारसी**	उमंगजी संकलेचा-दुर्ग, ऊषाजी बैद-जोधपुर, रेशमाजी बागमार, पिंकीजी बागमार-अहमदाबाद, नीलमजी बुच्चा-बीकानेर, सुशीलाजी बुच्चा-बीकानेर
		900 पक्की नवकारसी	कविताजी बांठिया-महिदपुर, पूर्वाजी बांठिया
		500 पक्की नवकारसी	रीनाजी मुरड़िया-मंदसौर
		300 पक्की नवकारसी	गुलाबचंदजी रायसोनी-सेमरा
		200 पक्की नवकारसी	चंदरजी-धमतरी
		120 दिन पक्की नवकारसी	सुंदरलालजी साहु-धमतरी
		100 पक्की नवकारसी	काजलजी नाहर, रजनीजी नाहर, विमलजी भूरा-देशनोक, अनोखाजी बोहरा-राजसमंद, स्नेहलताजी भंडारी-कंजार्ड़ा, संगीताजी सोनी-उज्जैन, कमलेशजी जैन-बीकानेर, अनिलजी जैन-कोटा, प्रियंकाजी टाटिया-अर्जुनी, गुलाबदेवी बच्छावत-आसाम, सरोजजी जैन-रतलाम, लीलाजी बोथरा-हैदराबाद, बसंताजी लुणावत-बैंगलोर, प्रियंकाजी मुणोत-जावद, आशीषजी बंब-नगरी, अंजलिजी नलवाया-जावद, धर्मेंद्रजी झगड़ावत-डबोक
13.	**तेला**	**वर्ष में 6 तेला**	उदयजी भंसाली-आवरीमाता
		9 तेला	धन्नीदेवी गोलछा-बायतू
14.	**द्रव्य**	**13 द्रव्य**	अभयजी कांठेड़-जावरा
		30 द्रव्य	मैनाजी बैद-जोधपुर
15.	**आजीवन सोना-चांदी का त्याग**	सुरेंद्रजी चौधरी-मंदसौर	
16.	**मासखमण तप**	चांदनीजी नवीनजी धींग, विनोदजी कुदाल-भींडर/सूरत	
17.	**1 हजार घंटा मौन**	सोहनबाई जैन-नीमच	
18.	**होटल का त्याग**	उजासजी कावड़िया, कुसुमजी धींग-नीमच	
19.	**पौषध**	**प्रतिपूर्ण पौषध**	रानीजी पगारिया-जावरा
20.	**रात्रिभोजन त्याग**	विजयलक्ष्मीजी भूरा-अहमदाबाद, सुंदरलालजी मिन्नी-भीनासर, बजरंगजी रंजीताजी-देशनोक, हेमलताजी जैन, सुमनजी बोथरा-गंगाशहर	
21.	**उपवास**	**24 उपवास**	विजयलक्ष्मीजी भूरा-अहमदाबाद
22.	**वर्षीतप**	रानीजी संचेती-रायपुर	

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दो दिवसीय प्रवास सम्पन्न

18 जुलाई 2022। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के संयम साधना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव **'महत्तम महोत्सव'** के रूप में मनाया जा रहा है। इस महोत्सव की प्रभावना करने एवं संघ प्रवृत्तियों को संघ के प्रत्येक सदस्य तक पहुँचाने के उद्देश्य केन्द्रीय पदाधिकारियों का 18 एवं 19 जुलाई 2022 को दो दिवसीय प्रवास मेवाड़ अंचल के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ। प्रवासी दल में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय के साथ राष्ट्रीय महामंत्रीजी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी, संघ आबद्धता संयोजकजी, मेवाड़ अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी एवं मंत्रीजी, समता संस्कार शिविर संयोजकजी, व्रत विवेक संयोजकजी सहित स्थानीय संघों के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। मेवाड़ अंचल के भदेसर, निकुंभ, बड़ीसादड़ी, बिनोता, निम्बाहेड़ा में प्रवास कार्यक्रम हुआ।

प्रवास टीम ने भदेसर में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री पावनश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3, निकुम्भ में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 बड़ीसादड़ी में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं बिनोता में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। मंगलपाठ के पश्चात् बैठक का आयोजन किया गया।

भदेसर, निकुंभ, बड़ीसादड़ी एवं बिनोता आदि संघों के अध्यक्षजी-मंत्रीजी ने प्रवासी टीम का भावभरा स्वागत कर स्थानीय स्तर पर संचालित धार्मिक गतिविधियों की जानकारी दी। आपसी परिचय के पश्चात् राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने संघ जुड़ाव संबंधी विचार आमंत्रित करते हुए संघ प्रतिनिधियों से संघ उत्थान में किसी प्रकार की समस्या हो तो सुझाव आमंत्रित किए। आपने ग्लोबल कार्ड संबंधी जानकारी देते हुए इस कार्य हेतु प्रभारी नियुक्त किए।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी ने समता सर्वमंगल, आचार्य श्री श्रीलाल उच्च शिक्षा योजना एवं इदं न मम् आदि प्रवृत्तियों की जानकारी देते हुए प्रवास क्षेत्रों के संघों में इदं न मम् प्रवृत्ति हेतु प्रभारी नियुक्त किए।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने आचार्यश्री के संयमी जीवन के गुणगान के साथ **'महत्तम महोत्सव'** की विस्तृत जानकारी देते हुए संघ द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों की जानकारी दी। आपने प्रवृत्ति हेतु प्रभारी नियुक्त किए एवं सभी को संघ समर्पण भाव से संघ सेवा करने की प्रेरणा दी।

समता संस्कार शिविर संयोजकजी ने शिविर संबंधी जानकारी देते हुए आगामी शिविर आवासीय शिविर के रूप में आयोजित करने हेतु निवेदन किया।

बड़ीसादड़ी के आयंबिल भवन में संचालित समता संस्कार पाठशाला का निरीक्षण प्रवासी दल द्वारा किया गया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी ने विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर किए, जिनके संतुष्टिप्रद उत्तर प्राप्त हुए। शिविर संयोजकजी ने पाठ्यक्रम एवं अध्यापिकाओं की जानकारी ली। यहां से प्रवासी दल रात्रि विश्राम के लिए निम्बाहेड़ा पहुंचा, जहां वरिष्ठ सुश्रावक कानमलजी अब्बाणी के निवास पर पहुंचकर उनकी कुशलक्षेम जानी।

19 जुलाई 2022। प्रात: निम्बाहेड़ा में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन एवं प्रार्थना के पश्चात् संघ बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें प्रवासी दल के साथ वीर परिवारों के सदस्य

भी उपस्थित थे। स्थानीय संघ मंत्रीजी ने प्रवासी टीम का स्वागत करते हुए यहां संचालित धार्मिक प्रवृत्तियों एवं समता संस्कार पाठशाला की विस्तृत जानकारी दी। बैठक में प्रकाशजी चपलोत द्वारा महाप्रभावक सदस्य बनने हेतु स्वीकृति देने पर सभी ने हर्ष-हर्ष की ध्वनि से उनका स्वागत किया। बैठक सम्पन्नता के बाद सभी ने प्रवचन का लाभ लिया और भोजन पश्चात् सभी प्रवास टीम सदस्यों ने अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

प्रवास के दौरान निम्न प्रभारी नियुक्त किए गए-

प्रवृत्ति का नाम		**भदेसर**	**बिनोता**
इदं न मम्		पारसजी मोदी	उम्मेदजी डोशी
ग्लोबल कार्ड		हर्षितजी जैन	प्रकाशजी मुणोत
समता संस्कार पाठशाला		विजयजी सरूपरिया हर्षितजी दशोरिया	लालचंदजी लोढ़ा उम्मेदजी डोशी
	निकुंभ	**बड़ीसादड़ी**	**निम्बाहेड़ा**
इदं न मम्	कमलेशजी धींग मनोजजी सहलोत	राजमलजी भण्डारी मीनाजी मेहता	रोशनजी खैरोदिया
ग्लोबल कार्ड	चिरागजी धींग पियुषजी सहलोत	नरेन्द्रजी रांका	अभिनवजी मारू सुनीलजी डूंगरवाल
समता संस्कार पाठशाला	संजयजी रांका, विशालजी मारू, चेतन जी मेहता		

-अंचल राष्ट्रीय मंत्री

संघ उन्नयन हेतु चार दिवसीय संघ प्रवास सम्पन्न

बीकानेर-मारवाड़ अंचल। दिनांक 14 अगस्त 2022 को रात्रि 8 बजे पाली से बीकानेर-मारवाड़ अंचल का 4 दिवसीय प्रवास प्रारंभ हुआ। प्रवास के प्रथम दिवस पाली, द्वितीय दिवस जोधपुर तथा तृतीय दिवस बालेसर, शेरगढ़, सोमेसर, फलौदी, चाडी तथा चतुर्थ दिवस नागौर क्षेत्र में केन्द्रीय प्रवास टीम ने संघ बैठकें लेकर संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं आचार्यदेव के आयामों की जानकारी साझा की। प्रवास टीम में राष्ट्रीय अध्यक्षजी, महामंत्रीजी एवं कोषाध्यक्षजी के साथ अंचल उपाध्यक्षजी, मंत्रीजी तथा निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी साथ रहे, साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में प्रवास बैठक के दौरान उस क्षेत्र के कार्यसमिति एवं स्थानीय सदस्यों के साथ-साथ महिला समिति एवं समता युवा संघ के सदस्यों ने भी अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई।

प्रवास के दौरान पाली, जोधपुर व शेरगढ़ में विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ। प्रवास के दौरान आचार्य भगवन् के आयामों एवं संघ प्रवृत्तियों- संघ आबद्धता, समता संस्कार पाठशाला, इदं न मम् व महत्तम महोत्सव सहित अन्य अनेक प्रवृत्तियों की प्रभावना करते हुए संघ पदाधिकारियों द्वारा विशेष प्रेरणा दी गई। भागचंदजी सिंगी, जोधपुर ने महाप्रभावक सदस्यता ग्रहण करने हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। 51 सदस्यों ने इदं न मम् के लिए घोषणाएं की। इसके साथ ही शांतिलालजी सिंगी-पाली, सुरेशजी सांखला-जोधपुर ने देशभर में श्रीसंघ के अंतर्गत निर्मित होने वाले समता भवनों, देवेन्द्रजी पुखराजजी बैद-फलौदी ने बीकानेर-मारवाड़ अंचल में बनने वाले समता भवनों एवं महावीरजी आयुषजी सांखला (जैन)-बालेसर ने भविष्य में निर्मित होने वाले सभी समता भवनों के

निर्माण हेतु 1 प्रतिशत सहयोग प्रदान करने की घोषणा की।

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत संघ सशक्तिकरण में श्री साधुमार्गी जैन संघ-फलौदी के रूप में एक नये संघ का गठन हुआ एवं फलौदी संघ के समस्त सदस्यों ने इदं न मम् से जुड़ने के लिए स्वीकृति प्रदान कर इस संघ को इदं न मम् संघ बनने का गौरव प्रदान किया। प्रवास के दौरान 4 संघों ने संघ आबद्धता ग्रहण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किए। प्रवास टीम ने स्व. मोहनजी नाहटा-जोधपुर एवं श्री पुखराजजी बैद-फलौदी के निधन पर उनके पारिवारिकजनों से मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त की।

-अंचल राष्ट्रीय मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड
(जून-2022, परीक्षा परिणाम)

प्रारम्भिक जैन सिद्धान्त भूषण

रोल नं. (भूषण 1/2/3/4-प्राप्तांक) 551 (1-78, 2-84,3-78), 687 (2-66,3-4), 712 (3-57,4-23), 732 (1-67, 4-32), 733 (1-100, 2-96, 3-94,4-93) 735 (1-87, 2-91, 3-74, 4-68) 736 (2-55,3-60) 741 (1-56, 2-79, 3-60, 4-41) 742 (3-76), 745 (1-100, 2-94, 3-67, 4-84) 747 (2-94, 3-59), 748 (1-95, 2-75, 3-72, 4-69), 749 (2-84)

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत कोविद

रोल नं. (कोविद 1/2/3/4-प्राप्तांक) 524 (1-47, 2-33), 538 (2-43), 584 (2-58), 600 (2-68, 4-56), 631 (3-54, 4-67), 686 (2-37, 4-59), 692(2-79)

प्रारम्भिक जैन सिद्धान्त विभाकर

रोल नं. (विभाकर 1/2/3/4-प्राप्तांक) 494 (1-45), 523 (4-64), 529 (2-58, 3-66), 590 (1-97, 2-93, 3-75, 4-78)

प्रारम्भिक जैन सिद्धान्त मनीषी

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4-प्राप्तांक)169(3-64), 494 (3-44, 4-43), 523(1-93)

प्रारम्भिक जैन सिद्धान्त विशारद

रोल नं. (विशारद 1/2/3/4-प्राप्तांक) 169 (1-66), 478 (1-36, 2-41, 3-32), 491 (2-58, 3-28, 4-57)

वैकल्पिक जैन आगम कंठस्थ

रोल नं. (1/2/3/4/5-प्राप्तांक) भूषण 529 (32), भूषण 729 (82), भूषण 734 (43), भूषण 747 (48), कोविद 147 (92), कोविद 590 (98), विभाकर 523 (96)

वैकल्पिक जैन स्तोक

रोल नं. (1/2/3/4/5-प्राप्तांक) भूषण 178- (66), 738 (86), 740 (96), कोविद 631 (56)

वैकल्पिक जैन संस्कृत प्राकृत

रोल नं. (1/2/3/4/5-प्राप्तांक) भूषण 631 (67), कोविद 588 (98), कोविद 146 (63)

वैकल्पिक जैन राष्ट्रभाषा

कोविद 146 (66)

रोल नम्बर व अन्य किसी प्रकार की सहायता हेतु 7231933008 पर सम्पर्क करे।
संयोजिका-धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आर्य संस्कृति के उपासकों को तो कभी भी अंडे का सेवन नहीं करना चाहिए। सामान्य अवस्था की तो बात दूर रही भयानक रोग आ जाए, मारणान्तिक कष्ट की स्थिति हो, भले ही डॉक्टर का परामर्श हो परन्तु मांसाहार का सेवन नहीं करना चाहिए।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

विविध समाचार

मेवाड़ अंचल

बांसवाड़ा। शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 19 से 23 जुलाई तक 5 दिवसीय शिविर का आयोजन समता भवन में हुआ, जिसमें 34 महिलाओं ने भाग लिया। साध्वी श्री गुणसुन्दरीजी म.सा. ने पंचशील की विस्तृत विवेचना की। साध्वी श्री गुंजनश्रीजी म.सा. ने अपने हाथों एवं शरीर के अंगों से दस आश्चर्यों के बारे में बताया। साध्वी श्री समर्पिताश्रीजी म.सा. ने '84 लाख जीवयोनि किस प्रकार बनती है' की विस्तृत विवेचना की। साध्वी श्री ऋतुश्रीजी म.सा. ने सूझता व असूझता के बारे में बताया। प्रतिदिन धार्मिक खेल खेलाए गए एवं प्रभावना बांटी गई। शिविर के अंतिम दिवस परीक्षा का आयोजन हुआ, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पारितोषिक दिया गया।

–अल्का डूंगरवाल

कानोड़। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास समता साधना भवन में अपूर्व धर्माराधना के साथ गतिमान है। चातुर्मासिक स्थापना दिवस के अवसर पर लगभग 15 तेले सम्पन्न हुए। 13 जुलाई को महत्तम महोत्सव का भव्य शुभारंभ श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में किया गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. ने आचार्य भगवन् के अवदानों व ज्ञानार्जन के लिए प्रदान किए गए विभिन्न आयामों के बारे में फरमाते हुए अधिकाधिक धर्माराधना की प्रेरणा दी।

चातुर्मास प्रारंभ से ही एकासन, आयंबिल व उपवास की लड़ियां चल रही है। श्राविकाओं के लिए पंचदिवसीय कक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें 80 महिलाओं ने भाग लिया। साध्वीवृंद की प्रेरणा से समता शाखा में अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रात: प्रार्थना में साध्वीवर्याजी द्वारा प्रतिदिन जैन सिद्धांत बत्तीसी के एक-एक बिन्दु पर विस्तृत चर्चा कर युवाओं को लाभांवित कर रहे हैं। **–तखतमल लसोड़**

प्रतापगढ़। 13 जुलाई को समता भवन में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में महत्तम महोत्सव पोस्टर का विमोचन कर इसकी विषयावली पर प्रकाश डाला गया। चातुर्मासिक स्थापना दिवस के अवसर पर 8 तेला तप की आराधना हुई। प्रतिदिन एकासना आयम्बिल की लड़ी, महिलाओं में नवकार महामंत्र का जाप, एवं समता भवन में ज्ञान-ध्यान, शास्त्र वाचन की आराधना आदि चल रहे हैं। **–किरण मालू**

बीकानेर मारवाड़ अंचल

बीकानेर, 21 जुलाई। परमागम रहस्यज्ञाता अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. की कृपा से बीकानेर संघ को गौरवान्वित करने का प्रसंग उपस्थित हुआ। साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर में गतिमान ''राम शरणोत्सव'' चातुर्मास 2022 के अन्तर्गत आचार्य प्रवर की विशेष आज्ञा से (आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के शासन में 358वीं दीक्षा) के रूप में मुमुक्षु श्रीमती किरणदेवी झाबक

धर्मपत्नी स्व. श्री नवरतनजी झाबक, बीकानेर निवासी की भव्य भागवती दीक्षा 21 जुलाई को शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सम्पन्न हुई।

दीक्षा प्रदाता शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. ने दीक्षा विधि प्रारंभ करने से पूर्व सभी से दीक्षा हेतु पृच्छा की जिस पर उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं एवं मुमुक्षु बहिन के परिजनों ने दीक्षा हेतु दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना की।

जब मुमुक्षु बहिन से दीक्षा हेतु अनुज्ञा चाही तो मुमुक्षु बहिन ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए पहले तिविहार संथारा के प्रत्याख्यान करवाने का निवेदन किया। शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. मुमुक्षु बहिन को पूर्ण सजग अवस्था में तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाने के पश्चात् तीन बार करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण पापों का त्याग करवाकर तीन करण तीन योग से नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. के रूप में घोषणा होते ही सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गूंज उठी।

केशलुंचन का कार्य पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकंवरजी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाजी म.सा. के करकमलों से सम्पन्न हुआ। साध्वीवृन्द ने बधाई गीत प्रस्तुत किया। **-राजेन्द्र गोलछा**

सेठिया कोटड़ी में 31 जुलाई को 500 आराधकों ने दयाव्रत, दयाभाव, एकासन, 7-7 सामायिक के प्रत्याख्यान ग्रहण कर तप-त्याग की झड़ी लगा दी। सभी आयु वर्ग के व्यक्ति यथाशक्ति तप-त्याग में साक्षी बने। प्रवचन सभा में श्री हिमांशुमुनिजी म.सा. ने गुरु महिमा पर भाव प्रकट किए।

श्री संजयमुनिजी म.सा. ने 'गुरुभक्ति से ही मिलेगी मुक्ति' विषय पर मार्मिक प्रवचन में फरमाया कि गुरु की महिमा का पूर्ण बखान तो कोई शास्त्र या ग्रंथ में भी समाहित नहीं कर सकता। गुरु स्वयं तो इस संसार सागर से तिरते ही हैं साथ ही अपने शिष्यों को भी उसी राह पर अग्रसर करते हैं।

साध्वी श्री निशांतश्रीजी म.सा. ने आचार्य श्री रामेश के कठोर संयम पालन, उत्कृष्ट अनुशासन, कथनी और करनी की एकरूपता आदि दिव्य गुणों पर प्रकाश डाला। बीकानेर-मारवाड़ अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी ने आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा दिवस को पूरे देश में **'महत्तम महोत्सव'** के रूप में मनाए जाने पर प्रकाश डाला। स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने आभार प्रकट करते हुए 14 अगस्त को मुमक्षु शोभायात्रा व अभिनंदन समारोह की जानकारी दी।

पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में साध्वी मंडल नवदीक्षिता साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. की सेवा में अप्रमत्त भावों से रत है। सूर्योदय से निरंतर दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। संथारा में रत साध्वीश्रीजी को आगम एवं विभिन्न स्तवनों एवं आलोचना आदि का स्वाध्याय करवाया जा रहा है। नवकार महामंत्र का जाप एवं भजनों आदि से माहौल निरंतर गुंजित हो रहा हैं। स्थानीय संघ की सभी शाखाएं निरंतर सेवा कार्यों मे संलग्न हैं।

प्रवचन सभा में सुश्री निधिजी सखलेचा ने 13 की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। राम शरणोत्सव चातुर्मास में अभी तक 68 से अधिक तेले हो चुके हैं। 15 उपवास 2 एवं 8 से 14 की तपस्या 7 श्रावक-श्राविकाओं ने की। आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान 24 जोड़ों ने एवं 4 माह शीलव्रत के प्रत्याख्यान 68 जोड़ों ने ग्रहण किए। **-हेमन्त कुमार सिंगी**

गंगाशहर-भीनासर। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की असीम कृपा से हमारे क्षेत्र में इस बार पांच स्थानों पर चातुर्मास हो रहे हैं।

चातुर्मासिक प्रवेश के क्रम में श्री शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का रामेश रत्नम् में 2 जुलाई को, पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभाश्रीजी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का बोथरा कोटड़ी में 3 जुलाई को, शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा. अदि ठाणा-3 का महिला भवन, शिवाबस्ती में 7 जुलाई को, शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-4 का राठी परिसर में 8 जुलाई को एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 9 जुलाई को मंगल प्रवेश हुआ। चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रार्थना, प्रवचन आदि निर्बाध चल रहे हैं।

चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर रामेश रत्नम्, शिवा बस्ती एवं जवाहर विद्यापीठ में महत्तम महोत्सव का विधिवत् आगाज हुआ। सर्वप्रथम बैनर विमोचन, नवकार महामंत्र जाप, रामेश चालीसा, प्रस्तावना, भजन आदि का सामूहिक संगान हुआ।

इस अवसर पर शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. ने प्रवचन सभा में चातुर्मास एवं गुरु के महत्त्व की विशेष व्याख्या फरमाई। महिला भवन में शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें पुण्यवानी से ऐसे गुरु मिले हैं, जिनकी महिमा की चर्चा अन्य सम्प्रदायों में भी होती है। यहां आशातीत उपस्थिति के साथ एकासन की लड़ी चल रही है। दोपहर में श्री जयेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में बहिनों की कक्षा चल रही है।

श्री जवाहर विद्यापीठ में साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. प्रवचन फरमाते हैं। चातुर्मासिक स्थापना दिवस के अवसर पर राठी भवन में साध्वी श्री लब्धिश्रीजी म.सा. एवं बोथरा कोटड़ी में शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के पधारने से धर्मसभा में विशिष्ट श्रद्धा-भक्ति छा गई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि इन्द्रियों का पोषण न कर उन पर विजय प्राप्त करें। साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि अपनी शक्ति को जगाने का प्रयास करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने क्षमावंत बनने और समता की साधना सामायिक से शुरू करने की विशेष प्रेरणा दी।

साध्वी श्री लब्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा की पूर्णता गुरु ही बतलाते हैं।

प्रार्थना के पश्चात् साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा. आगम वाचनी एवं प्रवचन पश्चात् साध्वी श्री सुचारूश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में बहुमण्डल की ए टू जेड विषय पर कक्षा चल रही है। म.सा. की प्रेरणा से प्रत्येक रविवार को दयाभाव एवं 5-5 सामायिक का कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है। प्रवचन पश्चात् प्रतियोगिता करवाई जाती है, जिसके विजेताओं को महिला मण्डल द्वारा उत्साहवर्द्धन किया जाता है।

साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. पुच्छिंसु णं का अर्थ सहित सुन्दर विवेचन का रसपान कराया एवं सुनन्दा चरित्र के माध्यम से जिनवाणी का ओजस्वी वर्षण कर रहे हैं।

25 से 29 जुलाई तक महिला मण्डल का ''खुशियों का क्या कहना, जब आ जाए सहना' विषय पर शिविर लगाया गया, जिसमें 225 बहिनों ने उत्साह से भाग लिया।

पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभाजी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में 31 जुलाई को बोथरा कोटड़ी में 'अहोव्यनम्' एक दिवसीय शिविर एवं 7 से 9 अगस्त तक त्रिदिवसीय 'यूटर्न' शिविर में 125 बहिनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अंत में एकासन, आयंबिल, उपवास आदि के

प्रत्याख्यान के साथ 18 भाई-बहिनों ने तेले तप की आराधना की। तपस्या के क्रम में जयश्रीजी धारीवाल-7 उपवास, सुश्री छायाजी मिन्नी-8 उपवास, सुश्री ज्योतिजी सुराना-9, श्री प्रकाशजी राखेचा-10, श्री धर्मेन्द्रजी सिपानी-10 आदि के पारणे हुए। तारादेवी सेठिया के 13 एवं देवेन्द्रजी सोनावत के 30 की तपस्या गतिमान हैं। बड़ी तपस्याओं में रिखबचंदजी सोनावत के 31, अरिहंत डागा के 15, अंजूदेवी सेठिया 15, ललितजी बच्छावत 9, सुश्री खुशबूजी बोथरा 8, मयूरीजी सुराना 9 की तपस्या के पारणे सानन्द सम्पन्न हुए। राठी परिसर में शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा. के सान्निध्य में जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा चल रही है। समय-समय पर परीक्षा ली जाती है।

गुणानुवाद सभा- साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. के देवलोकगमन का समाचार मिलने से संघ में मायूसी छा गई। प्रवचन सभा में आपके सरल एवं अप्रमत्त जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया गया। शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. ने अपने सुखद अनुभव फरमाए। वीर पुत्री विद्यादेवी सुराना ने आचार्य श्री रामेश शासन में उत्कृष्ट सेवा भावना को सर्वोपरि बताया। धर्मसभा में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि दी गई। **-विमल कुमार सेठिया**

जयपुर ब्यावर अंचल

अजमेर। शासन दीपक श्री मुदितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में 'महत्तम महोत्सव' के उपलक्ष्य में मणिपुंज नानेश भवन में 26 जुलाई से 2 घण्टे का सप्तदिवसीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 70 महिलाओं ने भाग लिया। श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने 'कैसे बनें सर्वश्रेष्ठ' विषय पर अपने विशेष उद्बोधन में फरमाया कि छः खण्ड का आधिपत्य प्राप्त करके ऋषभ कूट पर अपना नाम लिखने के लिए पहले लिखे नाम को मिटाना होता है, लेकिन तीर्थंकर, अरिहंत प्रभु का पद ऐसा है, जहां ना किसी की अवहेलना है ना किसी को मिटाकर अपनी सत्ता स्थापित करनी है। श्रेष्ठ ही बनना है तो 'मैं तीर्थंकर बनूं' ऐसी भावना भाएं।

शिविर के अंतिम दिन बहिनों ने अपने उद्गार में कहा कि ऐसा अनूठा शिविर और ज्ञान कहीं नहीं मिला। स्थानीय संघ की ओर से सभी प्रतिभागियों को पारितोषिक दिया गया। **-नौरतबाई सिंगी**

ब्यावर। साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. के महाप्रयाण पर 26 जुलाई को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने भजन 'गिनती के यह श्वास मिले हैं, जीवन है दिन चार' के साथ फरमाया कि साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. दीक्षा लेकर आत्मा से परमात्मा व नर से नारायण बन गईं। महासतीजी ने इस जीवन का सदुपयोग कर इसे साधना-आराधना में लगाकर इहलोक व परलोक दोनों को सुधार लिया।

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने अपने कानों से हरिकथा का श्रवण नहीं किया उसके कान सांप के बिल के समान हैं। अपनी जिह्वा से गुणगान नहीं किया तो वह जिह्वा मेंढक के समान है। हमें अपनी जिन्दगानी साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. जैसी बनानी है।

साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा ने अपनी जिंदगी सौरभ से सब कुछ महका दिया। उन्होंने साधना-आराधना से मृत्यु को सार्थक कर दिया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वीरमाता प्रेमबाई ललवाणी ने 15 की तपस्या पूर्ण की।

-नोरतमल बाबेल

सवाईमाधोपुर। शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के चातुर्मास में धर्माराधना का ठाठ लगा हुआ है। आपश्रीजी के सान्निध्य में जिनवाणी

के रसपान का अवसर प्राप्त कर हर कोई स्वयं को धन्य महसूस कर रहा है। चातुर्मासिक स्थापना दिवस के अवसर पर लगभग 6 तेले सम्पन्न हुए। 18 वर्ष तक के बच्चों के दस दिवसीय शिविर में बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी, दशवैकालिक आदि का ज्ञानार्जन किया। शिविर में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी करवाई गई। ऊषाजी बजाज, अनिताजी जैन, रविजी जैन, पलकजी जैन, पूनमजी जैन आदि ने अध्यापन सेवाएं दी। शिविरार्थियों ने अपने शिविर अनुभव सभी के समक्ष रखे।

श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. बच्चों को प्रतिदिन संस्कार उत्थान हेतु उद्बोधन प्रदान कर रहे हैं। इससे प्रेरित होकर बच्चों ने मोबाइल व टी.वी. का त्याग, उपवास, बेला, तेला आदि तप किए। शिविर समापन पर सभी शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

-रोशन जैन

छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल

धमतरी। मुमुक्षु बहिनों का शानदार अभिनंदन- मुमुक्षु बहिनों सुश्री सिद्धिजी नाहर एवं सुश्री यशस्वीजी ढ़ेलड़िया का भव्य वरघोड़ा नाहर निवास स्थान से प्रारंभ होकर अनेक मोहल्ले से होते हुए धनकेशरी मंगल भवन पहुंची। दोनों मुमुक्षु बहिनें बग्गी में माता-पिता सहित विराजमान थी। सम्पूर्ण मार्ग में दोनों ओर हर एक सम्प्रदाय के लोक संयम अनुमोदना के लिए उमड़ रहे थे।

दोपहर में 2 बजे मुमुक्षु बहिनों का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंच पर अतिथि के रूप में वीर परिजनों सहित स्थानीय एवं आगत प्रमुखजन शोभायमान थे। सर्वप्रथम पूजा विचक्षण महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। समता बहू मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सुधर्म महिला मंडल, समता महिला मंडल, जैन जागृति महिला मंडल ने सभी का स्वागत किया। नाहर परिवार द्वारा वीर बाला सुश्री सिद्धि नाहर के जन्म से दीक्षा लेने तक का जीवन चित्रण सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया। अतिथिगणों ने अपने उद्गार में संयमी जीवन की महत्ता पर प्रकाश डाला।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संघ, सकल जैन श्रीसंघ, जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, सुधर्म परिवार, दिगंबर पंचायत, नाहर महासभा, छत्तीसगढ़ जैन संघ ने मुमुक्षु बहिनों का शानदार अभिनंदन किया।

अपने अभिनंदन के प्रत्युत्तर में द्वय मुमुक्षु बहिनों ने कहा कि यह अभिनंदन सभी चारित्रात्माओं का है, संयम मार्ग का है, जिसे मैं आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के श्रीचरणों में अर्पित करती हैं। कार्यक्रम के अन्तर्गत बीरा मायरा आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

-दीपक बाफना

रायपुर। शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का चातुर्मास धर्म-ध्यान, त्याग-तप के साथ गतिमान है। धर्मसभा को संबोधित करते हुए शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को शिक्षा दी कि संसार की उलझनों में मत उलझो। अज्ञान व नासमझ होने के कारण अपने किए पाप कर्मों के लिए पागलखाना, वृद्धाश्रम जैसी जगहों पर जीवन बिताना पड़ रहा है। संसार में जन्म लेने वाले भगवान महावीर सहित अनेक महापुरुषों ने सत्य, अहिंसा आदि पुण्य कार्य करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

रविवारीय समता शाखा का आयोजन उपस्थित संतवृंद के सान्निध्य में हुआ। महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत एकासन, बेला, तेला, सात, आठ एवं नींवी आदि तप श्रावक-श्राविकाओं में चल रहे हैं। विकासजी धाड़ीवाल ने 14 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। धार्मिक कक्षाएं निरंतर जारी हैं। जैन संस्कार पाठशाला के बच्चों ने प्रभु एवं गुरुभक्ति भजन सुनाए।

-अशोक सुराणा

कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश अंचल

बैंगलोर। शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा -4 के पावन सान्निध्य में समता भवन, विजयनगर में धर्माराधना एवं त्याग-तपस्या का ठाठ लगा हुआ है। साध्वीवर्याओं के मार्गदर्शन में प्रतिदिन प्रात: 1 घण्टे के विशेष धार्मिक शिविर में भाई-बहिनों की उपस्थिति रहती है। प्रवचन की शृंखला में साध्वीवृंद दशवैकालिक सूत्र का स्वाध्याय करवा रहे हैं। प्रवचन पश्चात् एवं दोपहर में धार्मिक कक्षाओं का आयोजन हो रहा है। कक्षा में सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी, 50 थोकड़ा न्यू, कर्मसिद्धांत न्यू, श्रुत आरोहक, जैन संस्कार पाठ्यक्रम आदि का ज्ञानार्जन चल रहा है। प्रतिदिन सायंकालीन प्रतिक्रमण, ज्ञानचर्चा, संवर, पौषध के साथ-साथ प्रत्येक रविवार को ज्ञानार्जन कार्यशाला में श्रद्धालु अपने ज्ञान में अभिवृद्धि कर रहे हैं। रविवार को बच्चों के लिए समता संस्कार पाठशाला का आयोजन हो रहा है, जिसमें 100 से अधिक बालक-बालिकाएं भाग ले रहे हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से बियासन, एकासन, आयंबिल, उपवास, तेला आदि की लड़ी चल रही है। तपक्रम में ममताजी ओस्तवाल, नेहाजी कांकरिया एवं प्रमिलाजी बम्बकी ने अठाई, मनीषाजी कांकरिया 7 उपवास की तपस्या हो चुकी है। कई श्रावक-श्राविकाओं के तप-त्याग प्रत्याख्यान गतिमान है। **-श्री केसरीचंद सेठिया**

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 अक्टूबर 2022** का धार्मिक अंक **'त्याग की महिमा'** विषय पर आधारित रहेगा। इसके अतिरिक्त आप निम्न विषयों अपनी रचनाएं भेज सकते हैं- **वीर स्तुति (पुच्छिंसु णं), कृषि प्रधान संस्कृति में ऋषि प्रधान सभ्यता, हुक्मसंघ यात्रा : 200 वर्ष : 200 शब्दों में, मानसिक प्रदूषण की भयावहता'**। रचनाओं की शब्द सीमा 500-1000 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

-श्रमणोपासक टीम

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की कार्यसमिति बैठक उदयपुर में सम्पन्न

उदयपुर, 16-17 जुलाई 2022। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी के सभापतित्व में सत्र 2021-23 की तृतीय कार्यसमिति बैठक का आयोजन श्री अटल बिहारी वाजपेयी सभागार, उदयपुर (राज.) में हुआ।

सामूहिक नवकार महामंत्र एवं संघ समर्पणा गीत के साथ राष्ट्रीय महामंत्री ने कार्यसमिति बैठक के प्रथम सत्र की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने विगत कार्यसमिति बैठक से लेकर अब तक विभिन्न आयामों और प्रवृत्तियों की प्रगति को पीपीटी में माध्यम से सदन में रखा। जिसमें कपासन में आंचलिक सम्मेलन, कोटा में एक दिवसीय संघ संगठन प्रवास, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल का चार दिवसीय प्रवास, हावड़ा में श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा अनुदानित फ्लैट एवं विविध स्थानों पर आयोजित शिविरायोजन प्रमुख रहे। तत्पश्चात् आंचलिक प्रतिवेदन प्रस्तुति मे मेवाड़, बीकानेर मारवाड़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र विदर्भ खानदेश, बंगाल बिहार नेपाल भूटान झारखण्ड आंशिक उड़ीसा, कर्नाटक आंध्रप्रदेश अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्रीगणों द्वारा अपने अंचल की प्रतिवेदन को सदन में रखा गया। तदुपरांत आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति, साधुमार्गी पब्लिकेशन, समता सर्व मंगल, धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति, कर्म सिद्धांत, आई.टी. सेल आदि प्रवृत्तियों के संयोजकगणों द्वारा प्रवृत्ति के अंतर्गत प्रगति को प्रस्तुत किया गया। सदन में चर्चा के दौरान संघ संगठन व प्रवृत्ति प्रभावना हेतु अनेक महानुभावों ने अपने सुझाव रखे।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने यथाअवसर जिज्ञासु सदस्यों की जिज्ञासाओं का संतुष्टिपूर्ण निराकरण करते हुए संघ उत्थान में सहयोगी बनने और आचार्य भगवन के आयामों एवं संघ प्रवृत्तियों से प्रत्येक साधुमार्गी परिवारों को जोड़कर लाभान्वित करने हेतु आह्वान किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी ने महत्तम महोत्सव के व्यय बजट को सदन में प्रस्तुत किया, जिस पर सदन ने सहमति प्रदान की।

इस अवसर पर केन्द्रीय संघ के साथ आबद्ध संघों को जिसमें मेवाड़ अंचल कांकरोली, कपासन, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, निकुम्भ, फतेहनगर, असावरा, भदेसर, बम्बोरा, बड़ी सादड़ी, बोहेड़ा, सावा व बेंगू संघ, बीकानेर मारवाड़ अंचल से बीकानेर, जोधपुर, लूनकरणसर व झझू संघ, छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल से कलंगपुर और भिलाई स्टील सिटी प्लस संघों के अध्यक्ष/मंत्री महोदय को संघ संबंद्धता प्रमाण पत्र गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में प्रदान किये गये।

कार्यसमिति बैठक के द्वितीय सत्र की बैठक में 'संस्कार एवं संघ संवर्द्धन - क्यों और कैसे?' विषय पर संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें तीनों इकाइयों के पदाधिकारीगण, प्रवृत्ति संयोजकगण, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष-महामंत्री-कोषाध्यक्ष, कार्यसमिति सदस्य, शिखर सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्यगण उपस्थित रहे। आज की युवा पीढ़ी में संस्कार संवर्द्धन की दिशा में संघ द्वारा संचालित समता संस्कार पाठशाला, जैन संस्कार पाठ्यक्रम, समता संस्कार शिविर, इदं न मम् आदि विशेष योगदान दे रही है। इन प्रवृत्तियों के संयोजकों द्वारा प्रवृत्तियों की विस्तृत विवेचन सदन में रखा। संयोजकों द्वारा जिज्ञासु सदस्यों के प्रश्नों का समाधान किया गया।

कार्यक्रम में श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमितजी बम्ब-जयपुर ने अपने भावों को सदन में रखा।

कार्यक्रम की अंतिम कड़ी में नवीन साहित्य अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-5 का विमोचन हुआ। इस अवसर पर साधुमार्गी मोबाइल ऐप की लांचिंग हुई। साधुमार्गी मोबाइल ऐप के द्वारा सिर्फ एक टच पर संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों से कोई भी सदस्य कहीं भी बैठे जुड़ सकेगा।

बैठक के दौरान पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष उमरावसिंहजी ओस्तवाल एवं पुखराजजी बोथरा के मार्गदर्शन एवं आशीर्वचनों का लाभ भी सदन को प्राप्त हुआ।

श्री वर्द्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उदयपुर को बैठक आयोजन हेतु उत्कृष्ट व्यवस्थाएं संपादित करने पर आभार अभिनंदन ज्ञापित किया गया। संघ समर्पणा गीत के साथ सभा का समापन हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की वर्ष 21-23 की तृतीय कार्यकारिणी मीटिंग उदयपुर में सम्पन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षाजी की अध्यक्षता में तृतीय कार्यकारिणी बैठक 16.07.2022 को अटल बिहारी वाजपेयी सभागार, उदयपुर में सम्पन्न हुई। बैठक का शुभारंभ तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन करते हुए मंगलाचरण से हुआ। रा.अध्यक्षाजी द्वारा सदन को साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

रा.महामंत्री ने बैठक का संचालन करते हुए सदन से गत कार्यकारिणी मीटिंग रिपोर्ट की स्वीकृति प्राप्त की।

युवती शक्ति की राष्ट्रीय संयोजिका ने बताया कि युवती शक्ति के 3617 रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। सभी स्थानीय व अंचल संयोजिकाओं हेतु 'लीडरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम' के 5 सेशन आयोजित किए गए। जिनमें उपस्थित संयोजिकाओं को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। 17 अप्रैल को युवती शक्ति टीम द्वारा आयोजित ऑफलाइन प्लेनेट गतिविधि में 1100 युवतियों ने भाग लिया। इसमें युवती शक्ति द्वारा विविध ज्ञानवर्धक गतिविधियां करवाई गई। **'खुशियों का पिटारा'** के बारे में जानकारी दी गई।

केसरिया कार्यशाला संयोजिका द्वारा गत 11 माह से चल रही श्रीमद्भगवती सूत्र शतक-2 उद्देशक-5 के सवणे णाणे पर आधारित केसरिया कार्यशाला की जानकारी सभी के समक्ष रखी। संयोजिका जी ने आगामी गतिविधि 'स्त्रियों की 64 कलाएं' के बारे में बताया।

परिवारांजलि संयोजिका ने बताया कि परिवारांजलि को हर घर तक पहुंचाने के लिए अब तक 33 जूम मीटिंग का आयोजन किया जा चुका है। परिवारांजलि स्टीकर्स से नये श्रावक-श्राविकाओं को जोड़ने तथा पुराने श्रावक-श्राविकाओं से संपर्क करने की योजना के बारे में जानकारी दी गई।

समता छात्रवृत्ति योजना की संयोजिका ने बताया कि कक्षा 1 से 12 तक के कुल 44 फॉर्म स्वीकृत हुए हैं। 10 जुलाई 2022 तक 10 विद्यार्थियों को 1,41,000/- रू. की छात्रवृत्ति दी जा चुकी है तथा 26 विद्यार्थियों को लगभग 2,65,000/- रू. की छात्रवृत्ति प्रदान किया जाना संभावित है।

रा.महामंत्री जी ने बड़े ही हर्ष के साथ 183 सर्वधर्मी और वीर परिवारों को कुल 9,22,500/- रू. की सहायता प्रदान करने की जानकारी दी, 12 अंचल से बने 1426 आजीवन सदस्य तथा स्पॉन्सर द्वारा प्राप्त 3,57,801/- की धनराशि के बारे में बताया इसी क्रम

में महिला समिति के केसरिया गणवेश (साड़ी) का डिजाइन रजिस्ट्रर्ड हो जाने और लोगो के ट्रेडमार्क का कार्य गतिशील होने की जानकारी भी उपस्थित बहनों को दी।

रा.कोषाध्यक्षाजी ने गोल्डन स्टेप्स के अंतर्गत 'जीवन का सर्वोत्तम उपहार गर्भसंस्कार' के 2 से 4 जून तथा 4 से 6 अगस्त को सफलतापूर्वक हुए दो सेशन के बारे में जानकारी दी।

मुंबई-गुजरात अंचल की मोटिवेशनल फोरम अंचल संयोजिकाजी ने साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम में हुए अब तक के रजिस्ट्रेशन के बारे में जानकारी दी जिनकी संख्या 2082 थी। इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक समाज का सशक्तिकरण, कल्याण और विकास तथा जून माह में हुई तप और पारणा गतिविधि आदि की जानकारी दी।

अपने अंचल की रिपोर्ट प्रस्तुतिकरण के क्रम में सभी अंचलों की राष्ट्रीय उपाध्यक्षाओं ने रिपोर्ट प्रस्तुत की।

रा.महामंत्री जी ने अगले 1 साल में होने वाले सामाजिक कार्यों के बारे में बताया, जो हर तीन माह से होने हैं-

1. जीवदयाणं (जुलाई-अगस्त-सितम्बर)

2. आरोग्य वृद्धि (अक्टूबर-नवम्बर-दिसंबर)

3. खुशियों का पिटारा (जनवरी-फरवरी-मार्च)

4. सर्वधर्मी समर्पण (अप्रैल-मई-जून)

मीटिंग में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ कि 'श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की ओर से यह आह्वान किया जाता है कि आगे से स्थानीय महिला मंडल की अध्यक्षाजी और मंत्रीजी की चयन प्रक्रिया हेतु उनकी उत्कृष्ट शासननिष्ठा, संघ समर्पणा एवं सक्रिय कार्यशैली को ध्यान में रखा जायेगा। निम्नांकित बिंदुओं पर सहमति लेना अतिआवश्यक है-

1. स्थानीय स्तर पर विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन का लक्ष्य रखें।
2. व्यसनमुक्ति की अनिवार्य शपथ।
3. उत्क्रान्ति फार्म भरा हुआ हो, उसकी एक फोटो कॉपी भेजना।
4. संघ कार्य हेतु अपेक्षित समय देना।
5. स्थानीय संघ के सभी बड़े कार्यक्रमों में उपस्थिति।
6. कार्य को टीम के सहयोग से समय पर पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध रहना।
7. जहाँ 20 या उससे अधिक साधुमार्गी परिवार हो तो स्थानीय अध्यक्षा को प्रतिक्रमण कंठस्थ करना अनिवार्य रहेगा।
8. स्थानीय अध्यक्षा का व्यवहार संघ समर्पणा से ओतप्रोत हो वचनशैली सदैव समभावी एवं मृदु हो।

रा.महामंत्री द्वारा बताया गया कि उदयपुर में 29-30 अक्टूबर को देशभर की महिला समिति की अध्यक्ष-मंत्री के लिए शिविर आयोजित होना संभावित है। जिसमें सभी गणमान्य अध्यक्ष-मंत्री अधिक से अधिक उपस्थिति दर्ज करावें।

धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति की सदस्या ने धर्मपाल प्रवृत्ति के बारे में बताया।

रा.अध्यक्षाजी ने अपने उद्बोधन में महिला समिति द्वारा किए गए प्रवास, समिति की गणवेश की एकरूपता बनाए रखने तथा 'महत्तम महोत्सव' के बारे में जानकारी दी। महिला समिति द्वारा बीकानेर मारवाड़, दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरप्रदेश, मेवाड़, छत्तीसगढ़-उड़ीसा, बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान, तमिलनाडु, जयपुर-ब्यावर, मध्यप्रदेश और कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल के क्षेत्रों में प्रवास किया।

अंत में रा.महामंत्री ने उपस्थित सभी सदस्याओं को धन्यवाद ज्ञापित किया। संघ समर्पणा गीत के सामूहिक संगान के साथ बैठक को विराम दिया गया।

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

सप्तम् कार्यसमिति सभा सत्र 2020-22

उदयपुर, 16 जुलाई 2022। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में सप्तम् कार्यसमिति सभा का आयोजन उदयपुर में 16 जुलाई 2022 को किया गया।

मंगलाचरण मेवाड़ संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने किया। उसके पश्चात् विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। समता युवा संघ, उदयपुर के अध्यक्ष द्वारा सभी पदाधिकारियों का आत्मीय स्वागत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने इस कार्यकाल में सम्पन्न हुए कार्यों में सभी सदस्यों के सहयोग के लिए आभार व धन्यवाद करते हुए उन्होंने कहा कि हमें संगठित होकर संघ-विकास के कार्यो को आगे बढ़ाना है। हम इतिहास बनने जा रहे हैं, उससे पहले हम इतिहास बनाकर जाएं। कुछ ऐसा करें कि इस कार्यकाल के शेष बचे हुए 70 दिन यादगार बन जाएं। महत्तम महोत्सव प्रारंभ हो चुका है। आचार्य भगवन् का 50वाँ दीक्षा महामहोत्सव एक ऐतिहासिक क्षण है, जो शायद हमारे जीवन में दोबारा नहीं आएगा। यह अवसर भगवन् को कुछ देने का है, यह अवसर ना चूकें। उन्होंने सभी से निवेदन किया कि इस महोत्सव में हम सभी अपना सहयोग किसी न किसी प्रकार सहयोग दें। स्वयं जुड़ें तथा औरों को जोड़ें।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यसमिति सभा की मिनिट्स को सदन में प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। इसके पश्चात् आप द्वारा समता युवा संघ का 01.03.22 से 30.06.22 तक का प्रगति प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत किया गया। आपने बताया कि परम पूज्य आचार्य प्रवर के आचार्य पद चादर प्रदान दिवस और बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के उपाध्याय पद प्रदान दिवस को पूरे राष्ट्र में श्रुतभक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर कुल 1396 रात्रि संवर, 1142 उपवास तप, 413 एकासना तप और 35 आयम्बिल तप की आराधना हुई। समता युवा संघ के सत्र 2022-24 के लिए नवनिर्वाचन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। अभी तक कुल 49 क्षेत्रों में नवनिर्वाचन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई है। कुल 126 शोक-संवेदना सन्देश प्रेषित किए गए हैं। इसके अलावा आपने परीक्षा सूरज की (नाना राम की शिक्षा-सूरज की परीक्षा), ऑनलाईन क्विज खिलते ज्ञान पुष्प-4 एवं 5, छोटे नियम-लक्ष्य चरम, समता शाखा, उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति कार्यक्रम आदि की विस्तृत जानकारी सदन में रखी।

निम्न दो प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित किए गए:-

● जिन क्षेत्रों/गाँवो में साधुमार्गी युवाओं (18-45 वर्ष) की संख्या 15 से कम व 5 से अधिक है, वहां समता युवा शाखा का गठन किया जाएगा। जो पूर्ण रूप से श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के अंतर्गत व निर्देशन में कार्य करेंगी।

● आज के बाद पूरे संघ में कहीं भी समता युवा संघ के नाम व बैनर से कोई भी खेल-कूद गतिविधियाँ आयोजित नहीं की जाएंगी।

सभा में संघ की आगामी कार्य योजनाओं पर विचार-विमर्श हुआ। समता युवा संघ, उदयपुर के मंत्री द्वारा आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अंत में सभा ''तेरे पावन चरणों में....'' की अद्भुत समर्पणा और राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

-राष्ट्रीय महामंत्री

स्मृतिशेष साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. : संक्षिप्त परिचय

सांसारिक नाम	:	श्रीमती लाडादेवी गोलछा
जन्म तिथि	:	फाल्गुन बदी 4
जन्मस्थल	:	नागौर (राज.)
दीक्षास्थल	:	फलौदी, जोधपुर (राज.)
दीक्षा तिथि	:	चैत्र सुदी 13 संवत् 2057 दिनांक 16/04/2000
व्यावहारिक ज्ञान	:	5वीं
आध्यात्मिक ज्ञान	:	चालीस थोकड़े कंठस्थ, आगम अध्ययनरत
दीक्षा प्रदाता	:	परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
		सांसारिक पारिवारिक परिचय
माता-पिता	:	श्रीमती बदनबाई-श्री मंगलचंदजी चौधरी
पति	:	स्व. श्री माणकचंदजी गोलछा, बीकानेर
भाई	:	लालचंदजी, भीकमचंदजी, जेठमलजी, हस्तीमलजी चौधरी
बहिन	:	श्रीमती किरणबाई सुराणा
सांसारिक पता	:	श्री मोहनलालजी सोहनलालजी सिंगी, गोलछा मोहल्ला, जि. बीकानेर (राज.)

साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. का पण्डितमरण, श्रद्धांजलि अर्पित

जोधपुर। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पर्यायज्येष्ठा महासती श्री लघुताश्रीजी म.सा. का 12 अगस्त 2022 को रात्रि 12.35 बजे लक्ष्मीनगर पावटा बी रोड स्थित सोहनकंवर, मोहनलाल कांकरिया पौषधशाला में संथारापूर्वक पण्डितमरण हो गया। आपश्रीजी के सान्निध्य में ही उक्त पौषधशाला में चातुर्मास चल रहा था। गम्भीर बीमारी की स्थिति में भी अपूर्व आत्मबल और दृढ़ता के साथ आपके 7 उपवास की तपस्या गतिमान थी। आपके स्वास्थ्य की स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति में आपने दिनांक 12 अगस्त सायं 6:50 बजे शासन दीपिका महासती श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. के मुखारविन्द से सागारी तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान शुद्ध आत्मभावों के साथ ग्रहण किए।

13 अगस्त को प्रात: 8 बजे सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में आपकी डोलयात्रा 'जय-जय नन्दा, जय-जय भद्दा' एवं आचार्य श्री नानेश-रामेश के जयघोष के साथ श्री ओसवाल स्वर्ग आश्रम, महामन्दिर पहुंची। आपकी सरल, सहल, वात्सल्य भावना से हर श्रावक-श्राविका प्रभावित थे। आपका ससुराल पक्ष बीकानेर और पीहर पक्ष नागौर का चौधरी परिवार था। आपने अपने पति की मृत्यु से विरक्त होकर 16 अप्रेल 2000 को आचार्य श्री रामेश के सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की। आपकी डोलयात्रा में बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय मंत्रीजी, बीकानेर से पधारे वीर पिता विजयजी गोलछा, हेमन्तजी सिंगी, श्री साधुमार्गी जैन संघ-जोधपुर के अध्यक्षजी,

मंत्रीजी, पूर्व अध्यक्षजी एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण, स्थानीय युवा संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी, सदस्यगण, महिला मण्डल अध्यक्षाजी, बहुमण्डल अध्यक्षाजी तथा महिला-बहुमण्डल की समस्त कार्यकारिणी व काफी बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं एवं जैन-जैनेत्तर श्रद्धालु भी उपस्थित थे।

गुणानुवाद सभा

जोधपुर 14 अगस्त 2022। स्मृतिशेष पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. के दिव्य गुणों का स्मरण करने हेतु 14 अगस्त को महामन्दिर स्थित आचार्य उदयसागर समता भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. ने अल्प समय में ही जोधपुर के प्रत्येक श्रद्धालु के दिल में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। उन्होंने रात देखा न दिन, अपना हर पल, हर क्षण ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय में लगाकर अध्यात्म के क्षेत्र में अभिवृद्धि की।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी श्री लघुताश्रीजी यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करने वाले थे। जीवन के हर पड़ाव पर आपने लघुता धारण कर 'लघुता से प्रभुता मिले' की उक्ति को चरितार्थ किया। उनका जीवन गुरु के प्रति समर्पणा, स्वाध्याय, त्याग, तपस्या, सरलता, सहजता से परिपूर्ण था। भंयकर बीमारी के उपरान्त भी उनके चेहरे पर हमेशा शान्ति का भाव रहा।

शासन दीपिका साध्वी श्री संयतिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन एक सपना है, जो जल्दी टूट जाता है। जीवन एक सागर है, जिसमें लहर उठती है और शान्त हो जाती है। जन्म लेने के बाद मृत्यु से पहले हम अपने जीवन को सजा, संवार लेते हैं यानि धर्म और अध्यात्म से जोड़ लेते हैं तो जीवन सफल हो जाता है। अज्ञानपूर्वक मरण कभी सफल नहीं हो सकता। साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. अत्यन्त सरल स्वभाव के थे। आपश्रीजी दिन में 121 बार वन्दना कर लेते थे, जो कि एक बहुत ही कठिन कार्य है।

-सुरेश सांखला

भव्य भागवती दीक्षा महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् पट्टधर, युगनिर्माता, आगमज्ञाता **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** के मुखारविंद से-

1. **मुमुक्षु बहिन सुश्री मुस्कानजी बरड़िया** सुपुत्री श्री आसकरणजी बरड़िया, देशनोक (राज.)
2. **मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रियंकाजी भटेवरा** सुपुत्री श्री ललितजी भटेवरा, पूना (महा.)
3. **मुमुक्षु बहिन सुश्री दिशाजी पगारिया** सुपुत्री श्री निलेशजी पगारिया, जलगांव (महा.)

का जैन भागवती दीक्षा महोत्सव **11 अक्टूबर 2022 को उदयपुर (राज.)** में होना संभावित है। आप सभी के समक्ष दीक्षा साक्षी बनने का अभूतपूर्व अवसर उपस्थित हो रहा है। कर्मनिर्जरा का अनुपम प्रसंग उपस्थित करें।

स्मृतिशेष साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. : संक्षिप्त परिचय

सांसारिक नाम	:	श्रीमती किरणदेवी झाबक
उम्र	:	76 वर्ष
जन्मस्थल	:	बीकानेर (राज.)
दीक्षास्थल	:	बीकानेर (राज.)
दीक्षा तिथि	:	श्रावण बदी 8 संवत् 2079 दिनांक 21/07/2022
व्यावहारिक ज्ञान	:	5वीं
आध्यात्मिक ज्ञान	:	सामायिक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की विशेष आज्ञा से
शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षित

सांसारिक पारिवारिक परिचय

सास-ससुर	:	श्रीमती रूपादेवी-स्व. श्री पन्नालालजी झाबक
पति	:	स्व. श्री नवरतनजी झाबक
पुत्र-पुत्रवधू	:	श्री महावीरजी-श्रीमती टीनाजी झाबक
माता-पिता	:	श्रीमती मिश्रीदेवी-स्व. श्री पूनमचंदजी दस्साणी
भाई	:	स्व. श्री झंवरलालजी, नेमचंदजी, जयंतीलालजी, कांतिलालजी, शांतिलालजी दस्साणी
सांसारिक पता	:	महावीरजी झाबक, रानी बाजार इण्डस्ट्रीयल एरिया, माली मोहल्ला, चित्रगुप्त सभा भवन के पास, बीकानेर (राज.)

साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. का पण्डितमरण, श्रद्धांजलि अर्पित

बीकानेर। संथारा साधिका साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण करते हुए चौविहार संथारे सहित 17 अगस्त 2022 को दोपहर 3:33 बजे महाप्रयाण किया। तिविहार संथारे के 28वें दिन आपके स्वास्थ्य की प्रतिकूलता देखते हुए श्री संजयमुनिजी म.सा. ने चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। संत-महापुरुषों द्वारा आलोयणा के माध्यम से संथारे की पूर्णता की ओर सहयोग प्रदान किया गया।

दोपहर 4:45 बजे आपकी डोलयात्रा मालू कोटड़ी से प्रारंभ होकर गोगागेट स्थित ओसवाल श्मशान भूमि पहुंची। डोल यात्रा का सम्पूर्ण मार्ग भगवान महावीर, आचार्य प्रवर एवं साध्वीवर्या के जयकारों से गूंज रहा था। मार्ग के दोनों ओर हजारों लोगों ने खड़े होकर अपने श्रद्धाभाव अर्पित किए।

डोल यात्रा में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय महामंत्रीजी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी, स्थानीय संघ संरक्षकजी, अध्यक्षजी, मंत्रीजी, कोषाध्यक्षजी, उपाध्यक्षजी एवं सहमंत्रीजी सहित झाबक एवं दस्साणी परिवार के सदस्य व आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने उपस्थिति दर्ज कराई।

नवकार महामंत्र की गूंज के मध्य साध्वीश्रीजी के संसारपक्षीय सुपुत्र महावीरजी झाबक एवं परिजनों सहित राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने मुखाग्नि दी। रानी बाजार इण्डस्ट्रीयल एरिया में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा।

संथारा अवधि में स्थानीय संघ अध्यक्ष, महिला मण्डल अध्यक्षा, समता युवा संघ अध्यक्ष, समता बहू मण्डल अध्यक्षा सहित चारों इकाइयों के सदस्यों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया। रानीबाजार क्षेत्र के श्रद्धालुओं की सेवाएं भी निरंतर प्राप्त होती रही।

गुणानुवाद सभा

18 अगस्त। सेठिया कोटड़ी में आयोजित गुणानुवाद सभा में श्री हिमांशुमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संथारा जीवन की आदर्श प्रणाली है। साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण कर समता भाव का परिचय दिया। साध्वी श्री प्रथमाश्रीजी म.सा. ने साध्वीवर्या के साथ स्वल्प संयम यात्रा के अनुभवों को साझा किया। साध्वी श्री निशांतश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री पूर्णिमाश्रीजी म.सा. ने गद्य-पद्य में भाव रखे।

श्री संजयमुनिजी म.सा. ने भजन के माध्यम से संथारे के सम्पूर्ण दिवसों का चित्रण प्रस्तुत किया। आपश्रीजी ने फरमाया कि साध्वीवर्या की शारीरिक स्थिति भले ही कमजोर थी, लेकिन संमय व संथारे के प्रति उनके अहोभाव थे।

शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 'धन-धन कृतार्थश्री' गीतिका के माध्यम से अपने भाव रखे। साध्वीश्रीजी की सांसारिक पुत्रवधू टीनाजी झाबक ने म.सा. के धार्मिक जीवन के बारे में अपने भाव प्रकट किए।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने सम्पूर्ण संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वास्तव में ऐसी त्यागी-वैरागी आत्माओं से संघ के गौरव में अभिवृद्धि हो रही है। आपकी गुण सुरभि से सम्पूर्ण संघ सुवासित है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित अनेक वक्ताओं ने अपनी भावांजलि अर्पित की।

-हेमन्त कुमार सिंगी

प्रार्थना

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- प्रार्थना का सम्बन्ध भाषा से या जिव्हा से नहीं है। जिव्हास्पर्शी भाषा तो शुक (तोता) भी बोल लेता है, मगर वह भाषा केवल प्रदर्शन की वस्तु है। निर्मल अन्त:करण में भगवान के प्रति उत्कृष्ट प्रीति भावना जब प्रबल हो उठती है, तब स्वयंमेव जिव्हा स्तवन की भाषा का उच्चारण करने लगती है। स्तवन के उच्चारण में हृदय का रस मिला होता है। ऐसा स्तवन ही फलदायी होता है।
- परमात्मा 'दीन-दयालु' है। इसलिए उसकी प्रार्थना करने वाले को 'दीन' बनना होगा। 'दीन' बने बिना दीन-दयालु की दया प्राप्त नहीं की जा सकती।
- परमात्मा को प्रार्थना किसी भी स्थान पर और किसी भी परिस्थिति में की जा सकती है, पर पार्थना में आत्मसमर्पण की अनिवार्य आवश्यकता रहती है।
- प्रार्थना में अपने दुर्गुणों को छिपाना नहीं चाहिए अपितु प्रकट करना चाहिए। ऐसा करने से आत्मा एक दिन परमात्मा से साक्षात्कार करने में समर्थ हो सकेगा।

महत्तम महोत्सव का भव्य शुभारंभ

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव **''महत्तम महोत्सव''** का भव्य शुभारंभ हो चुका है। कुल 9 बिन्दुओं में समाहित इस महोत्सव के लगभग सभी प्रकल्प शुरू हो चुके हैं। आइए, जानते हैं इन प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी:-

ज्ञानार्जन

1. कर्म तत्वज्ञ

'6 कर्म ग्रंथ' तक के ज्ञान को समाहित किए हुए ग्रंथ 'कर्म प्रज्ञप्ति' पर आधारित इस कोर्स का लक्ष्य विषय का गहन अध्ययन करवाकर जानकार श्रावक तैयार करना है, जो स्वयं के साथ ही अन्य को ज्ञान वितरित करने में सक्षम बन सकें।

इसके भाग A की परीक्षा हो चुकी है और भाग B की प्रथम परीक्षा 25 सितम्बर 2022 को आयोजित की जाएगी।

2. श्रुत आरोहक

आगम, थोकड़े, सामान्य ज्ञान से सुसज्जित यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम सकल जैन समाज के सभी आयु के श्रावक-श्राविकाओं के लिए तैयार किया गया है।

प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम आगम : श्रीमद् उत्तराध्ययन (अध्ययन (3,11)

तत्त्व : पांच देवों का थोकड़ा, 102 बोल का बासठिया

सामान्य ज्ञान : शिक्षाव्रत के प्रश्नोत्तर, धारणाएं, कर्मों का परिचय, असंज्ञी मनुष्य के प्रश्नोत्तर

रजिस्ट्रेशन करवाने पर पुस्तक आपको अपने पते पर यथाशीघ्र ही भिजवा दी जाएगी।

3. श्रुत रमण : (31 महीनों में आगमों के अर्थ का वांचन)(सकल जैन समाज के लिए)

जिन आगमों के अध्ययन प्रस्तावित हैं, उनकी सूची इस प्रकार है-

(1) उपासकदशांग (2) ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र (3) अंतकृद्दशांग सूत्र (4) अनुत्तरोववाई सूत्र (5) समवायांग सूत्र (6) सूत्रकृतांग सूत्र (7) विपाकसूत्र (8) नन्दीसूत्र (9) औपपातिक सूत्र (10) राजप्रश्नीय सूत्र (11) प्रश्नव्याकरण सूत्र(12) श्रीमद् उत्तराध्ययन (13) निरयावलिका (14) दशवैकालिक (15) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (16) अनुयोगद्वार (17) कल्पावंतसिका (18) पुष्पिका सूत्र (19) वृष्णिदशा (20) आवश्यक सूत्र (21) स्थानांग सूत्र (22) पुष्पचुलिका सूत्र।

कुछ विशेष बिन्दु–

- सामायिक में, स्थानक में, चारित्रात्माओं के सानिंध्य में/सामूहिक रूप में अध्ययन हो तो बेहतर होगा।
- जो आगम उपलब्ध हैं, उन्हीं से शुरू करें।
- मार्गदर्शन हेतु विराजित चारित्रात्माओं से पूछने का लक्ष्य रखें अथवा जानकार श्रावक–श्राविकाओं से समझें।

4. The karma quiz : (कर्म प्रज्ञप्ति अध्याय 1 से 15) पर आधारित रोमांचक ऑफलाईन क्विज (सकल जैन समाज के लिए)

सर्वप्रथम स्थानीय स्तर पर Fast and Fantastic Activity करवाई जाएगी। प्रथम एक्टिविटी **9–10–2022 (अध्याय–1–4)** को रहेगी।

सम्पूर्ण अध्याय यानी 1 से 15 से संबंधित एक्टिविटी की तारीख भी बहुत जल्द ही आपके समक्ष प्रस्तुत होगी।

सारी Activities सफलतापूर्वक पार करने पर आपको प्राप्त होगा 005 Licence to सिद्धत्व

5. All is well: प्रतिक्रमण कंठस्थ करना (18 से 45 वर्ष के युवाओं के लिए)

महत्तम महोत्सव के दौरान युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ करवाने का प्रकल्प है।

ज्ञानार्जन के अंतर्गत आगे आने वाले प्रकल्प हैं थोकड़ों का कार्निवल (20 थोकड़ों का अध्ययन), श्रुत भ्रमण (प्रथम वर्ष में अंतगड़दशांग सूत्र पर आधारित ओपन बुक परीक्षा, प्रज्ञा प्रशिक्षण (जैन धर्म के विभिन्न विधाओं के शिक्षक तैयार करना)

2. स्वाध्याय

(1) आचार्य भगवन् के प्रवचन/चिंतन की पुस्तक पढ़ना

प्रथम वर्ष में तीन पुस्तकें– नीरव का रव, प्रणव व आरोह पर आधारित परीक्षा रहेगी।

(2) आध्यात्मिक आरोग्यम्– परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविंद से ज्ञान पंचमी के पावन दिवस पर आध्यात्मिक आरोग्यम् का एक भाव पैदा हुआ।

आध्यात्मिक आरोग्यम् के नौ सूत्र इस प्रकार हैं–

1. गुणमय दृष्टि का विकास	2. छिद्रान्वेषण का लक्ष्य नहीं	3. इन्द्रिय निग्रह का लक्ष्य
4. आत्मानुशासन का विकास	5. विवाद–विग्रह से पराङ्मुखता	6. मैत्रीभाव का विकास
7. जीवन नियमन	8. सामूहिक स्वाध्याय साधना	9. तत्त्वानुप्रेक्षा (आत्मचिंतन)

इन नौ बिन्दुओं को अपनाते हुए आध्यात्मिक आरोग्यम् के विश्वस्तरीय ग्रुप से जुड़ने के लिए रजिस्ट्रेशन अवश्य कराएं।

(3) श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन कंठस्थ करना (नए विद्यार्थी)

चारित्रात्माओं या वरिष्ठ श्रावक/श्राविकाओं के मार्गदर्शन से सूत्र कंठस्थ करना।

4. प्रतिदिन 100 गाथाओं का स्वाध्याय करना–

महत्तम महोत्सव तक/जीवनपर्यंत के लिए 100 गाथाओं के अध्ययन के प्रकल्प से जुड़ें।

3. संस्कार (धर्म WITH FUN) (18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों हेतु)

1. अब कर कमाल 2.0 का उद्देश्य मनोरंजक Activities के माध्यम से धर्म सिखाना है।

आयु वर्ग- A. 6 से 10 वर्ष तक B. 11 से 14 वर्ष तक C. 15 से 18 वर्ष तक

विषय : जीवन उत्थान की परिकल्पना (Life Enhancing Concept), 5 पदों का संक्षिप्त परिचय (Introduction of 5 padas), संवाद कौशल (Communication Skill)

स्थानीय क्षेत्र में कॉऑर्डिनेटर्स द्वारा एक्टिविटी करवाई जाएगी।

4.9.2022 25.9.2022 16.10.2022 30.10.2022

Finals : 13.11.2022

सामाजिक

पूरे राष्ट्र में, हर संघ में आचार्य श्री नानेश स्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश पदारोहण दिवस के उपलक्ष में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत भव्य रूप से 16 अक्टूबर 2022 को सभी क्षेत्रों में रक्तदान शिविरों का आयोजन करना है।

संबंधित बैनर व अन्य जानकारी जल्द ही स्थानीय प्रतिनिधि तक पहुंचाने का लक्ष्य है। उपरोक्त उल्लेखित सभी प्रकल्पों से हमें जुड़ना है और सकल जैन समाज में इनकी प्रभावना करनी है।

- उपरोक्त दिए गए सारे प्रकल्पों के रजिस्ट्रेशन की (ऑनलाईन/ऑफलाईन) प्रक्रिया शुरू है।
- अपने क्षेत्र के स्थानीय पदाधिकारी या हेल्पलाईन नं. के माध्यम से रजिस्ट्रेशन अवश्य कराएं और महत्तम महोत्सव से जुड़ जाएं।
- सभी प्रकल्पों के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री रजिस्ट्रेशन करवाने पर भिजवा दी जाएगी।

-टीम महत्तम महोत्सव आयोजन समिति

वीर माता का संथारा
उच्च भावों के साथ गतिमान

फारबिसगंज, 23 अगस्त 2022। वीर माता इचरजदेवी बोथरा धर्मपत्नी प्रदीपजी बोथरा-फारबिसगंज ने असाध्य रोग से ग्रसित होते हुए भी अपूर्व आत्मबल से चौविहार संथारा ग्रहण कर अपना तृतीय मनोरथ पूर्ण करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। आपने 17 अगस्त को पूर्ण सजग अवस्था में शुद्ध आत्मभावों के साथ संथारा ग्रहण कर देह का ममत्व त्याग दिया। समाचार लिखे जाने तक आपके संथारे का 7वां दिवस गतिमान था। हम सभी को भी संथारे की अनुमोदनार्थ कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान अवश्य ग्रहण करना चाहिए।

आप परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्यवर्ती श्री ऋजुप्रज्ञमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री गुंजनश्रीजी म.सा. की संसारपक्षीय माताजी हैं। शासनदेव से यही प्रार्थना है कि आपके उच्चभावों में सहयोगी बनें।

-श्रमणोपासक टीम

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहे इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में निम्न उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है।

संघ महाप्रभावक सदस्यता भेंट

2,21,000/- मनोरमादेवी बैद-रायपुर

2,20,000/- निहालचंदजी अंकितजी कोठारी-ब्यावर

समता भवन निर्माण प्रवृत्ति

(भदेसर हेतु)

50,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

(चिकलाकसा हेतु)

1,10,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

85,000/- हुक्मीचंदजी प्रवीणजी विनयजी ओस्तवाल-ब्यावर/मुम्बई

55,000/- मांगीलालजी अनिलजी पारख-रायपुर

22,000/- विमलकुमारजी सिपानी-बैंगलोर

(धूले हेतु)

1,65,000/- हुक्मीचंदजी प्रवीणजी विनयजी ओस्तवाल-ब्यावर

1,10,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

55,000/- मांगीलालजी अनिलजी पारख-रायपुर

22,000/- विमलकुमारजी सिपानी-बैंगलोर

(कांकरोली हेतु)

3,75,000/- हुक्मीचंदजी प्रवीणजी विनयजी ओस्तवाल-ब्यावर/मुम्बई

(केसिंगा हेतु)

1,50,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

(लूणकरणसर हेतु)

3,75,000/- हुक्मीचंदजी प्रवीणजी विनयजी ओस्तवाल-ब्यावर/मुम्बई

(शिरपुर हेतु)

2,50,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

1,25,000/- मांगीलालजी अनिलजी पारख-रायपुर

50,000/- विमलकुमारजी सिपानी-बैंगलोर

(शिंदखेड़ा हेतु)

2,50,000/- उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

1,98,000/- सरदारमलजी सुभाषचंदजी कांकरिया-कोलकाता

86,250/- दिलीपजी भण्डारी-अलीबाग

महत्तम महोत्सव

4,00,000/- पुखराजजी अमितजी पीयूषजी निश्चलजी बोथरा-अलाय/अहमदाबाद

2,50,000/- मीनादेवी कन्हैयालालजी सुनीलजी आंचलिया-जयपुर

51,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त जतनलालजी दीपचंदजी भूरा-दिल्ली, अशोककुमारजी चण्डालिया-कपासन

11,111/- पुष्पादेवी बाबूलालजी सेठिया-रतलाम

11,000/- दिनेशकुमारजी दीपककुमारजी देशलहरा-दुर्ग

5,000/- पुष्पेन्द्रसिंहजी बुलिया-सूरत

इदं न मम्

10,00,000/- मांगीलालजी अनिलजी पारख-रायपुर

5,00,000/- शांतिलालजी सांड-बैंगलोर

33,000/- निर्मलकुमारजी पोखरना-जयपुर

22,000/- ललितकुमारजी इन्द्रचंदजी लोढ़ा-मदुरांतकम्

9,300/- रश्मिजी निर्मलकुमारजी पोखरना-जयपुर

7,700/- पारसमलजी फाफरिया-जावद (77 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में)

5,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त प्रेमादेवी बोथरा-फारबिसगंज, सुरेशकुमारजी बाबूलालजी देशरड़ा, अरविंदकुमारजी अशोककुमारजी बोहरा-सीतामऊ, प्रदीपकुमारजी निर्मलकुमारजी बोहरा-सीतामऊ, विवेककुमारजी सागरमलजी जैन-सीतामऊ, प्रकाशचंदजी रतनलालजी जैन-सीतामऊ

5,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त महेन्द्रकुमारजी बैद-बनमनखी, मदनलालजी पिछोलिया-आमेट, उत्तमचंदजी लोढ़ा-ब्यावर, ज्ञानचंदजी डांगी-बड़ीसादड़ी

2,200/- नैनेशजी रजनीकांतजी कामदार-अमलनेर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त पदमचंदजी डोसी-फारबिसगंज, रमेशचंद्रजी मेहता-भीलवाड़ा

2,000/- गुप्तदान-सिलचर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त रमेशकुमारजी रामपुरिया-बनमनखी, शांतिलालजी बैद-बनमनखी, शांतिलालजी रूपावत-मंदसौर

1,000/- राजमलजी भण्डारी-बड़ीसादड़ी

555/- कमलाबाई पुखराजजी चौपड़ा-सेलम्बा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त चांदमलजी छलाणी-बनमनखी, चेतनमलजी नवनीतजी नागौरी-उदयपुर, प्रकाशचंदजी मेहता-बड़ीसादड़ी

जीवदया

11,000/- गुप्तदान-विसांगन

5,000/- गुप्तदान-अहमदाबाद

4,000/- सुधीरकुमारजी लूणावत-नरसिंहपुर

3,100/- ज्ञानचंदजी अशोकचंदजी हेमंतजी पंकजजी कोठारी-बैंगलोर (स्व. श्री रिखबचंदजी कोठारी की द्वितीय पुण्यतिथि पर)

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विजयकुमारजी बच्छावत-विजयनगरम्, जयचंदलालजी कमलादेवी भूरा-देशनोक (50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में)

2,000/- केशरीचंदजी विकासकुमारजी चौरड़िया-अम्बागढ़ चौकी (रश्मिदेवी चौरड़िया के 15 उपवास के उपलक्ष्य में)

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त जितेशजी हर्षजी जैन-दिल्ली, शांतिलालजी रूपावत-मंदसौर, अंजलिजी बाबेल-ब्यावर

600/- कैलाशचंदजी जैन-सवाईमाधोपुर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त गुप्तदान-दिल्ली, सुधाजी दिनेशजी आंचलिया-इंदौर, कमलादेवी चौरड़िया-गंगाशहर, सुन्दरदेवी नाहर-ब्यावर, लहरचंदजी सिपानी-गंगाशहर, विनोदजी बच्छावत-विजयनगरम्

दानपेटी

15,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कुमुददेवी श्रद्धाजी सिपानी-बैंगलोर, माणकचंदजी दूधमलजी डागा-बैंगलोर

14,000/- विमलजी कमलजी सिपानी-बैंगलोर

11,000/- विकासकुमारजी दिव्यांशजी नाहटा-रायपुर

5,000/- डालचंदजी श्रेंयासकुमारजी बाफना-रायपुर

3,100/- खेमचंदजी चौपड़ा-नगरी

2,800/- साहिलजी सिपानी-बैंगलोर

2,400/- सिपानी भवन-बैंगलोर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विनीतकुमारजी विनोदकुमारजी लोढ़ा-बैंगलोर, राजेन्द्रकुमारजी अभिषेकजी बोथरा-बैंगलोर, अरुणकुमारजी मयूरकुमारजी नवलखा-रायपुर, सुभाषचंदजी नाहटा-

नगरी, निर्मलचंदजी नाहटा-नगरी, वृद्धिचंदजी नाहटा-नगरी, सकुनदेवी नाहटा-नगरी

1,600/- कांतिलालजी नाहटा-नगरी

1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विनयजी वृद्धिचंदजी नाहटा-नगरी, बिजयजी वृद्धिचंदजी नाहटा-नगरी, सुनीताजी विनयजी नाहटा-नगरी, क्षमा बिजयजी नाहटा-नगरी

1,255/- मेघराजजी मुकेशजी संचेती-रायपुर

1,200/- मदनलालजी गोलछा-नगरी

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त पवनकुमारजी मंडोत-बैंगलोर, महेन्द्रकुमारजी बुबकिया-बैंगलोर, रोशनलालजी गुरलिया-बैंगलोर, वृद्धिचंदजी गन्ना-बैंगलोर, सुनीलकुमारजी-बैंगलोर, ज्ञानचंदजी रायसोनी-रायपुर, विजयकुमारजी संचेती-रायपुर, नितिनकुमारजी सेठिया-रायपुर, भैरूदानजी पारख-रायपुर, मोतीलालजी चौरड़िया-रायपुर, नरेन्द्रकुमारजी सुराणा-रायपुर, कमलकुमारजी कोठारी-रायपुर, योगेन्द्रकुमारजी सांखला-रायपुर, अशोककुमारजी सांखला-रायपुर, पूरनलालजी बाफना-रायपुर, जेठमलजी सांखला-रायपुर, अमितकुमारजी सेठिया-रायपुर, चम्पालालजी गुण्देचा-रायपुर, चंदनजी सुराणा-रायपुर, ओमप्रकाशजी संचेती-रायपुर, प्रेमचंदजी नाहटा-नगरी, जितेन्द्रजी नाहटा-नगरी, कमलचंदजी नाहटा-नगरी, मोहनलालजी नाहटा-नगरी, विरमजी नाहटा-नगरी, यशजी नाहटा-नगरी, लालीजी नाहटा-नगरी, उन्नति नाहटा-नगरी

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त धर्मचंदजी बम्बकी-बैंगलोर, गुलशनकुमारजी खिंवसरा-बैंगलोर

750/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त मनोहरलालजी भंसाली-रायपुर, आशादेवी बम्ब-नगरी, शुभकरणजी संचेती-गुलाबबाग, चुन्नीलालजी आंचलिया-गुलाबबाग, ओमप्रकाशजी सोनावत-गुलाबबाग, विमलजी भूरा-गुलाबबाग, राजेन्द्रजी भूरा-गुलाबबाग, विनोदजी सुराणा-गुलाबबाग

700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त नरेशकुमारजी ऋषभजी खटोड़-रायपुर, नंदकिशोरजी राहुलजी सुराणा-रायपुर

610/- सुरेशकुमारजी प्रशांतजी चौपड़ा-रायपुर

600/- सोहनलालजी गोलच्छा-नोखा

501/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त अनिलकुमारजी बरड़िया-रायपुर, तिलोकचंदजी बरड़िया-रायपुर, देवीलालजी सुराणा-रायपुर, हितेशकुमारजी ओस्तवाल-रायपुर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कमलादेवी चौरड़िया-गंगाशहर, गोपालचंदजी खिंवसरा-बैंगलोर, गौतमचंदजी गुरलिया-बैंगलोर, महावीरचंदजी मुणोत-बैंगलोर, अशोककुमारजी बंट-बैंगलोर, रमेशकुमारजी रामपुरिया-बनमनखी, चांदमलजी छलाणी-बनमनखी, बालचंदजी भूरा-बनमनखी, शांतिलालजी बैद-बनमनखी, महेन्द्रकुमारजी बैद-बनमनखी, योगेशकुमारजी पारख-रायपुर, धर्मेंद्रकुमारजी पारख-रायपुर, कन्हैयालालजी बाफना-रायपुर, रिखबचंदजी गादिया-रायपुर, सुशीलकुमारजी कोठारी-रायपुर, राजेशकुमारजी-रायपुर, सुरेशचंदजी सांखला-रायपुर, राजेशजी भंसाली-रायपुर, ज्ञानचंदजी सांखला-रायपुर, मन्नुबाई बरड़िया-रायपुर, अशोककुमारजी सांखला-रायपुर, दिनेशकुमारजी पींचा-रायपुर, जीवनलालजी नाहटा-नगरी, शिखरचंदजी छाजेड़-नगरी, दुर्गालालजी गोलछा-नगरी, गौतमचंदजी गोलछा-नगरी, गौतमजी चौपड़ा-नगरी, मीनाजी ढेलड़िया-तोंगपाल, खुशालचंदजी छाजेड़-नगरी, कमलचंदजी रायसोनी-नगरी, नीलमचंदजी ढेलड़िया-नगरी, केवलचंदजी चौपड़ा-नगरी, गौतमचंदजी नाहटा-नगरी, गणेशजी चौपड़ा-नगरी, श्री जैन संघ-नगरी

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

11,000/- नवीनकुमारजी गेंदालालजी नांदेचा-बदनावर

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त प्रकाशजी सुराणा-उदयपुर, धमेन्द्रजी आंचलिया-बेगूं

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कंचनदेवी

पोखरना-विजयनगरम्, निर्मलाजी पोखरना-विजयनगरम्,
1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त शोभाजी दिनेशजी आंचलिया-इंदौर, भाग्यवती पोखरना-विजयनगरम्

श्रमणोपासक भेंट

3,50,000/- विमलकुमारजी सिपानी-बैंगलोर

21,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त अमितकुमारजी पीयूषजी बोथरा-अहमदाबाद (चंद्रकांता-पुखराजजी बोथरा की 47वीं शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में), नवरत्नजी कुनालजी कल्पजी पुगलिया-चैन्नई, सुभाषचंदजी ओस्तवाल-ब्यावर (स्व. कमलेशकुमारी ओस्तवाल की पुण्यस्मृति में)

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विजयलक्ष्मी सुरेन्द्रकुमारजी भूरा-गंगाशहर (विजयलक्ष्मीजी के वर्षीतप के उपलक्ष्य में), विजयचंदजी गुलाबदेवी बरड़िया-गंगाशहर (पौत्री डॉ. हिमांगी बरड़िया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में), महावीरप्रसादजी मेहता-जयपुर (चन्द्रलता-महावीरजी मेहता की शादी की 50वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में), हुलासमलजी बैद-गंगाशहर (आनन्दकुमारजी बैद पुण्यस्मृति में)

1,500/- कमलादेवी चौरड़िया-गंगाशहर (स्व. श्री दूलीचंदजी चौरड़िया की पुण्यस्मृति में)

1,100/-का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त बाबूलालजी शंभुदयालजी जैन-सवाईमाधोपुर (अजय के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में), कमलकुमारजी समरथमलजी पोखरना-बदनावर (पुत्री पायल के सी.ए. परीक्षा में पास होने के उपलक्ष्य में), मनोजकुमारजी जैन (हेमराजजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में)

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त रोहितकुमारजी नवलखा-गंगाशहर , कैलाशचंदजी जैन-सवाईमाधोपुर

संघ सहयोग

11,000/- नवरत्नजी कुनालजी कल्पजी पुगलिया-चैन्नई

: विशेष :

साहित्य आजीवन सदस्यता	:	04
श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता	:	95
संघ आजीवन सदस्यता	:	05
संघ साधारण सदस्यता	:	02
महिला समिति सदस्यता	:	15

01 अप्रैल 2022 से 30 जुलाई 2022 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई, इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	राशि	अन्य विवरण
एस.बी.आई. बैंक		
18.04.22	7950/-	Ch. No. 439337
10.05.22	3100/-	नकद
11.05.22	5000/-	CDM
20.06.22	5000/-	NEFT
21.06.22	1151/-	नकद
27.06.22	500/-	नकद
14.07.22	21550/-	NEFT अंकित जैन
27.07.22	1700/-	Ch. No. 53
यूको बैंक		
30.05.22	3500/-	नकद

उपरोक्त भेंट दाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

स्मृतिशेष

सुश्राविका मोहनीदेवी भूरा, देशनोक/भीलवाड़ा

माँ तुम बिना सूना है घर-आँगन कर कुछ नहीं सकते हम, क्योंकि यही विधि का विधान है।
दुनिया कहती है माँ तो माँ होती है, पर हम तो यही कहते हैं कि माँ बिन जग सारा सूना है,
माँ के चेहरे की मुस्कुराहट ही हमारा सच्चा गहना है।।

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका मोहनीदेवी भूरा धर्मसहायिका स्व. श्री झंवरलालजी भूरा, देशनोक निवासी का 17 जुलाई 2022 को 77 वर्ष की आयु में भीलवाड़ा में देवलोकगमन हो गया। आप अत्यन्त धार्मिक, सरल स्वभावी एवं मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थी। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के शासन के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपके 20 वर्ष से शीलव्रत के प्रत्याख्यान एवं आजीवन रात्रिभोजन व जमीकंद के त्याग थे। आपने अष्टमी को एकासन, चतुदर्शी पक्खी को उपवास व बड़े स्नान त्याग के नियम ले रखे थे। बड़ी तिथि को हरी का त्याग, द्रव्य की मर्यादा के साथ त्यागमय जीवन जी रही थीं। प्रतिदिन प्रवचन श्रवण व 2 सामायिक करने का नियम आपने स्वास्थ्य की अनुकूलता रहने तक निभाया। आपका जीवन हम परिजनों के लिए सदा प्रेरणास्पद रहेगा। संपूर्ण परिवार ने अंतिम समय तक पूर्ण मनोयोग से आपकी सेवा की।

आप परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की संसारपक्षीय भाभीजी थे। आप अपने पीछे पांच पुत्रों का भरा-पूरा संस्कारवान शासन समर्पित परिवार छोड़कर गई हैं। आपकी आत्मा सतत् मोक्ष पद पर अग्रसर हो यही शुभेच्छा है।

श्रद्धावनत्

इन्द्रचन्द, लुणकरण, कमलचंद, विमलचंद (देवर), सुन्दरलाल (जेठूता), सुनीलचंद-संतोषदेवी, मनोज कुमार-सुनीतादेवी, संजय कुमार-प्रभादेवी, किशोर कुमार-पूजादेवी, निर्मल कुमार-मंजूदेवी, सुमति कुमार-शिल्पादेवी, रोशन भूरा (पुत्र-पुत्रवधू), पूजा-प्रभातजी, आरती-भरतजी (पुत्री-दामाद), आयुष, अंकुश, ऋषभ, दर्शन, नमन (पौत्र), अंजली, प्रगति, नव्या (पौत्री), ज्योति-गौरवजी (पौत्री-दामाद), उन्नति (पड़दोहिती) एवं समस्त भूरा परिवार।

पीहर पक्ष- देवचंद भंवरलाल मरोठी, नोखा

फर्म

एस.के. टेक्सटाईल एजेन्सी, भीलवाड़ा, ऋषभ ऑटो फाईनेंस, आकोला

पी.एस. क्रिएशन, कोयम्बटूर, पूजा टेक्सटाईल्स एजेन्सी, सूरत

विनम्र श्रद्धांजलि

गंगाशहर। सुश्रावक विजयकुमारजी सुपुत्र स्व. श्री सुरजमलजी नवलखा का 5 जून को 54 वर्ष की आयु में तिविहार संथारे सहित पण्डितमरण हो गया। आपने अपने राऊरकेला प्रवास के समय सन् 2008 में आचार्यश्री के पधारने पर अनुकरणीय सेवा का लाभ लिया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

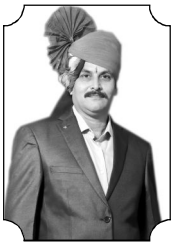

बालोतरा। सुश्राविका विमलादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री भूपतराजजी सालेचा का 24 जून को 69 वर्ष की आयु में सेलम में देहावसान हो गया। आप शांत स्वभाव एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गीदम। सुश्रावक योगेशकुमारजी सुपुत्र स्व. हेमराजजी गोलेच्छा का देहावसान हो गया है। आप आचार्य श्री नानेश-रामेश के परमभक्त थे। आप दान-पुण्य में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

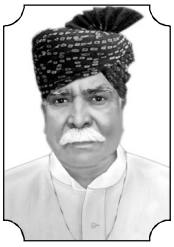

आवरीमाता। सुश्रावक रोड़ीलालजी भंसाली का 4 मई को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, वात्सल्य तथा सादगी की प्रतिमूर्ति थे। धर्मध्यान एवं चरित्रात्माओं की सेवा में हमेशा अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए है।

कोटा। सुश्रावक पारसचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री राजमलजी पोरवाल का 14 जुलाई को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति अपूर्व निष्ठा व समर्पणा थी। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित स्थानीय संघ में अनेक पदों पर सेवा दी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्रावक आनंदजी सुपुत्र हुलासमलजी बैद का 12 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति समर्पित है। आपके परिवार से साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आचार्य श्री रामेश शासन की प्रभावना कर रहे हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर। सुश्रावक कीर्तिसेनजी मेहता का 26 मई को 80 वर्ष की आयु में समभावों के साथ देहावसान हो गया। आप अत्यन्त ही धार्मिक एवं सरल स्वभावी थे। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश प्रति गहरी आस्था व श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

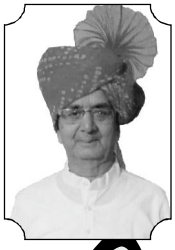

सूरत। सुश्रावक नेत्रदानी चांदमलजी कांकरिया निवासी गोगेलाव का 14 जुलाई को सूरत में निधन हो गया

था। आप सरल, सहज एवं सौम्य प्रकृति के धनी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

दुर्ग। सुश्राविका कंवरीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री टीकचंदजी पींचा, दुर्ग का 7 जुलाई को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

पीसांगन। सुश्राविका नौरतीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराजजी सिघंवी का 9 जून को पीसांगन (अजमेर) में निधन हो गया। आपके लगभग 30 वर्षों से रात्रिभोजन त्याग एवं 20 वर्षों से जमीकंद का त्याग था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बांसवाड़ा। सुश्राविका रमादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री सागरमलजी कासमा का 18 जून को 90 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति प्रगाढ़ आस्था व श्रद्धा थी। आपने अपने जीवन में कई तपस्याएं की हैं। प्रतिदिन 5 सामायिक करने का आप लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

यह भी सत्य है कि जितना सहारा मिलता है उतना ही विकास होता है। यदि लम्बे बांस का सहारा मिलता है तो लता भी बांस के ऊपर चढ जाती है। हम स्तुति करते हैं किन्तु यदि वह हृदय को स्पर्श न करे, होंठ और तालु तक ही रह जाए, भीतर गहरे तक नहीं उतारें तो उसका लाभ नहीं मिल सकता।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.

Know & Grow Exclusive

एक कदम सम्यक्त्व की ओर...

07 अगस्त 2022 रविवार को KnG की क्लास में friendship day celebration किया गया, जिसमें बच्चों को तत्त्वज्ञान का पहला सिद्धांत जीवनिकाय 6 कुछ अलग तरीके से समझाया गया। इसमें बताया गया कि हमें सिर्फ दोस्ती अपने स्कूल और कक्षा के बच्चों के साथ ही करनी चाहिए? अपितु हर एक जीव के साथ दोस्ती करनी चाहिए। चाहे वो पृथ्वी के जीव हो या फिर पानी के, हवा के, अग्नि के या वनस्पति, फल, फूल हो अथवा कोई चींटी, बिल्ली, चूहा, चिड़िया, सभी जीव है हमारे जैसे। हमें इन सबको अपना दोस्त बनाकर उनकी रक्षा करनी चाहिए। किसी भी जीव को तकलीफ नहीं देनी चाहिए।

मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

''ये सब हमारे दोस्त हैं। मुझमें सबके लिए मैत्रीभाव है। किसी से भी वैर नहीं है। मैं उनका ध्यान रखूंगा और उनकी रक्षा करूंगा।'' इसी समझ के साथ, छोटे बच्चों (लेवल 1) ने 6 जीवनिकाय के लिए Friendship Band भी बनाए और बड़े बच्चों (लेवल 2, 3, 4, 5) ने कविताओं की रचना की।

यह गतिविधि बड़ी मजेदार और हृदय को छू लेने वाली रही।

संघ गौरव

डिप्टी पुलिस कमिश्नर सागरजी बाघमार केंद्रीय गृह पदक-2022 के लिए चयनित

सूरत शहर डिप्टी पुलिस कमिश्नर **श्री सागरजी बाघमार, बालोतरा-पाटोदी** निवासी को अन्वेषण में उत्कृष्टता हेतु केंद्रीय गृह मंत्री के पदक वर्ष 2022 हेतु चयनित किया गया है। श्री बाघमार की तत्परता, जागरूकता तथा अपराधियों से कड़ाई से निपटने के जज्बे के प्रतिफल रूप गृह मंत्रालय ने आपको गृहमंत्री पदक-2022 से सम्मानित करने का निर्णय किया है। आपकी इस उपलब्धि से संघ गौरवान्वित हुआ है। उल्लेखनीय है कि बाघमार परिवार साधुमार्गी सम्प्रदाय का अनुयायी है। साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. श्री सागरजी की संसारपक्षीय भुआजी हैं। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभेच्छा करते हैं।

कोलकाता के **श्री पीयूषजी बैद** ने चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्सेशन-यूके की ओर से आयोजित होने वाली ADIT की परीक्षा उत्तीर्ण कर परिवार, समाज और संघ के साथ-साथ राष्ट्र को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है। इस परीक्षा में कुल 132 लोगों का चयन हुआ, जिनमें श्री पीयूष भी एक हैं। सम्पूर्ण बैद परिवार परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के प्रति अपूर्व श्रद्धावान एवं संघ समर्पित परिवार है। आपकी इस उपलब्धि पर हम हार्दिक बधाई प्रेषित करते हैं। आपकी इस उपलब्धि से संघ गौरवान्वित हुआ है।

शुभम्‌जी बोथरा सुपुत्र डॉ. सुनीलजी-सुधाजी बोथरा, सुपौत्र करणीदानजी-झमकूदेवी बोथरा, नोखा ने इण्डियन इंजीनियरिंग सर्विसेज (आई.ई.एस.) में ऑल इण्डिया में चतुर्थ स्थान प्राप्त कर परिवार, समाज एवं संघ को गौरवान्वित किया है। आप वर्तमान में भारतीय नौसेना में ए.एन.एस.ओ. पद पर मुम्बई में कार्यरत हैं। आपके अनुज भ्राता शीतलजी बोथरा हाल ही में एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण कर डॉक्टर बने हैं। आपके पिताजी नोखा के बागड़ी राजकीय चिकित्सालय में मुख्य चिकित्सा अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और आस-पास विचरणरत चारित्रात्माओं के वैयावच्च में सदैव तत्पर रहते हैं। आप परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की संसारपक्षीय बहिन के पौत्र हैं। समस्त बोथरा परिवार आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित परिवार है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभेच्छा करते हैं।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

कितनी भी कठिनाईयां हो यदि हम द्रष्टाभाव का अभ्यास करें तो हमें वेदना नहीं होगी। **–आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**

आंचलिक रिपोर्ट

सभी क्षेत्रों में चारित्रात्माएँ सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं।

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम :–

Sadhumargi Women's Motivational Forum

4 सितम्बर 2022 को वुमन्स मोटिवेशनल फोरम की पहली ऑफलाइन गतिविधि होने जा रही है, जिसका नाम है- 'भावना से भव पार'। ये गतिविधि 'मेरी भावना' पर आधारित है।

- यह गतिविधि वुमन्स मोटिवेशनल फोरम के सदस्यों के लिए है, जिसका आयोजन धर्मस्थान, समता भवन या स्थानक में होगा।
- ये गतिविधि प्रश्नमंच के रूप में दो लोगों की टीम बनाकर की जाएगी, जिसके 4 राऊण्ड संभावित है।
- सभी सदस्याएं कर्मनिर्जरा हेतु बढ़-चढ़कर भाग लेवें।

धार्मिक कार्य– तप–त्याग

क्र.	स्थान	चातुर्मास स्थापना दिवस को संपन्न तप–त्याग
1.	चित्तौड़गढ़	पंचोला 2, चोला 4, तेले 100, बेला 10, उपवास 275, आयम्बिल 50, एकासन 350, पौषध 120, संवर 160, प्रतिक्रमण 800
2.	बम्बोरा	तेले 5, उपवास 15, आयम्बिल 5, एकासन 27
3.	भीम	तेले 2, उपवास 5, एकासन 5
4.	कपासन	तेले 6
5.	कांकरोली	तेले 4, बेला 1, उपवास 3
6.	प्रतापगढ़	तेले 8
7.	फतेहनगर	तेले 3, उपवास 9, एकासन 3
8.	छोटीसादड़ी	तेले 5
9.	बेगूं	तेले 4, चौला 2, उपवास 6, एकासन 7
10.	कानोड़	तेले 17, संवर 17
11.	भीण्डर	तेले 5,
12.	निम्बाहेड़ा	तेले 17
13.	भदेसर	तेले 9
14.	भीलवाड़ा	तेले 21
15.	अहमदाबाद	तेले 9
16.	पूर्वोत्तर अंचल	उपवास 50, आयम्बिल 35, एकासन 65, बियासना 17
17.	नीमच	तेले 25
18.	खिड़किया	तेले 8

विशिष्ट तपस्या – निम्न क्षेत्रों में चातुर्मास के दौरान सानन्द संपन्न हुई

मेवाड़ अंचल–

1. बम्बोरा– प्रियंकाजी जारोली–9 उपवास

2. निंबाहेड़ा– मंजूजी जारोली–मासखमण, सरोजजी सहलोत–मासखमण, मोनिकाजी धींग–8 उपवास, कलाबाई मारू–380 निरंतर एकासन।

3. भीण्डर– लक्ष्मीबाई नंदावत–मासखमण, पुष्पाजी नंदावत–15 उपवास।

4. भदेसर– कविताजी नाहर–9 उपवास, विजयलक्ष्मीजी मोदी–8 उपवास, शांताबाई रूगलेचा–8 उपवास, सीमाजी मोदी–8 उपवास।

5. चित्तौड़गढ़– केसरबाई पोखरना–8 उपवास, संतोषबाई पानगड़िया–8 उपवास, अन्नुजी सुराणा–8 उपवास।

6. भीलवाड़ा– सीमाजी खमेसरा–8 उपवास।

तमिलनाडु अंचल –

7. चैन्नई– सपनाजी छाजेड़–22 उपवास, रितुजी तलेसरा–11 उपवास, महकजी छल्लाणी–9 उपवास, पूजाजी बाफना–9 उपवास, सुशीलाबाई बोहरा–8 उपवास, अंजनाजी खिंवसरा–8 उपवास, आशाजी गोठी–7 उपवास।

मुम्बई–गुजरात अंचल –

8. पुणे– रिचाजी गेलड़ा–11 उपवास, रेखाजी चन्द्रगोत्री–8 उपवास, निर्मलाजी भूरा–उपवास एकांतर, प्रमिलाजी मेहता, ममता चोरड़िया निरंतर एकासन।

महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश–

9. धूलिया– मनीषाजी कांकरिया–11 उपवास।

पूर्वोत्तर अंचल–

10. सिलापथार– सुश्री तानिया बाफना–8 उपवास।

11. फारबिसगंज– सुशीलाबाई झाबक–स्वैच्छिक लोच।

दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरप्रदेश अंचल–

12. दिल्ली– कंचनदेवी छाजेड़–14 उपवास, सोनमजी लुणिया–11 उपवास, चांदनीजी छल्लाणी–11 उपवास, ललिताजी सुराणा–11 उपवास, पार्वतीदेवी संचेती–9 उपवास। दिपालीजी छल्लाणी, सुमनजी भूरा तथा निर्मला बांठिया– एकासन का मासखमण।

- तेले, उपवास, आयम्बिल, एकासन, नींवी, मौन साधना, संवर, मोबाईल का त्याग आदि विविध लड़ियां, आयम्बिल व एकासन का मासखमण एवं विभिन्न एकान्तर तप चल रहे हैं।

शिविर

क्र.	शिविर का विषय	क्षेत्र
1.	शुद्ध भिक्षाचर्या, 14 गुणस्थान चक्रवर्ती के चक्र आदि	कानोड़
2.	सचित्त अचित्त का ज्ञान, पांच देवों का थोकड़ा, गर्भ का थोकड़ा, धोवन पानी की जानकारी, सपनों के फल व कारण के बारे में बताया	भीलवाड़ा
3.	लाइफ डिजाइनिंग–जीवन को सजाना	चित्तौड़गढ़

4.	भिक्षा के दोष, आरों का वर्णन, जैन सिद्धांत बत्तीसी	नोखा
5.	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र का हिन्दी अर्थ, जीवन जीने का सूत्र	सूरत
6.	छोटे-छोटे बोल - बड़े अनमोल, हम में है कुछ खास इसलिए अपनाओ आज (50 वर्ष से कम श्राविकाओं के लिए), नवकार से भव पार, श्रावक के बारह व्रत	अहमदाबाद
7.	बच्चों को धार्मिक कर्म और मर्म का ज्ञान	मुम्बई
8.	12 चक्रवर्तियों के नाम, सामायिक सूत्र, लोक-अलोक	सिलापथार
9.	भगवान महावीर स्वामी का जीवन परिचय और सामान्य ज्ञान	गुवाहाटी
10.	अहोदानम्, लोक की संरचना, सचित्त-अचित्त	दिल्ली
11.	जैनिज्म का इतिहास, बारह व्रत	जलगांव
12.	तीर्थंकर के 34 अतिशय, समकित के 67 बोल और 42 दोष, 7 कुव्यसन, 5 अभिगम	गेवराई
13.	तीर्थंकरों की अवगाहना, धोवन पानी की जानकारी, अवसर्पिणी काल के 10 आश्चर्य	नागपुर
14.	आत्मा को कैसे बचाएं, 14 नियम, प्रतिक्रमण को कब व कैसे करें, श्रुत आरोहक	रतलाम
15.	शुद्ध भिक्षाचर्या, श्रुत आरोहक	उज्जैन

प्रवास :- (1) जयपुर-ब्यावर अंचल- टोंक, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, कोटा, देवली, केकड़ी, सरवाड़ में 5-6 अगस्त को अंचल के उपाध्यक्ष-मंत्री एवं टीम के द्वारा 2 दिवसीय प्रवास संपन्न हुआ। (2) छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल- देवगढ़, साझा, परकोड़ी में 3 अगस्त 2022 को राष्ट्रीय अंचल उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय अंचल मंत्री और कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा एक दिवसीय प्रवास संपन्न हुआ।

Minority Empowerment
(अल्पसंख्यक समाज का सशक्तिकरण, कल्याण विकास)

प्रधानमंत्री अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजना

छात्रवृत्ति	आवेदन की अंतिम तिथि	दोषपूर्ण सत्यापन अंतिम तिथि	संस्थान सत्यापन अंतिम तिथि
अल्पसंख्यकों के लिए मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति	30 सितंबर 2022	16 अक्टूबर 2022	16 अक्टूबर 2022
अल्पसंख्यकों के लिए पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति	31 अक्टूबर 2022	15 नवंबर 2022	15 नवंबर 2022
व्यावसायिक और तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए छात्रवृत्ति	31 अक्टूबर 2022	15 नवंबर 2022	15 नवंबर 2022

अधिक जानकारी प्राप्त करें- Website : https://scholarships.gov.in, https://nsp.gov.in, https://www.minorityaffairs.gov.in

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	03-07	10-07	17-07	24-07	31-07
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1788	2075	2380	2370	2753
		आंचलिक क्षेत्र	94	92	93	89	94
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	598	689	819	887	947
		आंचलिक क्षेत्र	45	45	45	43	43
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	489	504	403	394	430
		आंचलिक क्षेत्र	28	28	28	28	28
4	मध्यप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	899	1215	1416	1484	3108
		आंचलिक क्षेत्र	73	74	76	76	76
5	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	1915	2368	2494	2556	2451
		आंचलिक क्षेत्र	148	146	149	151	142
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	345	304	373	346	342
		आंचलिक क्षेत्र	21	23	26	25	24
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	330	379	360	350	335
		आंचलिक क्षेत्र	13	13	13	12	12
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	508	613	656	775	846
		आंचलिक क्षेत्र	35	34	35	32	35
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	381	428	353	365	421
		आंचलिक क्षेत्र	36	42	32	38	35
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	251	317	293	362	393
		आंचलिक क्षेत्र	41	38	38	42	41
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	271	227	280	287	315
		आंचलिक क्षेत्र	25	25	28	28	27
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	106	110	102	209	134
		आंचलिक क्षेत्र	10	9	10	10	10
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	10	12	12	8	7
		आंचलिक क्षेत्र	5	6	6	7	5
संयुक्त रिपोर्ट							
कुल उपस्थिति			7891	9241	9941	10393	12482
कुल क्षेत्र			574	575	579	581	572

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज़ करवाने वाले 10 संघों की सूची

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	रतलाम	2965	6.	चैन्नई	1095
2.	उदयपुर	2942	7.	सूरत	1019
3.	राजनांदगांव	2797	8.	नोखामंडी	863
4.	चित्तौड़गढ़ (उत्क्रांति ग्राम)	1502	9.	दुर्ग	775
5.	रायपुर	1234	10.	निम्बाहेड़ा	658

Towards Innovation

(The Life Changing Workshop For Youth)

उदयपुर। श्री अ.भा.सा जैन समता युवा संघ द्वारा **" Towards Innovation"** राष्ट्रीय युवा शिविर का भव्य आयोजन शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, उत्क्रांति प्रदाता श्रीमद् जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 14-15 अगस्त 2022 को उदयपुर की पावन धरा पर किया गया, जिसमें देश के कोने-कोने से 414 युवा शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविर का शुभारंभ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की मांगलिक के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय शिविर प्रभारी के नेतृत्व में यह शिविर गतिमान रहा।

प्रथम दिवस 14 अगस्त 2022

प्रथम सत्र में साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपश्रीजी ने मधुर गीतिका से सभी को मंत्रमुग्ध करते हुए सुन्दर, सरल भाषा में 'क्रिया' और 'धार्मिक क्रिया' में अंतर समझाते हुए बताया कि दोनों को मिक्स मत करो, तब जाकर धर्म में आनन्द आएगा। जिस धार्मिक क्रिया में आनन्द मिलता रहे, उसे निरंतर करते रहना चाहिए और उसमें लीन हो जाना चाहिए।

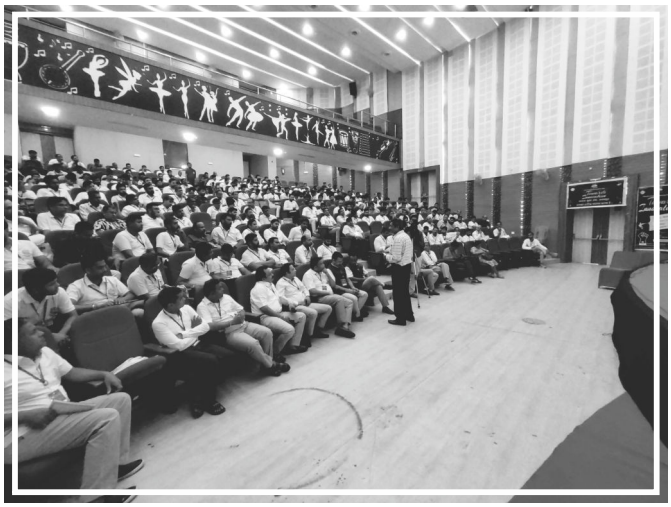

द्वितीय सत्र में श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने निम्नांकित सात बिंदुओं- 1. EXPLORE, 2. CHOOSE, 3. CLARITY, 4. BRAVE, 5. EXECUTE, 6. ELIMINATE, 7. FLOW को विस्तृत रूप से समझाते हुए फरमाया कि ये सात बिंदु आपके जीवन को मंजिल के पास ले जा सकते हैं।

तृतीय सत्र में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में 'मन की बात-म.सा. के साथ' कार्यक्रम हुआ। इसके तहत एक स्लिप पर अपनी जिज्ञासा लिखकर बॉक्स में डालने को कहा गया, जिसमें कई मार्मिक प्रश्न आए। म.सा. ने बहुत ही सुन्दर, सरल और धार्मिक दायरे में युवाओं की जिज्ञासा को शांत किया। इसमें युवाओं ने खुलकर अपने मन की बातें रखीं, जिससे सत्र बहुत रोचक बन गया।

चतुर्थ सत्र श्री गगनमुनिजी म.सा. ने लिया। आपश्रीजी ने प्रबंधन के बारे में विस्तारपूर्वक समझाते हुए फरमाया कि मुख्य रूप से निम्न चार क्षेत्रों में कुशल प्रबंधन ही जीवन की सफलता का पैमाना बनता है- 1. पारिवारिक 2. सामाजिक 3. व्यावसायिक 4. व्यक्तिगत।

पंचम सत्र में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपश्रीजी ने अपने प्रेरक मार्गदर्शन में फरमाया कि हम सभी यहाँ निश्चित उद्देश्य से एकत्रित हुए हैं। हम सभी विकास

चाहते हैं। विकास के लिए महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारा हृदय पवित्र होना चाहिए। हमारे प्रति लोगों का जुड़ाव केवल फिजिकल एक्टिविटी से नहीं बनता है, उसके लिए अपना आभा मण्डल स्ट्रोंग होना चाहिए। इससे स्वयं में भी पॉवर बढ़ेगा और दूसरे पर भी प्रभाव पड़ेगा। आभा मण्डल की मजबूती के लिए आवश्यक है कि हम अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण ईमानदार रहें। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य को पूर्ण ईमानदारी से करता है, उससे वह स्वयं संतुष्ट होकर उसका आत्मविश्वास मजबूत बनता है। जब आत्मविश्वास बढ़ता है तो उसमें आगे बढ़ने का जोश पैदा होता है। आलसी व्यक्ति का आत्मविश्वास मजबूत हो ही नहीं सकता है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य को पूरी ईमानदारी के साथ करता है, वह अपना आत्मबल मजबूत कर लेता है। संघ का विकास संगठित प्रयत्न की अपेक्षा रखता है। हमारे संघ ने बहुत विकास किया है। नवकार महामंत्र सिखाने से लेकर अभी तक जो धार्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह संघ की ही देन है। हमने संघ के लिए क्या किया? यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। जो संतुष्टि कार्य करने से होती है, वह नाम से कभी नहीं हो सकती। जब आप दूसरों का विकास करेंगे, उससे आप अपने स्वयं का भी विकास करेंगे।

छठे सत्र में युवाओं ने परम पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य में धार्मिक ज्ञानचर्चा का लाभ लिया। युवाओं ने अपनी कई तरह की जिज्ञासाओं का समाधान बहुत ही सरल, सुन्दर रूप में प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस 15 अगस्त 2022

प्रथम सत्र श्री राजनमुनिजी म.सा. ने लिया। आपने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन से युवाओं में नया जोश और नई ऊर्जा का संचार कर दिया। आपने फरमाया कि युवा संघर्ष का दूसरा नाम हैं और युवा ऊर्जा का पर्याय हैं। युवा शक्ति का सही नियोजन सही दिशा में लगेगा तो सफलता और विकास मिलेगा, परन्तु विपरीत कार्यों में वह शक्ति लग गई तो तबाही मचा देगी।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने युवाओं को निम्न 5 सूत्र (key point) प्रदान किए-

- 5 मिनट घर पर परिवार के साथ आराधना
- सप्ताह में दो दिन परिवार के साथ healthy discussion
- बच्चों को सचित्र जैन कथाएँ घर पर उपलब्ध कराना
- 200 भजन का संकलन रखना
- अपने सिद्धान्तों पर समझौता नहीं करना

प्रथम सत्र में जाने-माने मोटीवेशनल स्पीकर निर्मलजी पारख, वड़ोदरा ने अटल सभागार में युवाओं को अमूल्य सफलता के विस्तृत रूप को समझाकर युवाओं के प्रश्नों का निराकरण किया।

दूसरा सेशन श्रीमान सुशील जी चौधरी, जोधपुर ने लिया उन्होंने ''आत्महत्या ही समाधान नहीं'' विषय को बहुत ही सरल तरीके से बताया और हम किस प्रकार समाज में घुलमिल कर समस्या से निजात पा सकतें है इसपर बहुत सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया और एक्टिविटी से उसको स्पष्ट समझाया।

तीसरा सेशन श्री निर्मल जी पारख ने लिया जिसमें उन्होंने बेहतरीन लीडरशिप के (Macro से Micro लेवल तक के) पॉइंट को विस्तृत पी.पी.टी. (P.P.T.) द्वारा समझाया और एक्टिविटी भी कराई जिसमें सभी युवाओं ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के अंत में अध्यक्षीय उद्‌बोधन राष्ट्रीय अध्यक्षजी द्वारा दिया गया और नवीन अध्यक्ष जी का परिचय सदन से कराया एवं अपने उद्‌बोधन में उदयपुर श्री संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया।

इसके पश्चात युवा साथियों ने शिविर का फीडबैक प्रस्तुत किया और उन्हें ट्रॉफी से उदयपुर श्री संघ अध्यक्ष, चातुर्मास समिति संयोजक, सह संयोजक, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, नवीन अध्यक्ष, शिविर संयोजक, अध्यक्ष, मंत्री के हाथों सम्मानित किया गया एवं मोटिवेशन स्पीकर श्री निर्मल जी पारेख एवं सुशील जी चौधरी को भी सम्मानित कर मोमेंटो प्रदान किया गया।

अंत में शिविर संयोजक महोदय जी ने सम्पूर्ण शिविर का सारांश प्रस्तुत किया और युवाओं से आह्वान किया कि शिविर का अनुपम ज्ञान तब तक साकार नहीं होगा, जब तक हम इसे जीवन में अपनायेंगे नहीं और एक वादा करें, कम से कम 2 मिनट का चिंतन रात्रि विश्राम के पहले अवश्य करें कि इस जीवन के लक्ष्य प्राप्ति दिशा में आज पूरे दिवस में मैंने क्या सार्थक कार्य किये!

कार्यक्रम का संचालन महामंत्री जी ने किया। अंत में **'तेरे पावन चरणों में'** की अदभुत समर्पणा और राम गुरु की जय-जयकारों के साथ शिविर का समापन हुआ। **-राष्ट्रीय शिविर संयोजन समिति (श्री अ.भा.सा.जैन समता युवा संघ)**

विभिन्न क्षेत्रों में युवा शिविर के भव्य आयोजन

नोखामंडी। शासन दीपिका महासती श्री शर्मिलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 3 के पावन सानिध्य में युवा जागृति शिविर का आयोजन 14 से 24 जुलाई तक किया गया, जिसमें 95 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के दौरान साध्वी श्री सुगुप्ति श्री जी म.सा ने विशेष प्रेरणा देते हुए कालचक्र के बारे में समझाया। शिविर के दौरान सुश्रावक कैसे बने! स्थानक में प्रवेश करने के नियम सहित सुश्रावकों के प्रेरणास्पद जीवन को बताया गया। शिविर के दौरान शासन दीपिका महासती श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा. ने जीवन को त्याग व तपमय बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने समझाया कि हमें अपने मनुष्य भव को सार्थक बनाना चाहिए। साध्वी श्री सुप्रीतिश्रीजी म. सा. ने संघ समर्पणा गीत को नई व सुंदर तर्ज में प्रस्तुत कर युवाओं को संघ सेवा की प्रेरणा दी। शिविर के दौरान महासतियाँजी ने संघ सेवा-समर्पणा व निष्ठा की प्रेरणा दी। शिविर के अंतिम दिन युवा संघ मंत्री ने युवा संघ की ओर से पूज्य चारित्रात्माओं से क्षमायाचना करते हुए आभार व्यक्त किया। उन्होंने जागृति शिविर संबंधी जानकारी दी।

शिविर समापन कार्यक्रम हुक्म नानेश भवन में आयोजित हुआ, जिसमें युवा संघ के अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे। अंत में युवा संघ अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें चातुर्मास में अपने ज्ञान को आगे बढ़ाना है व निरंतर सुबह की क्लास में आना है।

-समता युवा संघ, नोखामंडी

मुंबई। शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में 24 जुलाई को समता भवन में समता युवा संघ द्वारा एक दिवसीय युवा शिविर ''बिजी लाइफ में ईजी धर्म''- & Stress Management विषय पर आयोजित किया गया। शिविर में 75 से अधिक युवाओं ने चारित्रात्माओं के सान्निध्य में ज्ञानार्जन करते हुए अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

श्री मदनमुनिजी म.सा. ने 'दैनिक जीवन में धर्म को किस तरह से जिया जा सकता है' विषय पर प्रकाश डाला। आपश्रीजी ने दैनिकचर्या में 'धर्म के मर्म को समझने' पर सूक्ष्म प्रकाश डालते हुए युवाओं को सरल भाषा में समाधान दिया। शिविरार्थियों के अनुभव अविस्मरणीय रहे। संजीत जी (Life and Business Coach) ने जिन्दगी से तनाव को कैसे कम किया जा सकता है विषय पर विस्तृत चर्चा की।

युवा शिविर के साथ ही बच्चों के लिए Training the young minds विषय पर शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया। श्री

रोहितमुनिजी म.सा. ने रोचक तरीके से धार्मिक कर्म और मर्म समझाए। समता महिला मंडल की बहनों ने ज्ञान-ध्यान सिखाया एवं रुचिकर एक्टिविटी कराई। स्पेशल स्पीकर गौरांगजी गांधी ने प्रैक्टिकल रूप से आज की पीढ़ी को समझाइश दी। जीतलजी गाला ने Know & Grow के बारे में जानकारी दी।

-समता युवा संघ, मुंबई

भीनासर। 7 अगस्त को श्री जवाहर विद्यापीठ में पांच दिवसीय गुडलक शिविर का समापन हुआ। शिविर में 125 शिविरार्थियों ने भाग लिया। यह शिविर पर्यायज्येष्ठा महासती श्री विशालप्रभाजी म.सा. एवं शासन दीपिका महासती श्री सुसृमद्धिश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित किया गया था। महासती श्री सुचारूश्रीजी म.सा. ने अलग-अलग विषयों पर बहुत ही प्रभावी तरीके से शिविरार्थियों को लाभान्वित किया। महासती श्री सुविधाश्रीजी का भी मार्गदर्शन मिला। शिविर के अंतिम दिन शासन दीपिका महासती श्री मननप्रज्ञाजी म.सा. का सानिध्य प्राप्त हुआ।

लगभग 80 शिविरार्थियों ने 5-5 सामायिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। शिविर समापन पर समता युवा संघ के अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-समता युवा संघ, गंगाशहर-भीनासर

नेत्र जाँच शिविर का आयोजन

सिलचर, 31 जुलाई। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' के अंतर्गत नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर आरोग्यम् का आयोजन समता युवा संघ सिलचर द्वारा किया गया। श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ-सिलचर के अध्यक्षजी की अध्यक्षता एवं सिलचर मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. बी.बी. बरवा के मुख्य आतिथ्य में डॉ. रुमा दास व उनकी टीम ने नेत्र परीक्षण किया। लगभग 240 व्यक्तियों ने नेत्र जांच करवाई। 60 व्यक्तियों ने मरणोपरांत नेत्रदान करने का संकल्प लिया।

-समता युवा संघ, सिलचर

वाणी-संयम

- मुंह से जैसी ध्वनि निकलेगी वैसी ही प्रतिध्वनि सुनने को मिलेगी। अगर कटु शब्द नहीं सुनना चाहते हो तो अपने मुँह से कटु शब्द मत निकालो।
- दूसरे के मुँह से गाली सुनकर अपना हृदय कलुषित मत होने दो। वह भीतर भरी हुई अपनी गंदगी बाहर निकालता है ताकि तुम अपने भीतर डाल लो?
- किसान खाद के रूप में गंदगी का सदुपयोग कर लेता है और उससे उत्तम उपज होती है। इसी प्रकार तुम भी आत्मकल्याण के रूप में गालियों का सदुपयोग कर सकते हो।
- गाली देने वाला अपनी जिव्हा का दुरूपयोग करता है, पाप का उपार्जन करता है। वह मानसिक दुर्बलता का शिकार हैं, अतएव करुणा का पात्र है। जो करुणा का पात्र है उस पर क्रोध करना विवेकशीलता नहीं है।
- अज्ञानी पुरुष को जिन पदार्थों के वियोग से मर्मवेधी पीड़ा पहुंचती है, ज्ञानीजन को उनका वियोग साधारण-सी घटना प्रतीत होता है। ज्ञानवान पुरुष संयोग को वियोग का पूर्वरूप मानता है। वह संयोग के समय हर्षविभोर नहीं होता और वियोग के समय विषाद से मलिन नहीं होता। दोनों अवस्थाओं में वह मध्यस्थ भाव रखता है। सुख की कुंजी उसके हाथ लग गई है, इसलिए दु:ख उससे दूर-ही-दूर रहते हैं।
- लोग मनुष्य के शरीर को अछूत मानकर उससे परहेज करते है, मगर हृदय की अपवित्र वासनाओं से उतना परहेज नहीं करते। वास्तव में अपावन वासनाएं ही मनुष्य को गिराती हैं, उनकी छूत से बचने की अत्यधिक आवश्यकता है।

संगठन

युवती शक्ति

केसरिया कार्यशाला

श्री ज्ञाताधर्म कथांग सूत्र व जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र के आधार से केसरिया कार्यशाला ला रही है

स्त्रियों के लिए 64 कलाएँ :-

"अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर ने समझाया ब्राह्मीजी को लिपि, सुंदरीजी को अंकगणित बतलाया और कृपा कर समस्त स्त्रियों को 64 कला का पाठ पढ़ाया श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र से हमने अपनाया..."

॥ जय गुरु आत्मा ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

जीव दया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर...
सबको समझे निज समान, कह गए प्रभु वीर...

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

द्वारा सामाजिक कार्य की श्रृंखला में प्रस्तुत है

जीवदयाणं

(जुलाई-अगस्त-सितम्बर)

सव्वेजीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिजिउं

- मांसाहारी व्यक्ति को प्रेरणा देकर मांस भक्षण छुड़वाना।
- कम से कम एक दिन के लिए कत्लखाने बंद करवाना।
- गौशाला में गाय आदि को रोटी, चारा, गुड़ आदि खिलाना।
- पक्षियों को पानी दाना देना।
- मच्छरदानी का वितरण करना।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं

- वृद्धाश्रम/अनाथालय/अंध महाविद्यालय/मूक बधिर संस्था आदि में सेवा देना।
- शारीरिक श्रम करते हुए रिक्शाचालक/कुली/कड़ी धूप में मेहनत करते हुए मजदूर आदि को साता पहुँचाना।

आप सभी को निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजे।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

- साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए -

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि महिला समिति एवं श्री संघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

वेबसाइट-
www.sadhumargi.com/application-form/
www.sabsjmsorg/downloads/
सम्पर्क सूत्र : 7231033008

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

तीनों इकाई के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं स्थानीय अध्यक्ष/मंत्री से करबद्ध निवेदन है कि
अपने क्षेत्र में समता छात्रवृत्ति की प्रभावना करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

स्मृतिशेष

सुश्रावक गोकुलचन्दजी सिपानी, उदयरामसर/चिकमंगलूर

जन्म	स्वर्गवास
04/04/1940	22/07/2022

वीरभूमि मरुधरा की धन्य धरा बीकानेर जिले के उदयरामसर निवासी धर्मनिष्ठ सेठ श्री भैरूंदानजी सिपानी के घर-आंगन में श्रीमती धन्नीबाई की रत्नकुक्षी से कोलकाता में 04/04/1940 के शुभ दिन गोकुलचंदजी का जन्म हुआ। आपका लालन-पालन एवं मैट्रिक तक शिक्षा कोलकाता-उदयरामसर में हुई। आपका विवाह 1955 में नोखा निवासी श्री भैरूंदानजी डागा की सेवाभावी कर्तव्यपरायणा सुपुत्री श्रीमती बसन्तीदेवी के साथ हुआ।

सन् 1955 में आप हासन (कर्ना.) में लकड़ी (शॉ मिल) के कार्य में सम्मिलित हुए एवं 1959 में आपने चिकमंगलूर में सिपानी शॉ मिल की शुरूआत की। आपके आठ वर्षीय द्वितीय सुपुत्र श्री वीरेन्द्रकुमारजी के दु:खद निधन से आप पर गहरा वज्रपात हुआ।

अपने पारिवारिक एवं धार्मिक कर्तव्यों को निभाते हुए आप 1972 में रोटरी क्लब के सदस्य बने। 1991 में रोटरी क्लब के तत्वावधान में आपने जीवन संध्या वृद्धाश्रम का निर्माण करवाया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती बसन्तीदेवी सिपानी ने चार एकड़ जमीन इस वृद्धाश्रम निर्माणार्थ दान दी। वृद्धाश्रम का उद्घाटन 1992 में सम्पन्न हुआ।

आपने समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के उदयरामसर चातुर्मास को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1996 में आपके 35 वर्षीय ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमारजी सिपानी के स्वर्गवास का आपको गहरा आघात लगा। दोनों पुत्रों के निधन से आप उदास एवं हताश हो गए। आपके दो सुपुत्रियां श्रीमती मंजुला-श्री लालचंदजी भंसाली एवं श्रीमती संजुला-श्री किरणचंदजी गुलगुलिया तथा चार दोहिते व एक दोहिती हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार चिकमंगलूर में ही व्यवसायरत है।

सन् 1999-2000 में आप रोटरी जिला 3180 में गवर्नर बने। एक साल की अवधि में आपने अनुकरणीय सेवा कार्यों का उदाहरण प्रस्तुत किया। इसके अलावा आपने अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन किया।

सन् 2003 तक आप सतत् सेवाकार्य में लगे रहे। आपने स्कूलों में फर्नीचर, कम्प्यूटर, पेयजल की सुविधा व शौचालय निर्माण के लिए रोटरी फाउण्डेशन से धन उपलब्ध करवाकर जनोपयोगी कार्य करवाए। आपके पैतृक गांव उदयरामसर में वीरेन्द्र बाल मंदिर सन् 1976 से कार्यरत है।

2002 में उदयरामसर में आपने अपने पूज्य पिताजी की पुण्यस्मृति में रोटरी भैरूंदान सिपानी नेत्र चिकित्सालय का शुभारंभ कराया। इस चिकित्सालय में हर महीने के प्रथम रविवार को कैंप लगता था, जिसमें अब तक हजारों सफल ऑपरेशन हो चुके हैं।

आपके पूज्य पिताजी श्री भैरूंदानजी सिपानी ने उदयरामसर में 1953 में सर्वप्रथम एक हॉस्पिटल की शुरूआत की। उस समय जब गांव में आने-जाने का कोई साधन उपलब्ध नहीं था।

आप समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के पाट पर विराजित व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आपको मई 2022 में ईलाज के लिए बैंगलोर लाया गया, जहां महावीर जैन हॉस्पिटल में आपका उपचार चला। इसी दौरान 22 जुलाई को आपने इस नश्वर देह का त्याग कर दिया। आपका अन्तिम संस्कार चिकमंगलूर में किया गया।

: श्रद्धावनत् :

श्रीमती बसन्तीदेवी सिपानी (धर्मपत्नी), **श्रीमती जेठीदेवी सोहनलालजी सिपानी** (भाभी),
श्री रिद्धकरणजी-श्रीमती सूरजदेवी सिपानी (भाई-भाभी) एवं समस्त सिपानी परिवार, चिकमंगलूर-बैंगलोर-उदयरामसर
श्रीमती मंजुला-लालचन्दजी भंसली, श्रीमती संजुला-किरणचंदजी गुलगुलिया (बेटी-दामाद)
प्रतिष्ठान- सिपानी शॉ मिल, गवनहल्ली, चिकमंगलूर

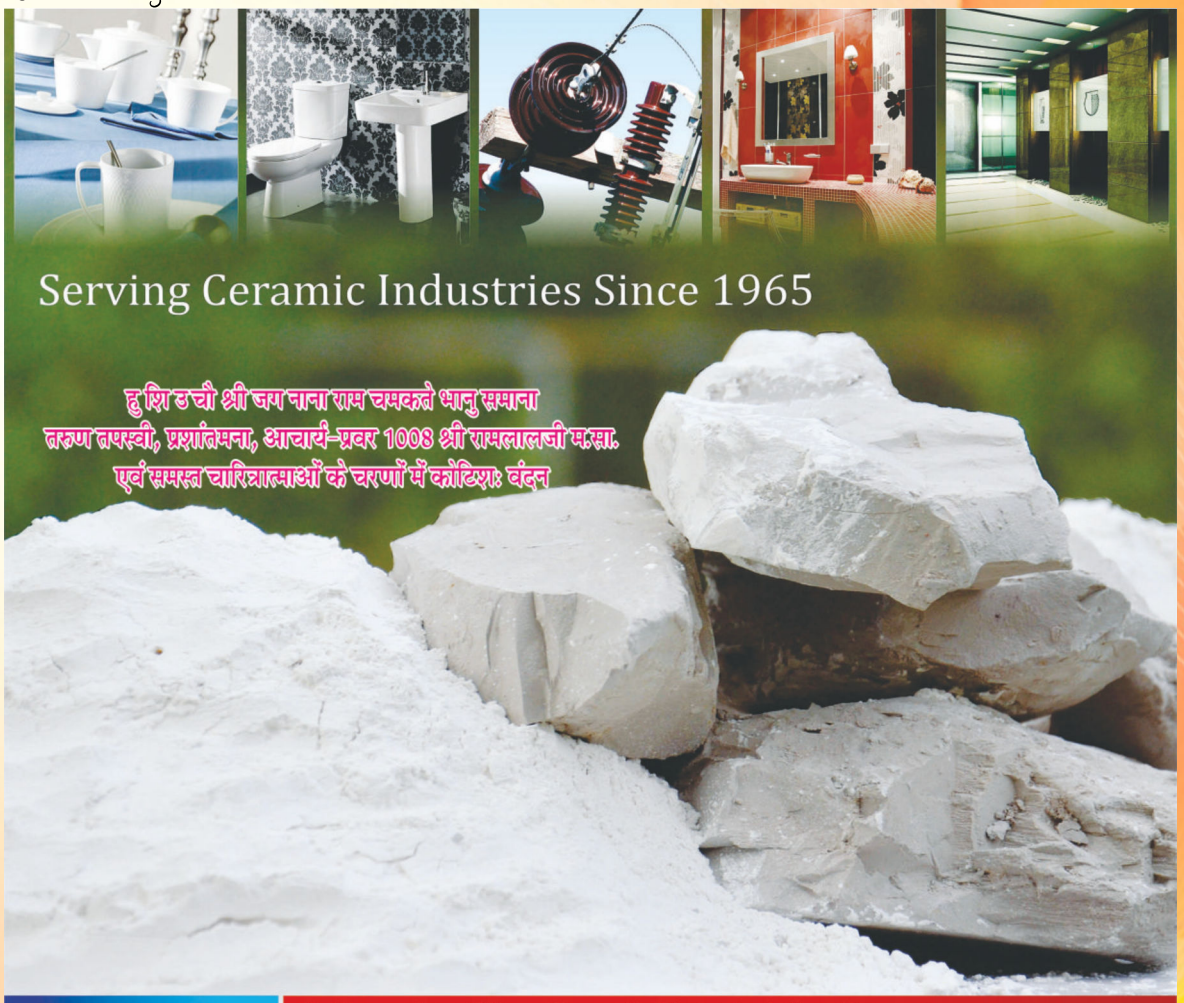

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

60वाँ संघ समर्पणा महोत्सव एवं वार्षिक अधिवेशन-2022

दिनांक : 26-27-28 सितम्बर 2022 **कार्यक्रम विवरण** **स्थान** : उदयपुर (राज.)

26 सितम्बर 2022 - सायं 8:00 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या, पूर्व अध्यक्षा व महामंत्री, महिला समिति आजीवन-साधारण सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन

(सत्र-1)
27 सितम्बर 2022
मंगलवार
दोपहर 12:15 बजे से

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
आमंत्रित : साधुमार्गी परिवार एवं सकल जैन समाज

(सत्र-2)
28 सितम्बर 2022
बुधवार
दोपहर 12:15 बजे से
वार्षिक आम सभा
दोपहर 2:30 बजे से

27 सितम्बर 2022 - सायं 8:00 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
संघ विकास - सर्वांगीण विकास
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं स्थानीय संघ अध्यक्ष व मंत्री।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
वार्षिक आम सभा
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या, पूर्व अध्यक्षा व महामंत्री, महिला समिति आजीवन-साधारण सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
वार्षिक आम सभा
आमंत्रित

श्री अ.भा.सा.जैन संघ समता युवा संघ के सभी स्तम्भ सदस्यगण एवं सभी साधारण सदस्यगण

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है ।

निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति **श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

Imported Italian Marble| Non-Cancerous Coating| 3kg Ball-Drop Test | Diverse Collection

www.sipanimarbles.com
+91 9900022355

Showroom: Plot no.254-B, Bommasandra Industrial Area, Hosur Main Road Anekal Taluk, Bengaluru, Karnataka 560099

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261